राजस्थान-भारती-प्रकाशन

पीरदान लालस-ग्रन्थावली

सम्पादक

अगरचन्द नाहटा



प्रकाशक

सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट

बीकानेर

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १६४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा संस्कृत, हिन्दी एवं विशेषत: राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी ।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानों एवं भाषाशास्त्रियों का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमें प्रारंभ से ही मिलता रहा है ।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियां चलाई जा रही हैं, जिनमें से निम्न प्रमुख है—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस संबंध में विभिन्न स्रोतों से संस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दों का संकलन कर चुकी है । इसका सम्पादन आधुनिक कोशों के ढंग पर, लंबे समय से प्रारंभ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके है । कोश में शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ, और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं दी गई हैं । यह एक अत्यंत विशाल योजना है, जिसकी सतोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है । आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य में इसका प्रकाशन प्रारंभ करना संभव हो सकेगा ।

२. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भंडार के साथ मुहावरों से भी समृद्ध है । अनुमानत: पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग में लाये जाते है । हमने लगभग दस हजार मुहावरों का, हिन्दी में अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणो सहित प्रयोग देकर संपादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबंध किया जा रहा है । यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है ।

यदि हम यह विशाल संग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह संस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिए भी एक गौरव की बात होगी।

३. आधुनिकराजस्थानीकाशन रचनओं काप्र

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है—

१. कळायण, ऋतु काव्य। ले० श्री नानूराम संस्कर्ता

२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास। ले० श्री श्रीलाल जोशी।

३ वरस गांठ, मौलिक कहानी संग्रह। ले० श्री मुरलीधर व्यास।

'राजस्थान-भारती' मे भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का एक अलग स्तम्भ है, जिसमे भी राजस्थानी कवितायें, कहानियां और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं।

४ 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन संस्था के लिये गौरव की वस्तु है। गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयो के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन सम्भव नही हो सका है। इसका भाग ५ अङ्क ३–४ 'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक' बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अङ्क एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य-सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है। पत्रिका का अगला ७वा भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। इसका अङ्क १–२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और वृहत् विशेषांक है। अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के सम्बन्ध मे इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन में भारत एवं विदेशो से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाएं हमें प्राप्त होती हैं। भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशो मे भी इसकी मांग है व इसके ग्राहक हैं। शोधकर्त्ताओ के लिये 'राजस्थान भारती' अनिवार्यत: संग्रहणीय शोध-पत्रिका है। इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखों के अतिरिक्त संस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्रीनरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचन्द नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान, सम्पादन एवं प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि को प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित रखने एवं सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप में मुद्रित करवा कर उचित मूल्य में वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। संस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रंथों का अनुसंधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यों की ओर से निरंतर होता रहा है जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६. पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई संस्करण प्रकाश में लाये गये है और उनमें से लघुतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अंश 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध संस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती में प्रकाशित हुए है।

७. राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखां) की ७५ रचनाओं की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अंक में प्रकाशित हुई है। उसका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबंध राजस्थान भारती में प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड़ क्षेत्र के ५०० लोकगीतों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र के सैकड़ों लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरियां और लगभग ७०० लोक कथाएें संग्रहीत की गई है। राजस्थानी कहावतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पावूजी के पवाड़े और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' में प्रकाशित किए गए हैं।

१० बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखों का विशाल संग्रह 'बीकानेर जैन लेख संग्रह' नामक वृहत् पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

२५ भड्डुली—	श्री अगरचन्द नाहटा म:विनय सागर
२६. जिनहर्ष ग्रंथावली	श्री अगरचन्द नाहटा
२७. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण	,, ,,
२८. दम्पति विनोद	,, ,,
२९. हीयाली-राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य	,, ,,
३०. समयसुन्दर रासत्रय	श्री भंवरलाल नाहटा
३१. दुरसा आढा ग्रंथावली	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह (संपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरदास ग्रंथावली (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (प्रो० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० श्री अगरचन्द नाहटा), नागदमण (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया), मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रथो का संपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नहीं हो रहा है ।

हम आशा करते है कि कार्य की महत्ता एवं गुरुता को लक्ष्य में रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमें अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त संपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा ।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षाविकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मंजूर की ।

राजस्थान के मुख्य मन्त्री माननीय मोहनलालजी सुखाड़िया, जो सौभाग्य से शिक्षा मन्त्री भी है और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने में पूरा-पूरा योगदान रहा है। अतः हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते है।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ हो सके। संस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी ।

इतने थोड़े समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य मे जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादकों व लेखकों के अत्यंत आभारी है।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर संग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन संग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियंटल इन्स्टीट्यूट बड़ोदा, भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ बृहद् ज्ञान-भंडार बीकानेर, मोतीचंद खजान्ची ग्रंथालय बीकानेर, खरतर आचार्य ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बंबई, आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बडोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशंकर देराश्री, पं० हरदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों से हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रन्थों का संपादन संभव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थो का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय मे ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छतः स्खलनंक्वपि भवत्येव प्रमादतः, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावों द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुनः मां भारती के चरण कमलों मे विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक

लालचन्द कोठारी

प्रधान-मंत्री

सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट

बीकानेर

बीकानेर,

मार्गशीर्ष शुक्ला १५

सं० २०१७

दिसम्बर ३,१९६०.

भूमिका

राजस्थानी साहित्य के निर्माण में सबसे अधिक और उल्लेखनीय योग जैन विद्वानों और चारणों का रहा है। जैन विद्वानों की रचनाएँ तो राजस्थानी साहित्य के विकास के समय से ही प्रचुर परिमाण में प्राप्त होने लगती है, पर चारण कवियों की १५ वीं शताब्दी से पहले की केवल फुटकर कविताएँ ही मिलती हैं, कोई स्वतन्त्र उल्लेखनीय ग्रन्थ नहीं मिलता। जैन प्रबन्ध ग्रन्थों में चारणों के कहे हुए कुछ फुटकर दोहादि उद्धृत है जिनको संग्रहीत करके मैंने 'परम्परा' (भा० १२) में प्रकाशित अपने लेख में दे दिया है। चारणों की सर्व प्रथम उल्लेखनीय स्वतन्त्र रचना 'अचलदास खीची री वचनिका' है जो सादूळ राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट से प्रकाशित होने जा रही है। इसे शिवदास चारण ने संवत् १४८५ के लगभग बनाई थी।

१६ वीं शताब्दी से अनेक चारण कवियों की रचनाएँ मिलने लगती हैं और १७ वीं में तो कई बहुत ही प्रसिद्ध चारण कवि हो गये हैं। भक्त चारण कवियों में 'ईसरदास' सबसे अधिक उल्लेखनीय है। इनका जन्म संवत् १५९५ में जोधपुर राज्य के भादरेस गाँव में हुआ था। ये रोहड़िया शाखा के चारण थे और इनका स्वर्गवास संवत् १६७५ के लगभग हुआ था। 'हरिरस', 'हालाँ भालाँ रा कुंडलिया', 'देवीयाण' इनके प्रसिद्ध और प्रकाशित ग्रन्थ है। वैसे इनके और भी कई ग्रन्थ और बहुत से डिंगल गीत प्राप्त है जिन्हें 'ईसरदास ग्रन्थावली' के रूप में प्रकाशित करने के लिए संग्रहीत करवा लिया गया है और इनकी सब रचनाएँ सादूळ रा० रि० इन्स्टीट्यूट से प्रकाशित करने की योजना है।

१८ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पीरदान लालस नामक एक भक्त चारण कवि हो गये हैं जिन्होंने अपने ग्रन्थों में ईसरदास को गुरु के

श्री सीतारामजी लालस ने अपने संग्रह का गुटका बड़े उदार भाव से मुझे उपयोग करने के लिए भेजा, इसलिए उनका मैं विशेष रूप से आभारी हूँ। इस ग्रन्थावली के शब्द कोष में शब्दों का अर्थ लिखकर उन्होंने मुझे और भी अधिक आभारी बना दिया है। प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादन, प्रूफ संशोधन तथा शब्द कोष के लिए शब्द-चयन करने और अर्थ लिखने में श्री बदरीप्रसादजी साकरिया का पूर्ण सहयोग मिला है इसलिए उनका मै बहुत बहुत आभारी हूँ। मेरे भ्रातृ पुत्र भंवरलाल का तो मेरे साहित्यिक कार्यो मे सहयोग मिलता ही रहा है।

श्री पीरदान लालस की जीवनी के सम्बन्ध में कुछ भी विवरण प्राप्त न हो सका और न उनका कोई चित्र ही मिलता है। अतः उनके हस्ताक्षरों का प्रत्यक्ष-दर्शन कराने के लिए एक पृष्ठ का ब्लाक बनवाकर प्रस्तुत ग्रन्थ में दिया जा रहा है।

श्री सीतारामजी लालस के गुटके में पीरदान के हाथ का लिखा हुआ "सांइया भूला" रचित एक डिंगल गीत है जिसकी लेखन प्रशस्ति इस प्रकार है—"लिखतु लालस पीरदान वांचे जिणनु रांम रांम, संवत् १७९२ भादवा बद १२।"

राजस्थान रिसर्च सोसाइटी, कलकत्ता वाले गुटके में जो पीरदान के लिखे हुए कई ग्रन्थ है उनकी लेखन प्रशस्ति इस प्रकार है—

१—गीत भूले सांइया रो एवं गीत मीसण हरिदास रो, के अन्त मे लिखा है—"लिखतंलालस पीरदान"

२—गुण हिंगलाज रासो के अन्त में "लिखतु लालस पीरदान, वांचे जिणनु रांम रांम", संवत् १७९२ काति वद १४ वार थावर छै।"

३—स्वयं रचित डिंगल गीत के अन्त में "लिखतु लालस पीरदान"

४—ईसरदास कृत 'भगवंत हंस' के अन्त में "लिखतु लालस पीरदान"

५—ईसरदास कृत "गुरड़ पुराण" के अन्त में "लिखतं लालस पीरदान संमत् १७९२ मती मगसरि सुदि ५ वार थावर।"

६—ईसरदास कृत "गुण आगिमि" के अन्त मे "लिखतं लालस पीरदान, वाचे जिणनु रांम रांम छै। संवत् १७९२ पोष वद ५"

७—ईसरदास कृत "देवीयाण" के अन्त में "लिखतं लालस पीरदान"

८—बारहठ आसोजी कृत "निरंजन प्राण" के अन्त में "लिखतं लालस पीरदान"

इनके अतिरिक्त इस गुटके में इनकी एवं ईसरदास की कई और रचनाएं भी यद्यपि इनके हाथ की लिखी हुई है पर उनके अन्त में लेखक का नाम नहीं दिया गया है। सांइया भूले का रुकमणि-हरण, माधवदास का राम-रासो, गज मोख नीसाणी, और छभा पर्व (स्वयं रचित) पीरदान के पुत्र हरिदास के हाथ का लिखा हुआ है। "गुण रास कीला" को हरिदास के वाचनार्थ जोधपुर में खरतर गच्छके भावहर्षीय जिनचन्द्रसूरि के शिष्य पं० शिवचन्द ने लिखा है।

प्रस्तुत ग्रन्थावली में (१) "नारायण नेह" (२) "परमेसर पुरांण" (३) "हिंगलाज रासो" (४) अलख आराध," (५) "अजंपा जाप" (६) "ज्ञान चरित", और (७) "पातिक पहार" इन सात ग्रन्थों, और ३० डिगल गीतों को प्रकाशित किया जा रहा है। ये सभी रचनाएं प्रायः भक्ति संबंधी है। राम, कृष्ण, हिंगलाज देवी, आदि की स्तुति इनमें प्रधान रूप से है ही पर "परमेसर पुराण" में अनेक भक्तों का भी उल्लेख है जिससे राजस्थान के उल्लेखनीय-भक्त-जनों की अच्छी जानकारी मिल जाती है। इनमें से कई तो प्रसिद्ध है पर कईयों के संबंध में अभी विशेष जानकारी प्राप्त करना अपेक्षित है। विद्वानों का ध्यान मैं इस ओर आकर्षित करता हूँ।

इन रचनाओं में दूहा, चौपई, गाहा, चौसर, मोतीदाम, कवित्त, भुजंगी, पद्धरी, झम्पाताली और डिंगल गीतों के अट्टताळो, साणोर आदि कई छन्दों का प्रयोग हुआ है। 'परमेसर पुराण' केवल दोहों में है। सबसे वड़ी रचना 'ज्ञान चरित' में 'कवित्त' छंद की प्रधानता है।

अभी पीरदान लालस जैसे और भी अनेक चारण कवियों की रचनाओं का संग्रह एवं प्रकाशन करना अपेक्षित है। उनमें से श्री दुरसाजी

आढा की प्राप्त रचनाओं का भी मैंने संग्रह करवाया है। इसका सम्पादन श्री बदरीप्रसाद साकरिया कर रहे है। आशा है वह संग्रह-ग्रन्थ भी शीघ्र ही प्रकाशित होगा। भक्त कवियों में पीरदान लालस अब तक अप्रसिद्ध से थे। आशा है इस ग्रन्थावली के प्रकाशन से इनकी ओर विद्वानों का ध्यान आकर्षित होगा।

भारत सरकार एवं राजस्थान सरकार ने इन्स्टीट्यूट को आर्थिक सहायता देकर ऐसे अनेक ग्रन्थों के प्रकाशन का सुयोग दिया इसके लिए दोनों सरकारों का भी मैं आभारी हूं।

—अगरचन्द नाहटा

प्रस्तावना

(श्री पीरदान लालस की गिरा-गरिमा)



आध्यात्मिक चेतना और धार्मिक विश्वास भारत भूमि की एक प्रमुख विशेषता रही है। विश्व के अन्य भागों में जब मानव श्वापद-जीवन व्यतीत कर रहा था तब भारतीय ऋषि की रहस्यमय और पावन वाणी गगन में गुंजरित होकर आकाश की ऊँचाइयों को नाप रही थी। ईश्वरीय विश्वास की यह परम्परा हमारे समाज के सत्ययुग से आरम्भ होकर कभी पीन और कभी क्षीण धारा के रूप में आधुनिक वैज्ञानिक युग तक निरन्तर दृष्टिगोचर होती है। श्री पीरदान लालस इसी प्रकाशलोक के एक आलोकित नक्षत्र हैं।

हिन्दी साहित्य के इतिहास के काल-क्रम की दृष्टि से श्री पीरदान रीतिकाल के कवि हैं पर विषय प्रतिपादन की दृष्टि से वे भक्तिकाल के कवियों में स्थान पाने योग्य हैं। उनका प्रधान विषय है—अध्यात्म। ऐसा अनुमान होता है कि इस ओर उन्मुख करने में उन्हें अपने भाव-गुरु* श्री ईसरदासजी की रचनाओं से प्रेरणा मिली है जिनकी भाव-भक्ति देखकर 'ईसरा सो परमेसरा' उक्ति प्रचलित होगयी। पीरदान ने अपनी रचनाओं में कई स्थानों पर ईसरदासजी को गुरु के रूप में स्मरण किया है :—

"इसाणंद गुरु चित मां आंणा, वेद व्यास नां पछै वखाणा।

—नारायण नेह पृ० १

---

* १ वरदा, वर्ष ५ अंक ३ में श्री वदरीप्रसाद साकरिया का 'महाकवि ईसरदास और उनका साहित्य' शीर्षक अभिभाषण

कवि ने अपनी रचनाओं में ईश्वर के सगुण और निर्गुण दोनों ही रूपों का वर्णन किया है। कभी तो वह कबीर के "दसरथ सुत तिहूं लोक बखाना, राम नाम का मरम है आना।" को दोहराता है— 'जगत कहै सहि दशरथ जायौ, अविगत धारी नाम अजायो।' और कभी वह प्रभु के साकार रूप का गुणगान करता है। डिंगल गीतों में वह विभिन्न अवतारों की महिमा बताता है। अवतार वाद का कारण वह भी गीता की भाँति अधर्म का नाश मानता है। जब जब धर्म की हानि और अधर्म का अभ्युत्थान होने लगता है तब तब साधुओं की रक्षा और दुष्टों का दमन करने हेतु भगवान् अवतार लेते हैं। पीरदान के शब्दों में :—

आवै तू आप लियौ अवतार, भड़ांभड़ भोमि उतारण भार।

यद्यपि कवि ने अपनी रचनाओं का नामकरण करते हुए ईश्वर के निराकार रूप की ओर भी संकेत किया है यथा "अलख आराध", "अजंपा जाय" आदि। पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसकी दृष्टि प्रधानतः सगुण पर ही रही है। सगुण का उसने विस्तार से जो वर्णन किया है उसका कारण भी है। उस काल मे सगुणोपासना की भावना बलवती थी अतः कवि की रचनाओं में भी प्रधानता उसी की रही। कवि के काव्य का सूक्ष्म अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि उसकी भक्ति दास्यभाव की है। उसने अपने लिए 'पीरदास', 'पीर', 'पीरीयै' आदि नामों का प्रयोग किया है। 'पीरदास' नाम तो बार-बार आया है—

"पीरदास करजै प्रथम, पुरुषोत्तम सूं प्रीत।"

पीरदान के काव्य की एक बहुत बड़ी विशेषता है कवि की उदार दृष्टि। उसने यथास्थान सभी देवताओं को नमस्कार किया है क्योंकि उसका विश्वास है "सर्वदेव नमस्कारः केशवं प्रति गच्छति"। कभी वह मंगलाचरण में सरस्वती-वन्दना करता है, कभी गणेश की स्तुति करता है। शाक्त परिवार में जन्म होने के कारण वह दुर्गा को भी

विस्मृत नहीं कर सकता। 'हिंगलाज रासो' में देवी के विभिन्न रूपों की वह ओजमयी भाषा में आरती उतारता है। 'ज्ञान-चरित' में भगवान के विभिन्न अवतारों का उल्लेख करते हुए वह जैनियों के 'अरिहंत' और 'रिषभ' को भी नमस्कार करता है। इतना ही नहीं उसने मुसलमानों के 'अला' को तो अपने काव्य में पचासों वार स्मरण किया है। वास्तव में कवि के लिए तो ये सब उसके प्रभु के ही अलग-अलग नाम हैं। इसीलिए वह यम-पाश से मुक्ति के लिए 'अला' की ही आशा रखता है—

अला तुम्हारौ आसरौ, अला तुम्हारी आस।
परमेसरजी पालिजै, पीर तणा जम पास॥

—परमेसर पुराण, दूहा संख्या २०

इसी प्रकार कवि ने 'परमेसर पुराण' में अनेक भक्तों का श्रद्धापूर्वक स्मरण किया है। यद्यपि ये सभी भक्त किसी एक ही सम्प्रदाय या विचारधारा के नहीं है पर अध्यात्म और धर्म के प्रति उन सब की श्रद्धा है। संभवतः इसी कारण पीरदान ने भी अपने भावों की सुमनांजलि उन्हें अर्पित की है। इन भक्तों में कई ऐसे भी हैं जिनके बारे में विद्वानों को ज्ञान नहीं है। कवि ने अपनी रचना में उनके नामों को सुरक्षित रखकर हमारे सांस्कृतिक और साहित्यिक जीवन की विभूतियों को लुप्त होने से बचाया है।

पीरदान के काव्य में यद्यपि ज्ञान और योग की चर्चा है पर उसका हृदय मूलतः एक भक्त का हृदय है। इसीलिए वह उसके सगुण और साकार रूप पर ही अधिक मुग्ध है। अन्य अवतारों की तुलना में उसने राम और कृष्ण का अधिक विस्तार से वर्णन किया है। शासकों द्वारा अपने युग के समाज पर अत्याचार होते देख तथा गौ-ब्राह्मण की दुर्दशा देख उसका भक्त हृदय अपने प्रभु से निवेदन करता है कि वह शीघ्र ही अवतार लेकर धरती का बोझ दूर करे। अपनी करुण

मानव एक ओर जीवन के पुराने मूल्यों से दूर होकर अपनी अध्यात्म भावना खो चुका है, दूसरी ओर जीवन के नये मूल्यों को पूर्णतया ग्रहण करने में वह अपने को असमर्थ पाता है। इसी का परिणाम है कि उसके जीवन में न सुख है और न शान्ति। आज जो चारों ओर ईर्ष्या-द्वेष, मार-काट, हिंसा और घृणा दिखायी पड़ रही है उसका कारण मनुष्य का मनुष्य के प्रति अविश्वास और वैर-भाव ही है। पीरदान का काव्य यद्यपि सवा दो सौ वर्ष पहले लिखा गया था पर वह आज भी हमें अपने आध्यात्मिक प्रकाश से मार्ग दिखा रहा है। वह ज्योतिस्तम्भ की भाँति हमें बताता है कि सामने चट्टान है, विनाश है, मृत्यु है। यदि हम वास्तविक सुख-शान्ति चाहते हैं तो हमे सारे ऊपरी और मिथ्या भेदभाव भुलाकर जीवन में सामंजस्य स्थापित करना होगा। कवि का यह सन्देश आज भी नया है और उस दिन भी नया ही रहेगा जब मानव दूसरे ग्रहों में पहुँच जायेगा।

चन्द्रदान चारण
एम० ए०, साहित्य-रत्न
प्रिंसिपल,
भारतीय विद्या-मन्दिर, बीकानेर



अनुक्रमणिका

कवि पीरदान लालस के हस्ताक्षर

ईसरदास रचित 'गरुड़-पुराण' का अन्तिम पृष्ठ (संवत् १७६२, मिती मिगसर सुदी ५)

पीरदान लालस ग्रन्थावली

॥ श्रीरांमजी सत छै जी ॥

॥ अथ गुण नांराइण नेह लिख्यते ॥

॥ गाहा चौसर ॥

ब्रह्माणी ब्रह्म माहि विगति, सही एक तूं तीन सकति।
किहकि करै केसव कीरति, सु प्रसन हुइ माता सरसति।
सरसति आखर समपीजै, देवी वयण अमोलक दीजै।
किहि मत्ति सारै कीरति कीजै, राधा वर इहड़ी विधि रीजै।

॥ चौपाई ॥

इसाणंद गुरु चित मां आंणा, वेद व्यास नां पछै वखांणा।
समरां प्रथिमि प्रथिमी सारद नां, निमिस्कार ब्रह्मा नारद नां।
लील विलास सुरां मां लाइकि निमो पुलंदर देव विनाइकि।
संकर नां पिणि करां सलामा, गोविंद रा आदेस गुलामां।
पीरदास पढ़ि रे पाराइणि, निमो निमो निरगुण नाराइण।
नाराइण नरहर बहुनांमी, सतगुरु सांमि सकळ री सांमी।
भगत वछळ भगवंत भुजाळी, देवां सिर हर दीनदयाळी।
माहव मुकुंद मुरारि महमहण, तेजवंत राजा दशरथ तण।
कान्हड़ किसन नाथणी काळी वड़ौ धणीं वीठुल वनमाळी।
वड़ौ धिणी नां रखै विसारै, आप तणौ जे प्रांण उधारै।
प्रेम भगति री आखर पीजै, करणाकर सों नेह करीजै।
करणाकर करणाकर कहतां, प्राण तिके बैकुण्ठ में पहुँतां।
मधुसूदन नूं जुदा म मेले, ठाकुर नां मत अळगौ ठेले।
पूज पूज परमेसर प्राणी, वेद कहै अे अमृत वांणी।
वेद किसन नूं घणौ वखाणै, जनजीवन री महिमा जाणै।

बैंकुंठ सूं सखरा लिखमीवर, पाव प्रवीत घणौ परमेसर।
पगां सरिस सनकादिक पूजै, घरणीधर सूं पातक धूजै।
घरणीधर नूं जिके ध्यावइ, सरग तणै विचि तिके समायइ।
उर ऊपर लिखमी पग आंणै, पारब्रह्म रा चरण पछांणै।
राकस रोळ नमो रावण रा, ब्रह्मा पग वांदे वांमण रा।
अहिल्या रै ऊपर पग आयौ, पगा तणौं रस गंगा पायौ।
नारद ही देखै पग नमियो, गेम घणां भगतां रौ गमियो।
प्रांणै मांणै पांव महेसर, पगां तणीं दे सेव प्रमेसर।
अविगत नाथ पूरिजै आसा, त्रिविधि तणां म दिखाळ तमासा।
लिखमीवर इहड़ा ब्रिद लीधा, के पहिळाद पुलिंदर कीधा।
कितराइ संत बैंकुण्ठ कहिया, राघव कहि कहि सरणै रहिया।
अइयौ मौज जकांनु आपै, साधां नै कविलास समापै।
अनंत भगत तूं सा उधरिया, तुझ तणै ऊपरि सांतरिया।
भूधर तू भाइयौ भगतां रौ, तूं दातार नही डिगतां रौ।
ब्रिज रै देस बजाड़ी वांसी, वड़े भ. त कजि वावि विधांसी।
साचा तू नै साध सुहावै, तूं इंबरीक उधारण आवै।
तूं ब्रह्मा रौ बाप बडाळौ, वडौ तमासौ वसदे बाळौ।
तूं कलिपंत करै कितराई, तूं जलनिधि रै अंक जमाई।
तूं करतार अकिरता कहीजै, लखण तुहारा किम करि लहिजै।
जगत कहै सहि दशरथ जायौ, अविगत धारी नाम अजायौ।
जगपति तूं सिगळां रौ जांमी, भगत वछळ सहजा नां भांमी।
भगति समापि समापि भलेरी, जाड़ अविद्या घात जलेरी।
भगति नहीं तोइ मन मॉ भीजौ, राघव पीर तणै सिर रीजौ।
माहव कठण तुहारौ मिलणौ, भूधर सां किम आवै भिळणौ।
त्रीकम हूँ अभ्यागत तोतौ, गिरधर लाल म घाते गोतौ।
झुरण दिऊ माँ झालौ झालो, केसवराइ हुवौ हूँ कालौ।
केसव कीरति कहड़ी कीजै, दान हुवै सौ दीजै दीजै।

॥ दूहा ॥

दान वभीषरण नूं दीयौ, प्रभु तुलछी रो पान।
तोनैं ओळखियौ त्रिगुण, औ थारौ उनमान ॥ १ ॥
भजि भजि तोनैं भेटियौ, अरथ वात रौ अेह।
प्रथळ करै रे प्राणिया, नारायण सूं नेह ॥ २ ॥
हेत घणैं सूं पूज हरि, नारायण न विसारि।
आठ पोहर अति आतमा, चत्रभुज नै चीतारि ॥ ३ ॥
आफे तरिसै आतमो, गाइयै हरि रा गीत।
पीरदास करजै प्रथम, पुरुषोत्तम सूं प्रीत ॥ ४ ॥
ध्यायौ तोनैं ध्यान धरि, आराह्यौ जग ईस।
त्यां पायौ वैकुण्ठ पुर, से जीता जगदीस ॥ ५ ॥
आप सरीखा ओळगू, तैं कीधा करतार।
तूं समरथ वसदेव तण, निमष न लागी वार ॥ ६ ॥
गोपी कहै मांहीजे गमौ, ग्वाळै कहै उ ग्वाळ।
भगते कहियौ औ भलौ, कंस कहै औ काळ ॥ ७ ॥
वैकुण्ठ रौ वासी ब्रह्म, जीवां रौ पति जीव।
त्रिगुण नाथ सरिखी तरह, दशरथ तणैं दईव ॥ ८ ॥
कह्नि कै नैहो कौ करां, राम कमळ री रारि।
करै पुकारां पीर कवि, ओ वाराह उधारि ॥ ९ ॥
फरसराम तूं फावियौ, सखरौ कियौ संग्राम।
हंस राम अवतार हरि, तूं वांमण बिसरांम ॥ १० ॥
कूरम मछ रिखब कपिल, खाधी अमृत खाड।
भगतवछळ तैं भांजिया, हरणाकुस रा हाड ॥ ११ ॥
नाराइण हैग्रीव नां, पढ़े अहो निस पीर।
धानंतर दत पिथ धणी, वडौ किसन रौ वीर ॥ १२ ॥
प्रतिमा मै पैठो प्रभु, अईयो बुध अलाह।
निकळंक कद देखां निजर, पतिसाहां पतिसाह ॥ १३ ॥

तूं अलेप अछेप अज, नाग कहै निरकार ।
नरे सुरे पायौ नहीं, पारब्रह्म रौ पार ॥ १४ ॥
तूं नान्हो मोटौ त्रिगुण, तूं अति वुरौ अनूप ।
तूं सरगुण निरगुण सही, अइयौ रूप अरूप ॥ १५ ॥
सगळाइं भगतां सिरै, परमेसर रै प्रम्म ।
निगम करै आदेस नित, अइयौ देव अगम्म ॥ १६ ॥

॥ छन्द मोती दाम ॥

अइयो परमेसर देव अगम, भलैं तैं कीधौ जाड भरम ।
कीया सहि थोक निमो करतार, परमेसर तुझ तणौ कोइंपार ।
अइयौ गरढ़ रा ग्यांन अनंत, हुआ अति दीह भले अरिहंत ।
भले भगवंत भले भगवांन, पुरातम पूरण नाथ प्रधांन ।
प्रमेसर तुझ वखाणां पेट, जायौ तैं वाळ भलौ सुर जेठ ।
नमो महाराज तुहारी निंद्र, उपाया भूत उपाया इन्द्र ।
कीयौ चितमन अने बुध च्यार, उपायौ एक वळै अहंकार ।
दीनां रा नाथ कियौ धंध दीध, कीया तत पाँच महा तत कीध ।
सबद्दति गंध कीयौ, सपरस, दसोदस देव इन्द्री दस दस ।
बंभेसर बाप तुहारा वंध, कहै कुण जीव्र तुरंगम कंध ।
जीवांरा नाथ अमोलक जीव, दरसण दीजै देव दईव ।
वड़ौ ठग धूत अहौ रुघवीर, सही तू ऐकलमल सधीर ।
अइयौ गुरड़ेस तणा असवार, महा मधु कीटक रामण मार ।
सदा रा दास व्रजां रा संत, अगासुर फाड़ वगासुर अन्त ।
ग्वाला विच ऊभौ ऊभौ गाज, सही संगठासुर वैठौ साझि ।
तृणावत त्रोड़ि बंछासुर बांहि, अहो अविगत तुहारी आहि ।
गिलै लख दैत गयासुर गोड़, छोड़ावण संत भलौ रिणछोड़ ।
जयौ जगनाथ तुहारौ जोर, किसौ नख ऊपर भार किसोर ।
बड़ा भड़ माधा राधा वंद, नमे पगि लागौ इंद नरिंद ।
वड़ौ कोई ख्याल हुवौ नंद वास, प्रमेसर आयौ साचां पास ।

लहै कुण लील निमो वर लाछ, छौगाळौ कांनड़ ढोळण छाछ ।
दमोदर हूँत सुरैं सहि दैत, नाराइण नंद तणौ नखतंत ।
भले महियार जसौदा भाग, निमो नंद नंदण नाथण नाग ।
किया तैं काम भले कलियांण, दीया तैं ध्रम लीया तैं दांण ।
अइयो अभियागत आतम अंस, कमाइण मांगण आयौ कंस ।
रमैं मथुरा बिच केसवराय, भले कुब्ज्या सां माधव भाय ।
भले यौ कासूं जादव भांण, अइयौ उग्रसेन तुहारी आंण ।
उधारण त्रिध अरिजण आस, पुरावण गोविंद टाळण प्रास ।
समापण वांभण नां रिध सिध, दमोदर दांन बड़ौ तैं दीध ।
दहावण नंद जसोदा दाहि, मिळै कुरखेत तिणी घर मांहि ।
करावैं राम जुगे जुग क्रीत, साधां रा पूत करैं सर जीत ।
साधां रौ वाल्हौ लागे साथ, प्रभु रै प्रीतम पांडव पाथ ।
पंचाळी तुझ सरीखो प्रांण, आँधैं रा आँधा पूत अजांण ।
आवैं तू आप लियौ अवतार, भड़ांभड़ भोमि उतारण भार ।
सोहै तू डाहुल दैत सिंघार, निमो नरकासुर खोसण नारि ।
छीयावर पौढण पाडळ छाँह, बाणासुर दैत विधांसण बांह ।
अईयो राजीव सरीखा अंख, उधारण मारण देत असंख ।
दामोदर तुझ निमो ब्रिज देस, प्रवाड़ां तुझ निमो परमेस ।
निरंजण नाथ जिसौ निरकार, इसौ बुध सांमि तिसौ अवतार ।
देखां कह हाथ विहूंणौ डील, खपावण खाफर रौ खोड़ील ।
इयैं इळ बीचि कलंकी आउ, दईतां हूँत परौ करि दाउ ।
प्रभु करि ऊँची नीची पांति, भुजाड़ौ भोमि पछाड़ौ भ्रांति ।
निवाजौ साध असाधां नास, आवौ चन्द्रमा री पूरण आस ।
आवौ असि सेत तणा असवार, निमो निकळंकी साह निजार ।
दमोदर देव किलंग दुकाल, करौ हक न्याउ किसन कृपाल ।
हरि हैग्रीव हरे हरि हंस, वखांणौं जादव जादव बंस ।
बड़ौ ध्रम ऐह भुजैतौ वाह, वखांणौं वांमण नैं वाराह ।

वखाणै जाणै एक विसंन, कहे मति[1] क्रूरम मच्छ किसंन।
कहै दत देव कपिल कल्यांण, तवै दसरथ तणौ तुड़ितांण।
पढ़े नरसिंघ दिसो करि प्रेम, जोए रे जीव हुये सुख जेम।
निमो नरसिंघ तुहारौ नाम, कियौ पहिळाद तणौ सिध काम।
कियौ तैं राघव रूप करूर, चत्रभुज दैंत हुवौ चकचूर।
दईव निमो पिथ रिखबदेव, समापि समापि तुहारी सेव।
देवां रा देव अनूप दरस, फरसीय झालणहार फरस।
निमो दसरथ तणां रुघनाथ, सिरजण हार धणी ससमाथ।
निमो रुघनन्दण रांम नरेस, सत्रघण सांच लखमण सेस।
भिळै तू एक इनेक भरथ, कोसल्या मात निमो हरि कथ।
निमो नित नित अजोध्या नेस, प्रभु ओ वार भली परमेस।
उवारण रिख तणौ जिग एक, इसा तैं कीधा काम अनेक।
माता मारीछ तणी तैं मारि, आयो इहिला नां आज उवार।
बळाक्रम तुझ निमो श्रव वाप, चत्रभुज आप चढ़ावै चाप।
विणे परमेस तणौ वीमाह, अजोध्या मांहि हवौ उछाह।
हुवौ वनवासी राम हठाळ, दळेवा दैंतां दीनदयाळ।
देसै प्रभ सुपनखा नां दुख, समापण इंद सरीखा सुख।
जोए खर दूखर रौ घर जाय, जाणै गति प्रामी आज जटाय।
जयो रिख राव सुधारण ज्याग, भले सवरी री भाग सुभाग।
इयै पिंड मांहि नहीं अपराध, सही सुगरीव वडौ कोइ साध।
नमौ हणमंत तणौ कहि नाम, वड़ो भड़ संत तणौ विसराम।
प्रभु दधि ऊपरि बांधण पाज, आयौ लंक ऊपरि राघव आज।
आयौ असुरां री भांजण आस, प्रमेसर छोड़ि ग्रहां रौ प्रास।
प्रभु रौ संत लीये लंक पाट, दियौ दहकंध तणौ सिर दाट।
विधांसइ रेसइ राकस वंस, कीयौ दहकंध कीयौ तैं कंस।
घड़ै सुरलोक तणौ सहि घाट, वडौ कोइ डील नमौ वैराट।
वड़ौ कोई ख्याल नमौ व्रजराज, गयौ सुणि साद नमो गजराज।

---

१ नित

अलेख सलाम सलाम अलेख, सतगुर सेज बलिभद्र सेख।
देवांपति सांमळ देव दुगम, अईयो अनरज सकज अगम।
अहो पदवन बुधा अवतार, वडा पतिसाह हुऔ असवार।
वडी तू नान्हौ एकोजि व्रह्म, पढ़ां जस कासूं कासूं प्रम।
रीझावां तुझ किसी विधि रांम, पूजीजै कीजै केम प्रणांम।
अणंकळ सवळ देव अभंग, जीपै कुण माधव तोसां जंग।
वरावरि तूझ करै कुण बाप, अविगत नाथ बडेरा आप।
वडी सहि थोकां हुंति विसंन, प्रमेसर मूझ समापौ पुन।
प्रमेसर पार अपार अपार, नारायण नेह निमो निरकार।
नाराइण नेह निरगुण नाथ, सरगुण सामि धिणी ससमाथ।
अइयौ अणभंग असगीय अज, कीळा नह लीला लज अलज।
अइयौ अवरन वरन अलाह, प्रभु पतिसाह सिरै पतिसाह।
बडेरा हुंति बडेरौ व्रम, पोढ़ेरा हुंति पोढ़ेरौ प्रम।
जूनौ तूं जूनौ देव्र जुरारि, महा गरढ़ेरौ ग्यांन मुरारि।
देवाँ नै दईतां रौ दीवांण, प्रभु तूं आप तूं ळछी प्रांण।
क्रमां रो क्रम ध्रमां रौ ध्रम, जीवां रौ जीव जमां रौ जम।
सबां रौ बाप सिधां रौ सिध, बड़ौ तू नान्हौ बाळक वृद्ध।
तंतां रौ तंत तना रौ तंन, वेदां रौ वेद वनां रौ वंन।
कामां रौ काम काळां रो काळ, बंभा रो बाप निमो बिरदाळ।
रुद्रां रो रुद्र हणमत राम, नाराइण तुझ तणौ नह नाम।
नारायण तूझ निमो निरकार, इसौ तूं आतम प्राण अधार।
नाराइण तूझ लिवारै नाम, गदाधर तौ बह वैकुंठ ग्राम।
नाराइण नारौ नरां मुर नाथ, हिमै अति वाल्हा थारा हाथ।
नाराइण आपौ ओण निवास, अम्हारै तूझ तणी छै आस।
नाराइण नाग नगं मुरनाथ, हिमै अति वाल्हा थारा हाथ।
नाराइण तूझ दरगहि नांखि, अम्हांनां वाल्ही थारी आंख।
नाराइण नांम नाराइण नेह, नाराइण दास नाराइण देह।
नाराइण निध नाराइण नूर, नाराइण हंस नाराइण हूर।

नाराइण साच नारायण सील, नारायण देव नाराइण डील ।
नाराइण जिग नारायण जाग, नाराइण अगतिम रूप अताग ।
नाराइण धूप नारायण ध्यान, नाराइण गाळि नाराइण ग्यांन ।
नाराइण वाघ नाराइण दाह, नारायण वांमण नै वाराह ।
परा करि आडा खोलि कपाट, नाराइण तू सै देव निराट ।
हरे हरि राम उपावण हार, तूं सै दसरथ तणा करतार ।
प्रमेसर टाळि परा जम-पास दमोदर पीर तुहारौ दास ।
रीझै किहड़ी विधि जादव राउ दमोदर मूझ बताड़ौ दाउ ।
प्रमेसर मुझ समापौ प्रेम, गावां गुण तूझ गमाड़ां गेम ।
भगति समापि हिमैं वड़ भूप, सांई हूँ देखां तुझ सरूप ।

॥ कवित्त ॥

सांई तुझ सुविहांण, वड़ौ दीवांण विगतौ ।
तूं सबलौ सुरतांण, कांम सहि तूंहीज करतौ ।
कै नह करतौ किसंन, किसन दीपा निनं कहियौ ।
कहियौ कासूं कहौ, रांम एक तूं हीज रहिऔ ।
भगवंत भिणे भगवंत भिणी, त्रीकम-त्रीकम प्राण तवि ।
नाराइण किहिक तूं साँ नरिद, करै पुकारा पीर कवि ।

इति श्रीनाराइणनेह संपूर्ण लिखतं ॥

संवत् १७९२ रा कार्तिक वदी १ दिने रविवारे विद्वान देवचन्द लिखतं श्री कोढ़णा मध्ये घर्षिता ॥ श्री ॥

(राजस्थान रिसर्च सोसाइटी, गुटका नं० २०)

परमेसरपुराण

॥ अथ दूहा, आराध रा ॥

प्रथम विनायक पूजियै, प्रघळ हुयै कोई पन।
रिधि सिधि समपै राजियौ, गुणपति देव गहन ॥ १ ॥
काइमि काइमि केसवा, राम तुम्हारौ राज।
हूँ थारौ बारट हुऔ, सधर धणी सुभराज ॥ २ ॥
ढील मती करिजो धणी, वेगा सांवळियाह।
बारट बाहुड़ियौ बहत, साहुलि सांभळियाह ॥ ३ ॥
औ घोड़ा औ आदमी, कहौ नी आया काह।
कोइ मोटौ पारंभ कियौ, आरंभ निमो अलाह ॥ ४ ॥
तूं तीकम रहमांण रब, तूं काइम करतार।
तूं करीम वसदेव तण, आप लियौ अवतार ॥ ५ ॥
घण दाता जीवै घणौ, वैकंठ तणा वरीस।
पीरदान बारट पुणै, आलम नां आसीस ॥ ६ ॥
कद सांभळसौ काइमा[1], पींपल गाइ पुकार।
हंस राजा कद हींससै, कद मिळिसै करतार ॥ ७ ॥
कळस थपावै कोड करि, निरखि चलावै नाउ।
समंद तरौ जै साधुआं, समरौ आलम साह ॥ ८ ॥
बीज तणै दिन बोलिया, वचन धरम[2] रा वाह।
साचव हरि जो साधुआं, आया आलम साह ॥ ९ ॥
उणि दिसड़ी सूं आविसै, वाह पछिम री वाट।
जे चाहै जगदीस नां, पूजि पछिम रौ पाट ॥ १० ॥

---

१ केसवा। २ अमोलिक।

घोड़िलैइ चढ़ै घणैरिड़ै, मांडौ जुध मीरांह।
खेत उजेणी मां खसौ, पछिम रा पीरांह॥ ११॥

धरणीधर मोटो धिणी, मोटां सा मोटोह।
तूं नांन्हा सां नान्हड़ौ, दे दईतां दोटोह॥ १२॥

कूड़ां ना कूटाड़िसै, हुइसै हेकंकार।
भोमि किलंगरी भेळिसै, आलम रा असवार॥ १३॥

नारद मां कीधी निपट, हरीचंद मांही हेल।
पीर कहै परमेसरा, खरौ तुम्हारौ खेल॥ १४॥

तिलोई न जांणै ताहरा, ब्रह्मा जिसा विमेख।
काइम तूं सबखौ करै, अबखौ मारग एक॥ १५॥

साईं तूं सिरदारड़ौ, सखरौ थारौ साथ।
तूं देवां रौ दीवलौ, नव नाथां रौ नाथ॥ १६॥
खबर करै नै खोजिये, दीसै एक दईव।
किम करि सिरिजै केसवा, जग पुड़ इतरा जीव॥ १७॥

परमेसर थारी पहुँच, निमो निमो निरवांण।
सिहि जीवा नां साहिबा, रिजिक दीयै रहमांण॥ १८॥
अला अला आवै अला, भला भला सिगि भूप।
परमेसर बांधौ पला, एकलमला अनूप॥ १९॥

अला तुम्हारौ आसरौ, अला तुहारी आस।
परमेसरजी पालिजै, पीर तणा जम पास॥२०॥
हिमै किहिकं सुप्रसन हुए, निकलंक साह निजार।
सांमी राजा सांभळै, पीरीयै तणीं पुकार॥ २१॥

हंसा राखि हजूर मां, सखरी वास सुवास।
सोरभ आवै सांमिरी, दाखै बारट दास॥ २२॥
हंसा राखि हजूर मां, हंसा राखि हजूर।
चौक घणेरा चक्रधर, प्रिथमी ऊपरि पूर॥ २३॥

घण तेजालू घोड़लौ, तुरी करै बह तांन।
हीरै जड़ित पिलाणियौ, दे बारट नां दांन ॥ २४ ॥
काइमि तूंसां पीर कवि, अरज करै छै आज।
किहिकि अमोलक केसवा, मौज दियौ महाराज ॥ २५ ॥
चौरी बैठे चक्रधर, वळि सुहिद्रा रौ वीर।
बावै नां सवळा विरिद, पुणै कवेसर पीर ॥ २६ ॥
वड़ हथ तैं दीन्हौ वचन, मनड़ौ वारि[1] महेस।
माता दाखै मेघड़ी, वलिणि करौ दरवेस[2] ॥ २७ ॥
किसौ भरोसौ काइमा, आवी बीज अनेक।
तूं के जाणै त्रीकमां, हूँ जाणां छां हेक ॥ २८ ॥
मंणै कुंआरी मेघड़ी, भलौ भलौ भरतार।
माहरौ दुख सुख माहवा, हीअड़ौ जाणण हार ॥ २९ ॥
कद करिसौ दुनीआन मां, खूंदालमजी खैर।
चुड़लौ कद पहिराड़सौ, बकै कुंआरी बैर ॥ ३० ॥
राणी सीता रुखमणी, गोपी चोखै ग्यांन।
निर्बिली नां दीजै निहीं, मेघड़ की नां मांन ॥३१॥
कीजै दीजै काइमा, वाँझणियां नां पूत।
पीपळियाँ रै फूलड़ा, हाथिणीयां रै दूध ॥३२॥
गाइयाँ रौ तु गोविंदा, माहरोइ दाळिद मारि।
औ चन्द्रमा ऊभौ चवै, इणिरौ कलँक उतारि ॥३३॥
प्राखिड़िया पूछाड़िसै, पिंडता निहिं पिछांण।
साहिब चढ़िसै सेतलै, हुइसै निगुरां हांणि ॥३४॥
नीलांणी धरती निपट, ऊगा रूंख अनेक।
काइम तैं भेळा किया, हिन्दू मुसिला हेक ॥३५॥
आवौ नी आलम उरा, अलख करै एकांति।
फेसि दीयौ कालींग फल, भांजि दीयौ नी भ्रांति ॥३६॥

१ ठारि। २ धरवेस।

काइम करी कटकड़ी, आंणी जोध अडूर।
वरतावीजै वीठला, निवळां मांही नूर ॥३७॥
कोड़े बारह काइमा, सात करोड़ै साध।
निपट भलेरा पाँच नव, यौ घटियौ[1] अपराध ॥३८॥
मुकुन्द वधायौ मोतीये, साहिव कसंन सरीख।
श्रौ आलमसा आईयौ, श्रौ लायौ लाखीक ॥३९॥
सतरि हजार हुसेनिया, पांडव सरिखा पाथ।
मूसा ईसा मुहमदा, सतगुरुजी रौ साथ ॥४०॥
साहिवजी थे साहजी, आलमजी आदेस।
काइमजी कल्यांणजी, पूरणजी परमेस ॥४१॥
सतगुरु साह निझारजी, राघवजी रहमांण।
त्रीकमजी चड़िजो तुरत, साहिवजी सुभिआंण ॥४२॥
जीवां री पति जीमिसै[2], करिजौ वेग कँसार।
मेघ तणौ घर माल्हिसै, निरखौ साह निजार ॥४३॥
नाराइण तूनां निमो, असि अईऔ असवार।
भ्रांति खलक री भांजिसै, अलख तणौ अवतार ॥४४॥
वावौ तरगस वाँधिसै, धुणिसै खड़ग त्रिधार।
खेत उजेणी खेलिसै, करिसै जै जैकार ॥४५॥
चौसठि जोगिणि चाखिसै[3], असरां मांस अपार।
आलमसाह उतारिसै, भोमि तणौ सहि भार ॥४६॥
वडा वडा संख वाजिया[4], घणां कटक घमसांण।
कालिंगौ नै केसवौ, जूटा जोध जुआंण ॥४७॥
आलम सहि उधेड़िसै, पाप तुहारी पेढ़।
आज मंडाणी आकरी, विसन किलंग रै वेढ़ ॥४८॥
खालिकि ऊभौ खेत मां, सवळा दईत संघार।
सतगुरु कीधौ साथरौ, मोटा दांणव मार ॥४९॥

१ मिटियौ। २ आविसै। ३ चेतिसै। ४ वाजिसै।

तातै अति लोही तणां, वहिसै वाहिळिया ।
तिमि काळींगा त्रोड़िया, जिमि दळिया[1] डाहुळिया ॥५०॥
देव कहै सिगळा दियौ, ईसाणंद आसीस ।
किलंग न जीतौ कापिरिस, जुध जीतौ जगदीस ॥५१॥
जख कींदर पीतर जंणै, इमिया आंखि अलाह ।
ब्रह्मा संकर वखाणियौ, पछिम तणौ पतिसाह ॥५२॥
गावतरी जमणा गंगा, सावतरी नै सीत ।
पारवती पदमावती, गाय अलख रा गीत ॥५३॥
कान फाड़ नै कापड़ी, सहि साधां रौ साथ ।
पिडत वखाणै पीरनां, नाग वखांणै नाथ ॥५४॥
चारण सहि कीरति चवै, अमर करै आदेस ।
ग्यांन करीमौ हुइ गियौ, विसिनि कियौ कोइ वेस ॥५५॥
संमरा मंडप सभावियौ, न्याउ करण निरधार ।
जाजम जांबूदीप माँ, वावै रौ दरवार ॥५६॥
बारट ईसर बोलिया, निकळंक साहिब नांम ।
किलंग दईत नां कूटतां, कीधौ सखरौ कांम ॥५७॥
हरि मिळिया बह हेत सां, सतगुरु नामै सीस ।
उरा पधारौ एथीयै, आवै बारट ईस ॥५८॥
ब्रह्मा सिव मिळिया वळै, जोइ हसिया जगदीस ।
मुकंदि वधाया मोतियां, आया बारट ईस ॥५९॥
वालिमीकि कीधो वळै, व्यास कियौ जस वास ।
भव भव रौ म्हारौ भगत, देखौ ईसरदास ॥६०॥
सूरिजि चन्द्रमा सारिखा, बैठा छै विरदाळ ।
खेतपाळ हणमंत खरा, कोटवाळ किरणाळ ॥६१॥
सहस अठ्यासी रिखेसर, अणवर ब्रह्मा ईस ।
मिळिया मेळै सांमिरै, सुर कोड़ै त्रेतीस ॥ ६२ ॥

१ जीता ।

अनंत पीर फकीर अति, अनंत भगत अणपार ।
बळिराजा पांडव बहत, हरीचंद सतार हजार ॥ ६३ ॥
सेस गुणेस पताळ सहि, सात सरग रै साथ ।
नारद नै नव नाथ नां, नूर उछाळौ नाथ ॥ ६४ ॥

प्रभ मेघां रै परणिया, रिमां तिणै सिरि रीस ।
बारट ईसर बोलिया, जमौ करौ जगदीस ॥ ६५ ॥
बहनांमी तद बोलिया, हणमंत किया हुकम ।
उरै तेड़ावै एथीयै, घेनां सत्त धरम ॥ ६६ ॥

हरिचन्द्र नां दीन्हा हुक्म, साचा तेड़ौ साध ।
मांडौ चीण-मचीण माँ, अलख तणौ आराध ॥ ६७ ॥
आवै कोड़ि अपछरा, पीडित साधख पंख ।
पारवती सरिखै प्रघळ, आवै सतै असंख ॥ ६८ ॥

असंख बाव रिषि झांप रिषि, धोम रिषाँ धनधन ।
मेघ रिषां रै मांडहै, विणियो वींद विसन ॥ ६९ ॥
साधां ऊपरि साहिवा, रींजौ राघवड़ा ।
रैंवत चढ़ नै रामड़ा, आवै आलमड़ा ॥ ७० ॥

कांने कूंडळ काइमा, विणियौ ऊजळ वेस ।
मिळियौ साचा मुनिवरां, निकळंक नाथ नरेस ॥ ७१ ॥
साध गरीब सुधारिसै, रिमां तणै रिमि राह ।
पिड़तां पाट पधारिसै, पछिम तणौ पतिसाह ॥ ७२ ॥

हिंदुआंणी नै तुरकणी, बिन्हइ तुहारै बैर ।
ऊभ वळै आवै अधिकि, वडौ इआंरै बैर ॥ ७३ ॥
हिंदुआंणी हालै हुक्म, ताहरै तुरकांणी ।
किसी सोहागिणी केसवा, रूघनंदन रांणी ॥ ७४ ॥

खेध करै बेवइ खसां, रांडा आधै रांण ।
घट घट माँ बैठो घणों, दोसै नी दइवांण ॥ ७५ ॥

ग्यांन ठगारौ गोड़ियौ, संकर करिसै सेव ।
बीठुल मांहि विराजियौ, दरसण दोरौ देव ॥ ७६ ॥
प्रघळा दईत पछाड़िया, भिड़ि जीता भाराथ ।
ताहरौ दरसण त्रीकमां, साध करै ससमाथ ॥ ७७ ॥
पूरै सूरै पाइयौ, भुयण तिहु चौ भूप ।
साधेई साराहियौ, आलम साह अनूप ॥ ७८ ॥
घण सोहागण मेघड़ी, भलौ तुहारौ भाग ।
बारट ईसर बोलिया, सथिरि रहै सोहाग ॥ ७९ ॥
काइमि रौ बारट कहै, ठकरांणी अे ठीक ।
साहिब राघव सारिखा, तूं सीता सारीख ॥ ८० ॥
आघी बैठौ ईसरौ, जोत हुई जजमांन ।
मात विराजी मेघड़ी, गादी बैठो ग्यांन ॥ ८१ ॥
राउत रिणसी रांमदे, वडिमि घिणेरी वाह ।
सगळाई साधां सिरै, नेतळदे रौ नाह ॥८२॥
रांमइऔ अजमाल रौ, आलमजी रौ यार ।
सांभिळिसै कलिमां सही, पीरिया तणी पुकार ॥८३॥
साध विजैसी सारखा, सेलारसी सरीख ।
पदवन रै लागा पगे, ऐ जोइ नइणे ईख ॥८४॥
मलीनाथ राउळ मुदै, रूपादे रांणी ।
जमलै आयौ जेसलौ, तोरल कठियांणी ॥ ८४ ॥
सोढ़ौ लालौ नै समस, साहसधर रसधीर ।
मोटौ दांणव मारियौ, भगवति कीधी भीर ॥ ८६ ॥
किसनै खीची रै किन्हीं, लालै नै हरिदास ।
कर जोड़ै त्रैवइ करै, आलम नां अरदास ॥ ८७ ॥
पदमां देवाइचि प्रघल, ब्रह्म वखांणै वाह ।
पूंजळदे रै प्रेम सां, आयौ जमै अलाह ॥ ८८ ॥

बांभण डेलू बोलिया, काइम राजा केथि ।
धिणी तुहारो धारुश्रा, श्रो जोइ वैठे श्रेथि ॥ ८९ ॥

भाटी ऊगमसी भलौ, साधां रौ सिणगार ।
बाहड़ आसा बारहट, जमलै मांहि जुहार ॥ ९० ॥

रांणौ कूंभौ राइमल, मेहौ हरिभम पीर ।
सिगळां नां सुभराज छै, पाबू गोगा पीर ॥ ९१ ॥
कमध अनोपै करण रौ, आईदांन अवदाल ।
काइमि सां वातां करै, अमरसिंघ अजमाल ॥ ९२ ॥

अैकल जंघा आइया, विमळ वहिथिया वाज ।
जळ-मांणसिया जोइया, सूप कनां सुभराज ॥ ९३ ॥

कवि किम करि लेखो करै, पांडव प्रघळा पाथ ।
पार न जांणै पीरियौ, साध घणां ससमाथ ॥ ९४ ॥

मलिकि मुलांणां मोकळा, खासौ रूप खुदाइ ।
दीसै दरगहि देवरै, गोदड़ कविली गाइ ॥ ९५ ॥
काइम रौ दरसण करै, पीपै सरखा पीर ।
गोसांई रै गोठ मां, के नांमदे कबीर ॥ ९६ ॥

मधकर मीसंण मानियौ, परमेसर रै पासि ।
मेला सखरा मांडिया, सूरतिगिर सावासि ॥ ९७ ॥
औप साह ऊहड़ अभग, कमधज करिणाळा ।
हाथ जोड़ हरजी हँसै, साहिब बिरसाळा ॥ ९८ ॥

पापी घांणी पीलिहजै, दीन तणै दरबार ।
कूड़ा कांबड़ कूटिजै, औपा करिओ नियारि ॥ ९९ ॥

हरिचंद राठी पीर हु, धन राठी धनराज ।
नाहरखान नरेस नां, सुकवि करै सुभराज ॥ १०० ॥
देखौ वीकौ देवलौ, पांचै रिखियौ पात्र ।
भाई बलूडा भागचंद, वीठुल सां करि वात ॥ १०१ ॥

तुलछी गिरि तारण तरण, दळ मिळिया अवदाळ ।
सूरिजमल सिरिदारसी, दुरजणसिंघ दुभाळ ॥१०१॥
भइयौ सीतळ भारथी, साचौ साध संसार ।
सुंदर जेठी सारिखै, मिळिसैं जमै मंझार ॥१०२॥
पूरौ साध पिचांणियो, नाका(रा) रो नेम ।
वारट नां प्यारा बहत, हाथीड़ौ नै हेम ॥१०३॥
हरिजन सहि भेळा हुआ, हुई किलंग रै हार ।
वाल्हो तुमां वीठला, गोविंदि लाखौ गुआर ॥१०४॥
मुंहतौ रतन महेसरी, तिलो कुअर तुडितांण ।
केसरि नांखे तू करै, आलमजी री आंण ॥१०५॥
नागां नवखंड रा नरां, गोविंद चकर गदा ।
गोडवाड़ गिरनार रा, साधां सुवा सुदा ॥१०६॥
फतियौ फिरिसै फौज मां, भुंडा रै उरि भाहि ।
डोहा करिसै दोनियौ, मुंसै रै घर मांहि ॥१०७॥
बारट झरोखै बैसिसै, काइम हंदै कोटि ।
रेखीं बैठी राज मां, राणो करिसै रोट ॥१०८॥
गिरगुण दाखै नारिणा, फौज किलंग री फौत ।
तैं सखिरैं चारै सही, गांईआं नां गुहिलौत ॥१०९॥
त्रिमळ मजीरा वाजिया, के तांती झणकार ।
भजन कियौ मिळि भाइयाँ, औं तूठौ अवतार ॥११०॥
घणौ नूर अनरै घरे, अति निपजसै अंन ।
साधां नां तूठौ सही, काइम राउ किसन ॥१११॥
तूं तूं हीज हिंदू तुरक, भेळौ हू भगवांन ।
एकिणि थाळि आरोगिजै, पेड़ां नै पकवांन ॥११२॥
के फेरा जीती किलंग, हुओ कपिल दत्त हंस ।
रांमण कितरा रेसिया, किनरा जीता कंस ॥११३॥
केई प्रवाड़ा तैं किया, आखां कितरा एक ।
बळि छळियौ फेरा बहत, हरण सरीखा हेक ॥११४॥

मथियौ के फेरा महंण, भगते भरिया भूंक।
तैं दीन्हीं वसदेव तंण, फेरा कितरा फूंक ॥११५॥
बावा तूं बाळा बिरिदि, अइग्रौ पुरिखि अलाह।
सहसाबाहु सारिखा, गिळिया कितरा ग्राह ॥११६॥
रिखबदेव हैग्रीव हरि, नाराइण नरसिंघ।
पारि उतारै पीर नां, तूं परमेस त्रिसिघि ॥११७॥
बळिभद्र बुध तूं नां विरिद, सबळा चड़िसैं सेस।
परी उधारैं प्रांणीयौ, पीर कहै परमेस ॥११८॥

इति श्री परमेसर पुराण संपूरण लिखियी छै।
संवत् १७६१ जेठ सुदी ७।

अथ गुण हींगळाज रासौ

सुर भुयणां उपरि महमाया, माता जगत तणी महामाया।
मुनीं भगति दियौ महमाया, आई नाथ तें धरम उपाया।
तु ं सां ब्रह्म विसनही तरिया, तें उर ऊपरि माणस धरिया।
तैं पावइ ं वड़ा व्रिदि पाया, तें जगदीस जिसा नर जाया।
इ ं मिया खिमिया मांस अहारिणि, चारिणि निमी सैंणला चारिणि।
खळ धारा सिगळाई खूटा, तु ं सां वाद कियो से त्रुटा।
करनळ मात निमो किनियाणी, तू ं जोराबर दइतां जाणीं।
मोटे असुर तणां मद मोडै, तु ं मैंषासुर झालि मरोड़ै।
सुरां तणी दिळि ठरी सवाइ ं, मैंषासुर लीधो मुख मांही।
मैंषासुर सरिखा महमाया, असुर खपाया तैंही ज उपाया।
तैं पतरे मैंषासुर पीधा, केसव ब्रह्म निंचिंता कीधा।
दईतां रै ऊपरि थारौ दंड, चंड मु ंड कद चींना चामंड।
संभ निसंभ सरिखा छळिया, त्रिभुयणनाथ तणा भौ टळिया।
दैंत वारिवा दळियो देवी, कंमण करै जुध तु ंसां केवी।
असंख पवाड़ा तुझ तणा अति, तु ं जमघंटी सकति सदोमति।
रगत बंवाळि निमो रुद्रराया, मु ं सां कृपा करे महमाया।
तु ं मद पीयै तु ं मदमती, तु ं छत्र छती तु ंहीज अछती।
खराया किहड़ी परि रीजै, कतीआणी आदेश करीजै।
देवौ देवी रिधि सिधि दीजो, किहि कि अम्हां सिरि मया करीजो।
देवी तणो भुजंन दाखीजे, भलो भवानी मात भिणीजै।
भिळे भवानी भिळे भवानी, जगजीवन ब्रह्मा सां मुनी।
बीस भुजाली वडां वडेरी, तु ं मोढेरी परां परेरी।
तु ं गरढेरी निसिदिन गाजै, असरै ऊपरि आग्राजै।
तु ं जड़धार तणौ वळ जाणौ, तु ं महराज तणौ घर माणौ।
तु ं कु ंडळणी मात कहाणी, धिरणीयां री तु ंही ज धणियांणी।

कवित्ति

पारबती परमेस सरब पारबती सती ।
कहि हो कहि त्रिसकति जोग तु गोरख जती ।।
सीता श्री सारिखी श्रीया सारंगधर सरिखी ।
सावतरी सुभराज प्रघळ ब्रह्मा जी परखी ।।
तुं पच्छिमि पाट पतिसाह तुं भेस सरब भगवंत भू ।
पीरीये कहै परमेसरी हींगलाज सुप्रसन्न हू ।।

। इति श्रीहींगळाजरासौ संपूर्णम् लिखतुं लालस पीरदान वाचै जिण नुं राम-राम सं० १७९२ काती बदि १४ बार थावर छै ।।

सुभराज करै तनां सुर सामिणी ताहरै नाम साम्हेई तरां ।
जयो निमो तुंनां जग जामिणी कतियाणी आदेश करां ।।१।।
काळिका तुंहिज कुंवारी काया मनछा पारबती महमाई ।
सावतरी सीता सुर सामणि साधूडां रो हुवे सिहाई ।।२।।
सकति हुए भगतां रै साथे घाणीयां मां असुरानां घाति ।
धरम तणौ तुं हिज धणीयाणी पाप पछाड़ि परी परभाति ।।३।।
आवै हे आराधे आई भाई हे दाखे भहरी ।
पीरीयै तणौ उतारै पातिग साचां रे वसिजो सहरि ।।४।।

पीरदानु कहै

।। श्री सारदाइ निमा । श्री गुरुभ्यो नमा ।।

अथ गुण अलख आराध लिख्यते

॥ दूहा ॥

वधवांणी तूं ऐक ब्रंम, ओऊंकार अपार।
किमि करि कीधौ काळिका, विसव तणौं विस्तार ॥ १ ॥
विसव कियौ तैं बीस हथ, कियौ विमेख विचार।
इम्यां ब्रिदि लीधौ इसौ, कीधौ ले करतार ॥ २ ॥
निमो निमो लिखमी निमो, मात तुहारी मति।
निरगुण नां तैं निर्मिधयौ, सरगुण कीयौ सकति ॥ ३ ॥
संकर नां सुरजेठ नां, आस तुहारी आस।
सावतरी थारौ सघर, वडो सुन्न घर वास ॥ ४ ॥
जग जिणणी तूं नां जयो, कुंडळिणि त्रिसकति।
हरता करता तूं हुई, माया नांम मुगति ॥ ५ ॥
ध्यान करै थारौ धरम, अलख अपंपर आप।
महादेव सरिखा मरद, जपै तुहारौ जाप ॥ ६ ॥
तूं सिवि काया सरसती, विसन सरीखौ वेस।
ब्रह्मा इणिपरि वदै, आदि सकति आदेस ॥ ७ ॥
मध कीटग तैं मारिया, तूं सबळी सुर राइ।
मारकंड नां मांनियो, पिंडति लगायौ पाइ ॥ ८ ॥
सदा सदा हुँती सदा, आदि बिना तूं आप।
सांमि नहीं को सकति रै, बाप तणौं तूं बाप ॥ ९ ॥
वडां वडेरीं तूं वडी, खिमिया तूं खिड़ि खिंडि।
अधकि देव तूं सांउरा, परा परा तूं पिंड ॥ १० ॥
विदिया समपौ बीस हथि, सरसति दियौ समति।
दिऔ उकति आखर दिओ, सु प्रसन्न हुऔ सकति ॥ ११ ॥
घट हुँता अकरम घटै, अधिक घटै अपराध।
क्रुपा करौ तौ हूँ करौं, अलख तणौ आराध ॥ १२ ॥

निमो पगां रौ ध्यांन राखै पवनुं,
नमो अलख री करै आराध अनुं ।
निमौ अलख री जिकौ आराध आंणै,
निमो नारगी तणै कुंडे न जांणै ।
निमौ कटक पतिसाह पतिसाह काचौ,
निमो अलख जांणै जिकौ रांक आछौ ।
निमो अलख री अलख सोभा उचारै,
निमो आप हीज अलख आपणि उधारै ।
निमो अलख री करै समरण अनेक,
नमौ अलख औ जीव मिळ हुवै एक ।
हुकम निमो बाप थारौ हुलाहौ,
आराधै तिनाँ एक जंघा अलाहौ ।
वडा देव नरसिंघ तौवह विसनं,
कहै सुपकनां किसनं किसनं ।
सपत दीप रिख सात सातइ समंदु,
नवइ नीय ही हाथ जोडै नरिंदु ।
गणै तारहा नांम सुर कोड़ि गनै,
अला माहरौ एक आराध मंनैं ।
अट्यासी सहस रिखी तूं नां आराहै,
धणी ताहरौ नाम सह कोई ध्यायै ।
धणी थाहरै नाम नां जिके धांखै,
नरां ताहनां झालि स्रगलोक नांखै ।
वडे धणीं रौ विमळ कोमळ वदनुं,
धिणी रौ करै ध्यांन तां दाख धनुं ।
वडे साधुअे तूझ गायो वचंने,
अलाह माहरौ अेक आराध मंने ।
अभु तूझ प्रताप संकर पिछांणै,
जिकौ ताहरौ सुख सुरजेठ जांणै ।

पुरख डोकरा विरिध गरढ़ा पुरांणु,
वडै सांमि रा वेद वाचै वखांणु ।
वडा सांमि तैं विसव किमि करि वणायौ,
सरग सात पाताळ मुख मां समायौ ।
वडी ताहरौ मुख उरळौ विसाळूं,
किसन तूझ नां निमो तुझ काळ काळूं ।
अधिक तूझ आदेस कांन्हड़ अकिरिता,
किसन ताहरौ कोप आदेस करता ।
अलख नान्हीऔ निपट मोटौ अपारू,
अलख रूप अणरूप भगतां उधारू ।
अलख काज अकाज जायौ अजायौ,
प्रभु ताहरौ पार किण ही न पायौ ।
प्रभु ताहरै पिंड नह कोय प्रांणी,
जोगी ताहरी वात किणही न जांणी ।
जोगी तुझ नां जयौ जूना जुवारी,
महादेव माहेस अणकल मुरारी ।
महावीर वीराधि अेकल - मलं,
अधिक आप उदार दाता अदलं ।
प्रथीनाथ ससमाथ तूं पातसाह,
अग्राहं अबाहं अलाहं अथाहं ।
निगुण नांम नह नांम निसवाद नाथूं,
हुअै मुगति दैतां सरिस तूझ हाथूं ।
निमो वरन अवरन प्रधांन पुरुषं,
सांमी कोई सूझै नहीं तुझ सरखं ।
सांमी अब तूं अब तूं अब सासं,
अखिल भूत तूं अेक तूं अविणासं ।
गरुड़ ऊपरा चढ़ै वैकुण्ठ ग्रांमी,
निमस्कार तोनं निमो सहस - नांमी ।

राजा राम नां ओथि राधा रमावैं ।

अला पौरसे हुओ दईतां पछाड़ैं,

अनड़ गोरधन हाथि एकिणि उपाड़ैं ।

अला मथुरा मां जाइ नै कंस मारै,

अला आपरा भगत ओथीं उधारैं ।

अला उग्रसेनां सरिसि राज आयै,

अला कुरिदि बाभण तणी तुरत कापै ।।

अला रुखमणी राज रै पटरांणी,

असुर मार नै आंहचै भली आंणी ।

अला अनरज तूं हीज भरतार ओखा,

अला सहज पदवंन रा तूं ही सरीखा ।

अला जुध री बात अखियात जांणै,

माली तारि नै कूबड़ी नारि मांणै ।

अला जुध नै दैत गिणिया न जायै,

अला खंड डंडूळ नां तूंहीभ खायै ।

अला बुध अवतार तूं बाप बाबा,

निमो धरम नां कीध निरबळ नियाबा ।

जुध धिणी जगत केणि भांति जीतो,

विळै खाफर जिसो दइत वीतो ।

अला साहु लै सिधि वाळै सुणीजै,

अला कलंकी तणी अवतार कीजै ।

अला अेक हूं राज नां अरज आखां,

दुजां ऊपरां भाउ करि देव दाखां ।

अला धरम नां निवाजौ विलै धेनां,

अला संघारौ दुसटिआं किलंग सेना ।

अला प्रथमी प्रवीति कीजै प्रमेसं,

अला नाम नां निमो निकलंक नरेसं ।

अला साथ हुसेनियां तणौ सांमी,

अला भलाई पधारै भुजां भांमी ॥
अला अथरवण वेद मां साच आंणौ,
अला पीरियै तणै अरजां पिछांणी ।
अला विडंगां तिणै फौजां वणावौ,
अला आदमां दळ मुसां अणावौ ॥
अला चंचळां ऊपरां मीर चाढ़ौ,
अला दाणवां दिसै वागां उपाड़ौ ॥
अला मांहि महमद साथै मुलांणा,
अला पास दरवेस दीसै पीरांणा।
अला साथ सेखां तणौ मिलक साथै,
अला मोकळा कटक करि कलिंग माथै ॥
अला हाथियां तणै फौजां हलावौ,
अला प्रघळ ब्रह्म कीच नां रगत पावौ ।
अला पींपळैं फूल अति वेल फूलै,
अला चढ़ै हस्तण तणौ दूध चूलै ।
अला वांझणी पुत्र मांगै विचारै,
अला तूझनी निमो वातां तुहारै ।
अला पतिगह चंदमां तणी पालौ,
अला झाझ नामी इसा बिरद झालौ ।
अला वास सोवन मां करौ वैगी,
अला भलांई पधारै आंति भांगी ॥
अला ग्यांन सौरी करै हि मैं गाई,
अला सांढ़ियां दूध करि प्रवीति सांई ।
अला वसुधा मांहि अंवा वणावै,
अला कालरां मांहि हीरा करावैं ।
अला जोध जुजिठिळि हरीचंद जांनी,
अला माहरै जीवि अे वात मांनी ।
अला बारहु कोड़ि वळि तणां वेली,

अला राज काइ प्रिथिमादि रेली।
अला कन्या वाट जोवै कुंआरी,
अला परणीजै हिमै करिजै पिआरी।
अला बाप मेघां घरे मोड़ वांधी,
अला परी कालींग सां वेढ़ आंधी।
अला लाछिवर पहिलड़ौ साच लीधौ,
अला किसौ मेघां सिरै कोप कीधौ।
अला अहै चंद्रावळी वीज आवी,
अला ठाकुरां मेघड़ी पिरिण ठावी।
अला थाविरे थाविरे कळस थापै,
अला आपरै साधुआं सरग आपै।
अला सेत घौडै चढ़ौ धरम साहौ,
अला चक्रधर सूरिज्या मिळण चाहौ।
अला जादवां तुहारी अकल जांणी,
अला घणा आसुरां तणी करौ घांणी।
अला पहुवी गै ऊपरां चौक पूरौ,
अला चीणमण चीण रा महल चूरौ।
अला महा सैतान तोफान मोडै,
अला त्रिधारै खड़ग सां दईत तोड़ै।
अला खेत उजीण मां झूझ खेलौ,
अला चवै ईसर तणौ पीर चेलौ।
अला वधाई आज कुंता वधायौ,
अला गावित्री गौरिज्या गीत गायौ।
अला सावित्री सूरज्या सती सीता,
अला ग्यांन आदेश उणिहारि गीत॥
पणै पीरियो दास प्रभ पतिसाहो,
अला हो, अला हो, अला हो, अला हो।

॥ कवित्त ॥

अला तूझ उवारण जयो जगदीश जुरारी।
नरहर गुरु हरनाथ निमो निकळंक निजारी.
कन्हैया कान्हुआ निमो निकलंक नरेसर।
ग्वाळ निमो ग्वाळिया, साच साथै सारंगधर।
राजि नां किसीपरि रीझवां, राज वड़ा राधारमण,
पीरियौ तूझ दाखै प्रभु, मूझ निवाजै महमहंण ॥
पांचां सा पहिळादा, पाट हरिचंद पधारौ,
नवां कोड़ियां नूर, सात कोड़िआं सुधारौ ।
बारां सां बळि राउ जोति सां मिळिया जाए,
चढ़िया छं चंचळै, अलख गुर ईसर आये,
आरती इसी अरिहंत री मोटा पातिग मारती,
आरती अलख-आराधनां ईसरजी नां आरती ।

॥ इतिश्री अलख-आराध संपूर्ण ॥

॥६०॥ श्री गणेशायनमः श्री गुरुभ्यो नमः

अथ गुण अजंपा जाप

॥ दूहा ॥

हूं मांगां देवी हुयौ, अयिरल वांणि उकत्ति।
वळै विनाइक वीनवूं, सिद्ध बुद्ध द्यौ सुमत्ति ॥ १ ॥

वाह विनाइक देवता, नमो विनाइक नाथ।
तूं सिद्धदायक रूप सुभ, तूं सतुगुर ससिमाथ ॥ २ ॥

सूंडाळौ लाइक सुरां, रांम सरीखौ रूप।
ब्रह्म सतगुर हूँता वडौ, ईसरदास अनूप ॥ ३ ॥

ईसाणंदि आराधियौ, आठइ पहर अलेख।
दीठो दरसण देव रौ, ओळखीयौ प्रभु एक ॥ ४ ॥

एक नमो तूं ईसवर, सम्रपि तुहारी सेव।
ब्रिज बाळा चरिताळ ब्रह्म, दीन दयाळा देव ॥ ५ ॥

भगत तुहारा सहि भला, भिले अरिजण भीम।
भगति दीयै जो भूधरा, तौ तोनूं तसलीम ॥ ६ ॥

तनां कहां छां त्रीकमां, दुरबळ नां करि दास।
कांनै करिहो केसवा, परमेसर जम-पास ॥ ७ ॥

तूं जगनाइक जगत गुर, तूं अविगत जग ईस।
जगति घड़ै भांजै जगत, जयौ जयौ जगदीस ॥ ८ ॥

महादेव तूं महारुद्र, तूं भगवत भगवांन।
भगतवछळ तूं भूधरा, तूं गोरख ब्रम ग्यांन ॥ ९ ॥

सास सासि समरौ सदा, सरब सास औ आप।
साच संवाहौ साधुवां, जपौ अजंपा जाप ॥ १० ॥

॥ छंद पधरी ॥

अजंपा जाप ओंकार एक, ओलखै कमण[1] विणयौ अनेक ।
अजंपा जाप आतम उद्यास, सुर भुवण माहि सब भूत सास ।
अजंपा जाप मूरति महेस, पिंड पिंड मांहि थारो प्रवेस ।
अजंपा जाप अणकल अतीत, अकाज रांक अइओ अजीत ।
अजंपा अगम नावै अरथ, कोई नहीं काम कोई नहीं कथ ।
अनेक रसण सां न हुवै आप, जयो जयो अजंपा कठण जाप ।
नमो नमो अजंपा नमस्कार, ओउं ओउं मंत्र अणपार पार ।
आदेस अजंपा हो अलेख, तू भव सबंध ससार भेख ।
मन मांहि अजंपा तणी मंड, आज ही अगै राखी अखंड ।
अजंपा जाप सूं[2] मोह आंणि, विश्व री मोह न्यारी वखांण ।
अजंपा जाप री अविल आस, जाड भ्रम अविद्या टळै जास ।
अजंपा जाप दातार आज, सरूप मुगति दै सिरताज ।
अजंपा जाप रै नही आदि, सब जीव करण पड़ीयौ सवाद ।
अजंपा जाप परमेस आप, बंभ रै हुओ करतार बाप ।
अजंपा जाप भगतां उधार, संसार घड़ण पालण संघार ।
अजंपा जाप सीता सरूप, भगवंत नमो भगवंत भूप ।
अजंपा जाप उणहार अेह, दातार नमो अणरूप देह ।
जीव हो अजंपा जाप जांण, असटंग जोग सूं हेत आंण ।
सोइ जांणि जाप कहिजै सपूत, कांइ पड़ै कूप मांही कपूत ।
सामि सां कांई छोड़ै सनेह, नारगी हूंति कांइ करै नेह ।
अलखनां विसारै उपराध, समंद्र मां डूबै कांई बड़ा साध ।
अहंकार छोड़ गति मांहि आव, परसि हो परसि परमेस पाव ।
देखि हो देखि घर मां दईव, जिम हुवै तूझ कल्याण जीव ।
परखि हो परखि प्रीतम पाथ, निरखि हो निरखि घट मांहि नाथ ।
रामचन्द नमो हो नमो रूप, पिंड पिंड मांहि जोति सरूप ।

---

१ कवण वणीयौ । २ सां ।

कान्हुआ नमो अरि नमो कंस, हैग्रीव नमो वाराह हंस।
अवतार नमो हरि गज उधार, परमेस नमो पातिक पहार।
परधान नमो पर जोति प्रम्म, वे काम नमो स्रग लोक ब्रह्म।
मछ कोम नमो महाराज मति, उसास सास किम लियौ अति।
नाभि सुत नमो रिषभ नरेस, वरीयाम वाघ नरसिंघ वेस।
वाह हो वाह बांमण वडाळ, दुज राम नमो दीनांदयाळ।
कूटिया दैंत उधरै कीर, धनुषधर नमो लखमण सधीर।
जादवा नमो ताहरा जुध, बहसांमि नमो अवतार बुध।
किण ठाड़ै रहै आवास काह, आदेस तुनै गरुड़ा अलाह।
आदेस देव अहि नरां ईस, जगदीस जयो स्रगलोक सीस।
चत्रभुज बाप आउध च्यार, साधुआ तणा पातिग संघार।
अई अई गुरड रा असवार, भामणां लियां लिखमी भ्रतार।
सेभ्र नां नमो नागेंद्र सेष, उआरणा लियां थारा अलेख।
पंगरण प्रीत वसदेव पूत, संमिल काहि मैं जणास्यै सपूत।
कमळरा नैण कमळा-कंत, सुर जेठ आप सारीख संत।
निरकार नमो निरजण निनांम, ग्यांनरी देह वैंकुंठ ग्रांम।
जगदीस तणौ डर करै जंम, गम लहै कवण थारी अगम।
लहै कुण बाप ताहरी लील, नमो हो नमो अनील नील।
आपरा चलण महिमा अथाह, पगां रै कीन्हीं गंगा प्रवाह।
विंदया[1] भद्रा गोपियां विंद[2], आरती करै ऊपरा इंद।
आराधै देव चारण अलख, जुहारै तनौं किनरह जख।
अठयासी सहस रिख करै आस, वखांणै सको वैकुंठवास।
पांच तत महा तत रहै पास, संभारै तनां प्रभु सास सास।
गुण तीन दास पतिसाह गाइ, वेचिया प्रभु थारा विकाइ।
राजीया केई दीवांण रांक, सुर कोडि तीस मुर करै सांक।
प्रणमंति नाग अनेक पीर, साहिबी नमो सांमळ सरीर।
डर करै दैत तूसां दईव, जोनीयां दियै इनेक जीव।

---

१ वंदिया, २ वांद।

परमेस त्रिख जूनां पुरांण, वेद ही बाप वाचै वखांण।
पावक अनै पांणी पवन, वड वडा थोक चाकर विसन।
मन बुद्धि चित्त अहंकार मति, समरंति तनां त्रेवड़ सकति।
रहमांण तुहारौ अटल राज, वीठला हिमैं सिणगार वाज।
आंणि हो आंणि जांनी अडूर, निरबळां माँहि बिरताव[1] नूर।
परणि हो पिरिणि परमेस पात्र, जीव सहि करै सैंदहे जात्र।
आवि हौ आवि चंद्रमा आस, पूरि हो पूरि टाळिहौ प्रास।
थापि हो थापि पुनं कळस थापि, आपि हो आपि कल्यांण आपि।
राखि हो राखि मूँ सरण राखि, दाखि हो काहिक चाकरी दाख।
जोइहौ जोइ साम्हौ जोइ, दातार अेक कुण कहै दोइ।
साच नै सीळ तूनां सलांम, गोविंदा करै थारा गुलांम।
वीनवै अेम लीला विलास, देवाधिदेव पीरियौ दास।
पीरियौ अेम दाखै परम, वडेरा निमो ताहरौ ब्रह्म।

॥ कवित्त ॥

ब्रह्म नमो छूब ब्रह्म ब्रह्म कहिजै ब्रह्मचारी।
ब्रह्म नान्हौ वैराट क्रम अक्रम कूड़ा री।
भवसागर सां भ्रम भ्रम मायां मां भूली।
माया छै मोहणी डाक चड़ियौ चित डूली।
महाराज हिमैं कीजै मया, भांजि अविद्या जाड भ्रँम।
पतीगह पाळि मोटा प्रभु, पीरदास दाखै परम ॥ १ ॥

॥१॥ इतिश्री अजंपा जाप संपूर्ण लिखतु जती लालचंद गाँव जूढ़िया मधे।
संवत् १७६१ रा जेठ सुदी ८ कथितं लालस पीरदानजी।

॥२॥ इतिश्री अजंपा जाप सम्पूर्णम्। कोविद देवचंद लिखतं।
कोढणा मध्ये शीघ्रं व्यंपिता ॥

---

१ वरताड़ि।

अथ गुण ज्ञान चरित्र लिख्यते

॥ कवित्त ॥

देवी दे वरदान ग्यांन रीजै गुण गावां।
भाखां सहि भागिवंत विहद हथ अरथ वणावा।
तूं मोटी महमाइ धरम धरि ऊपरि धरणी।
बघ वाणी दै वैण, कृपा करि हे कुंडळणी।
करि सरस जोड़ रूपक कहा, त्रिविध जेम दुत्तर तरां।
ऊधरां आप इनि ऊधरै, अनंत तणी जस उचरां ॥१॥

अनंत अनंत सहि अनंत, अनंत पौरिस पराक्रम।
अनंत एक अनेक, अनंत बहु भाँति वळाक्रम।
अछतौ छतौ अनंत नाम बिण अनंत निरगुन।
गुण समपौ गौरिजा गौरि तुं बिना नुहै गुण।
अहि अमर रुखेसर नर असुर पहचि तुझ दाखै प्रघल।
हु महिरिव.ण माया हिमै वइण मुझ दीजै विमल ॥२॥

विमल कवेसर विले साधु सुखदेव सरीखा।
बालमीक जैदेव नाम नरहर कवि नीका।
विले दास वाणार सुकवि गोदड़ गुर मेरा।
ग्यान चरित गाइऔ एक एकां अधिकेरा।
ताह मांहि ले अधिका उतिमि ग्यान रूप गाहैडि गडा।
बारहट अनै रिषि वराबरि वेद व्यास ईसर वड़ा ॥३॥

ईसर इमि आखीयौ मुकंद मोटौ अति मोटौ।
अनंत पार अपार त्रिविध त्रोटो नह त्रोटो।
तोवह वार हजार करै सहि नाम अकिरिता।
अलख तूझ आदेस कोड़ि आदेस करता।

जाइश्री सरब संसार जै विसन कहीजै सीलवंत ।
जम तणौ अंत कंत ज्यानखी अनंत नमो फेरा अनंत ।
अनंत तणौ नहिं अंत नाम लालच पिणि नाहीं ।
रूप रेख निहीं रंग कही हब का हिज काई ।
सास आस निहिवास वाणि नह खाण न वेदु ।
अनंत नाम अकाज आंति नह जाति न भेदु ।
केई थोक निही नंन पार कोइ सरब बात साची सिही ।
किमि करि प्रणाम कीजै सुकवि नरहर रै इतरौ निही ॥५॥

निहो केम घणनाम हेक हैग्रीव विले हंस ।
विले सेत वाराह आप विणि रूप तणौ अंस ।
मछ कोम नरसींघ वाह वामण कहि वामण ।
रिष वदत पिथराव भरथ रुघनाथ सत्रघण ।
पढ़ि फरसराम लखमण कपिलि रिदैं मुझ बलि राम रहि ।
नारीयण विषंभ अवतार निजि क्रिसन बुधि निकलंक कहि ॥६॥

कहिजै कासुं सुकवि धौड़ गुण नावै धातां ।
आप अगम जग ईस वेद नह जाणै वातां ।
तत पाँच गुण तीन कोम डिगपाल कमाली ।
सोम राह छिनि सूर क्रेत त्रिसपति कोलाली ।
सीत नै गौरि सावतरी तिलोइ न जांणै तुझनां ।
सकति री नही इतरी सकति मुरिखि कहिसी मुझनां ॥ ७ ॥

मुझ तणी मतिमन्द चन्द अधिकौ चतुराई ।
अकल घणी ईंद में किसन गम न लहै काई ।
उण दिनि जायौ अनन्त हरी तिणि दीह न हुंतौ ।
इम कोई न कहै अवर कहै नह मरतौ करतौ ।
हुंतौ जि आप केई जुग हुआ केई वार कलपंत हुआ ।
त्रेभुयण भांजि हुयै एक तन हरी तुझ तोबह होआ ॥ ८ ॥

हीयै जीव जीव मा देव देव मा वसै हरि ।
वसै खारिण वारिण मां पार प्रांमिजे किसी परि ।
सकति मांहि सिव मांहि रहै वंभ मांहि घरणेरौ ।
जंबक मांहि जु मांहि अनन्त तिलि हेक ओछेरौ ।
परमेस आप पाणी पवन कलंक मांहि निकलक किरि ।
संसार मांहि बाहरि सदा थाहरीयौ थल मांहि थिरि ॥ ६ ॥

॥ दूहा ॥

थल मां जल मां थूंब मां, जंगम सां जगदीस ।
थावर मां अनमां अधिक, आप सरव कौ ईस ॥१०॥

सरव सरब तुं सांइआँ, रांम किसन मां रांम ।
नाग नरा मां निरजरा, नाम मांहि नह नाम ॥११॥

बुरा मांहि वेकारमा, छोति छोति मां छोति ।
धरम मांहि अघरम मां, जीव जीव मां जोति ॥१२॥

॥ कवित्तिः ॥

जोति निमो जगदीस जीव जीव मां जडाणौ ।
किसन अनन्त कोडिरौ कांइ अवतार कहाणौ ।
दुख कांइ देखैं देव सुख कांइ इतरौ सहियौ ।
करि हो कर करतार कुणौ तुनां इम कहियौ ।
घणौ तोइ एक एकोइ घणौ गोविंद तुं चुहुअै गमा ।
देखै सवाद सुख दुखरौ तुं निसवादी ओकमा ॥१३॥

निसवादी नरसिंघ नमो तुनां निसवादी ।
कहि हुँ कासु कहाँ सरब आणाद सवाही ।
विसन वेद अणवेद भेद अभेद भुणीजै ।
अलखरूप अणरूप जाच अजाच जपीजै ।
अनाथ नाथ अवरण वरण केई थोक नकरण करण ।
गुणरूप ग्यान निरगुण नरिंदि समरि जीव असरण सरण ॥१४॥

समरि जीव अण जीव करम केई करम अकरमी ।
सुख दुख जग सामि धरम केई धरम अधरमी ।
निराकार साकार अनन्त ननह तुं अवरन ।
सामि सरीखौ सुकवि तुं हीज आप जिसौ तन ।
तुं आप आप इनेक तवि प्रथिमि एक संसार पति ।
कूड़ नै साच करतार रा साधां सुणिजो एह सति ॥१५॥

सत सील सन्तोष विले अति साच दयावंत ।
खिमावंत अखिलिनां सबल मन मां थारा संत ।
विले इग्यारस वरत भगति ऊपरि प्रभ भीजै ।
पिप्पल तुलछी पान राम यां ऊपरि रीजै ।
गाइ नै डाभी गोपीचन्दण निति थारा नन्द नन्दना ।
ब्राह्मण निपट वाला विले ए गरीब गोविंदना ॥१६॥

गोविंदि रै कोइ ग्रांम कनां कोइ नाम कहिजै ।
सामि कुणौ रौ सामि राम कै ऊपरि रीजै ।
आप आप सहि आप निको काइ नारि निको नर ।
पेट पूठि नही पाऊ काह काया बांहां कर ।
नइणि नै स्रमण वेवइ निही कठै तात माता कठै ।
निगुण ना किणही जायौ नहीं उठै आप आतिमि अठै ॥१७॥

उठै आप स्रब आप विसन वैंकुंठि विराजै ।
तीन भुयण मां त्रिगुण निगुण नागौ नह लाजै ।
स्रब भूत स्रब सास नाम ग्रामहं स्रव नीरह ।
स्रव आप स्रब बाप स्रब्र आचार सरीरह ।
स्रब वेद भेद आतिम सदा किसन न हुतौ कहौ कब ।
स्रब बीज खीज वलि रीज स्रब अवलौ सवलौ आप स्रब ॥१८॥

सव लहै कुण सुकवि स्रब स्रव हुंता न्यारौ ।
ब्रमचारी गोविंदि परम लिखमी नां प्यारौ ।

निकलंक नाथ जिणि नाम निजि सूरितिपाख सुहांमणा।
भालीअल सदा देखै भगत भाग तणां ल्यां भामणा ॥२६॥

भाग तणां भामणा ल्यां भूधर दुख भंजण।
विहलां ना वीठला मुगिति सारूप समपण।
साधां नां साजोति रांक सालोक लियै रस।
सामी मुगिति समीपि मुझ समपौ जोडां जस।
कोड़ि हेक जिगन दस कोड़ि तप सरब धरम तोरथ सिंही।
कलि मांहि हेक पीरदान कवि नाम सरीखौ कै नहीं ॥३०॥

नाम लियंतां नाम सामि सूझै सहि सूझै।
राम तणै रस मांहि सेस बूझै सिवि बूझै।
परम तणौ रस पीयै, सदा सिनिकादिक सारा।
ब्रहम तणौ रस ब्रहम ल्यै के ब्रहम विचारा।
नाम नै चरण छोडै नहीं गंग गौरि गावंतरी।
अहिल्या अनैं तारा तवै सीत मात सावंतरी ॥३१॥

सावतरी सामि रा करै वाखांण किताई।
रुखमांगद इंबिरीक साध नारद सवाई।
पारासुर पैहलाद सेस गंगेव महेसुर।
अरिजण नै अकरूर व्यास रिषि वारट ईसर।
बभीखण लियै ऊधव बकै अति उवारणा अनंतरा।
जगदीस किया आपह जिसा भगत एह भगवंतरा ॥३२॥

॥ दोहा ॥

भगत हुयै भगवंत निज, भगवत करै भगति।
निमो निमो हूँ न लहां, ग्यान तुहारा गति ॥३३॥
ग्यान चरित ग्यानह समँद, ग्यान तत त्रीअ नाम।
ग्यान प्रबोध सबोज गुण, रीज करै वह राम ॥३४॥
ऊए प्राणी नां उयै अनंत, वैकंठि लियै वधाई।
ग्यान चरित गुण गाइरे, ग्यान समंद गुण गाई ॥३५॥

॥ कवित्त ॥

ग्यान समंद गुण गाइ च्यार मुगितै हू चेडै ।
ग्यान तत गुण गाइ सात सरगां फल झेडै ।
ग्यान चरित गुण गाइ पाइ लागै परमेसर ।
ग्यान बोध सुणाइ मोख पामै नर अमर ।
पीरदान ग्यान पतिसाहना करि प्रणाम लहडा सुकवि ।
ब्रह्मज्ञान ग्यांन दरिसण वड़ी मालहीयै हरि नाम मवि ॥३६॥

मवे नाम हरि नाम अध एक मध उचारे ।
उतिमि एक अति उतिमि सदा चत्रभुजन संभारे ।
अध सुणे सहि कोइ अध मन माहि मिणीजै ।
उत्तिमि भुजन छै उतिमि रिदै विचि राखि रहीजै ।
अति उतिम भुज न अई औ अई, रोम रोम ऊपरि रहै ।
जीवतौ मुगिति देखै जिकौ, साधु सुख अजपा सहै ॥३७॥

अई औ अजपा जाप अई घण सामि तणा घर ।
अई ओ सुख सरग अई निकळंक बड़ा नर ।
अत्री रुखेसर अइ, हरिखि करी मन मां हसै ।
अई ओ इंदि भगत वसुह ऊपरा वरिसै ।
नंद तणा बाल अईयौ निगुण, धन धन अइयौ चक्रधर ।
महा भगति अई महादेवरा, अईयो दता ईसवर ॥३८॥

अईयो ईस अनंत नाम कल्याण निरंजण ।
देव किसन दीपान ग्यान दईतां ग्रब गंजण ।
अलख नील इनील विसव विमोह बिज्ञानु ।
जाणै सहि जीतूआ माल मेरो धन धानु ।
संसार एह असगौ सगौ दईवि आप वासौ दियौ ।
कलिमांहि दुख सिनेह क्यां कूड़ कूड़ साचौ कियौ ॥३९॥

कीयौ कूड़ सां साच इसौ संसार उपायौ ।
जायौ सरब जगत अलख रहीयौ अणजायौ ।

अलख नाम कुण लहै अनंत कहिजै केतो एक।
जुओ जुओ नह जीव आप वैराट इतो एक।
महाराज ग्यांन एकोजंमन मरै न तिल जितरो मिटै।
एतोज आप औ एतलौ, घणौ हुये नह कैं घटै॥ ४०॥

घटै केम घण सामि आप एतो एतोईज।
किसनि सिरो काढ़ियौ तवै तेतो तेतोईज।
नरां नाह नीपनौ पार पाड़ियौ पुरुषोत्तम।
अगै आदि औ आज अमर अमरा मां ओपम।
काळरो काळ जग प'ळ कहि नंद नंद अणमोल नग।
जग(प्र)भूत जग बंधू जगत जगत मार आधार जग॥ ४१॥

आप जगत आधार त्रिगुण राजा जग तारै।
जगत सुख जग दुख जगत करतार जुहारै।
जगवासी जग वीर, गे मनि पाप जगत गुर।
जग रूप रांम मारण जगत, जग जीवन जग ईसवर।
जगत रै मोह जगदीस नां जगतनाथ जग मांहि नर॥ ४२॥

नरां नाह जगदाह अलख अणथाह अपंपर।
वाह वाह लीला विलास, विमल आणंद लिखमीवर।
जगत ठाम जग सामि, जगत रोपण जग रंजण।
जग वंदण जग जेठ, जगत भेदण जग भंजण।
जगदीस जयो तूं मूळ जग, जगत धिणी तूं जोरवर।
जग मांहि मरै जीवै जगत, निमो देव अरिहंत नर॥ ४३॥

निमो देव अरिहंत, पुरुष परधान पुरातम।
परमारथ परतंत, परम अणपार पराक्रम।
तूं परमिति परतंत, तूं हीज पर देव पणीजै।
पर उपगारी परम, ग्यांन पर रूप गिणीजै।
सुर जेठ अने संकर सिको, अहि अमर मानव उरा।
परमेस निमो थारी पहचि, परा परा सिगळां परा॥ ४४॥

॥ दूहा ॥

परा परा सिगळां परा, तुं गरढौ गोपाळ ।
नंद महर रै बाळ तूं चौद लौक रख पाळ ॥ ४५ ॥
ज्ञान सचेर सज्ञान है, बड़ौ ग्यरन पतिसाहु ।
ज्ञान चरित मां कहि गुणी, ग्यान जड़ाउ जड़ाउ ॥ ४६ ॥
ग्यान गभीर गभीर सौ, उरळौ कोड़ि अनेक ।
पावक सांँ ऊन्हो प्रघळ कोड़ि थोक प्रभ एक ॥ ४७ ॥

कवित्ति

कोड़ि थोक करतार हेम हुंँता ठाढ़ौ हरि ।
कोड़ि जम है किसन किसन वाखाण इसौ करि ।
कोड़ि थोक करतार सब तीरथ पग भारी ।
अनाथ नाथ अनाथ नां करतौ नर सौ नि कीयौ ।
आपमां जोर सरसौ अनंत कोड़ि कोड़ि अधिकौ कियौ ॥ ४८ ॥

कोड़ि थोक करतार पवन हूँता बळ प्रघळ ।
कोड़ि वधंतौ कोड़ि गंगजळ हुँति निरमळ ।
अधिकौ कोड़ि अनंत धरणि हुँता खिम्या धर ।
ऊँचौ कोड़ि असख बहत नीचौ कहि अंबर ।
सरसती हुँति विद्या सिरै विमळ अकळ कहिजै विसन ।
सूर सां तेज विणियो सरस कोड़ि कोड़ि वधतो किसन ॥ ४९ ॥

किसन नाम कळपंत करै कळिपंत किताई ।
च्यारि खांणि चकचूरि करै मन हूँत कमाई ।
सहि बाजी सांमटै अमर नर नाग उघेडै ।
हुयै आप हेकलौ फूंक सां अंबर फोडै ।
महि गिलै मेह पाणी पवन, सूरिजि ससि भांजै सरै ।
त्रेभुयण नाथ विद्या तणी, धरणीधर मनछा धरै ॥ ५० ॥

धरै एह गिर धरण मोह छोडै माया सां ।
दया विहूँणौ दई काम एकिणि काया सां ।

साद करै जम सरिसि महाप्रभ निवळां मारै ।
करै जम कूकूउवा आज कोई सूझ उवारै ।
जम रा जम तूनां जयो वड़ा धिणी तूं वाह वाह।
कोइ बियो जीव राखै कना महा प्रळै मां माहवा ॥ ५१ ॥
माहव एक मरद देव कोई और न दीसै ।
लाख चौरासी जीव परम दाढ़ां विचि पीसै ।
नीइ तुहारी नमो जुग अण लेखै जरिया ।
ह्यो दुजां देवतां किसन वेसास म करिया ।
आपनां आप मारै अनंत इसौ ज्ञान महाराज रौ ।
माहरौ कंत प्यारौ मनां श्रीय सुहावै वुरी छौ ॥ ५२ ॥
वुरो भळौ नह विसन नाम नासति वहनामी ।
गुरुड़ सेस गिळि गियौ सेझ वि ग्र सूनो सामी ।
जिसी अगै जाणती किसन तें निहिडी कीधी ।
भांजि दीया मुर भूयण एक लिखमी संग लीधी ।
इनि मरै एक तूं उवरै साध न दीसै कोई संत ।
ताहरी देव वसदेव तण उंमर नां तोवह अणंत ॥ ५३ ॥
उंमर रा उवारणा हेक तुं हुंतो इ हुंतौ ।
पुरिष नारि सहि पछै नाग कोई देव न हुंतौ ।
नेह ग्रेह पिण निही मोह ममता नह माया ।
वाणि खाणि वापार काम नह क्रोध न काया ।
ताहरा चरिति कासिपि तणा हेक न जाणा मुंढ हुं ।
नाम नै ग्राम जइ आनिहीं तई आ आतिमि एक तुं ॥५४॥
एक अखिलि तूं एक किसन तुं अखिलि कहीजै ।
नीर खीर जद निहीं दान लीजै नह दीजै ।
जडाधार सुर जेठ निको कोइ दीह निका निसि ।
निका भोमि नह निहंग देस विदेस निका दिसि ।
नवकुळी नाग अठकुळ अनड सरब जीव नासति सिंही ।
उणि दीह एक हुंतौ अनंत नरिंदि इंदि जिणि दिन निही ॥५५॥

इंदि निहि नह आदि सीळ असीळनि को सुख।
दुडिदि चंद नही डील भोग संजोगनि का भुख।
साच वाच सवाद वाद इहिकार निही वळि।
भुयण तीन ग्या भाजि गोम ब्रहमंड ग्या मळि।
ताहरी खबरि न पड़ै त्रिगुण तिणि वेळा किहड़ो इ तंत।
ऊंघ मां काइ जागै अलख ऊभौ काइ बैठो अनंत ॥५६॥

॥ दूहा ॥

ऊभो कांइ बैठो अनंत, निराकार निरधार।
पार नि को परमेसरौ, वेद कहौ सौ वार ॥ ५७ ॥

वेद न भेद न पर ब्रह्म, सहज न सील संतोष।
भेप नै माप नै महमहण, तुं निगुरौ निरदोष ॥ ५८॥

करम अनै अकरम किसन, ध्रिनि नै चिंति नै ध्रोख।
वाप जिनेता वाहिरौ, मोख नहीं तुं मोख ॥५९॥

॥ कविति ॥

मोख खमो खम कंद निगुण निरपख नरेसुर।
निरालंव निरलेप अभ्रम अछेप सुरेसुर।
चिदाणंद वह चतुर आप विणि पार अमूल।
सास आस विणि सदा एक एकुं असतूल।
अण मरण ग्यान अण कसट अंश अति उद्यास अनाथ अति।
अखंडित रूप अवरण अलख सरव भूति आधार सति ॥६०॥

सरब भूरति साधार विसव मूरति निसवादी।
आदि पुरुष अविणास आदि वाहिरौ अनादी।
आदि अणादि अनंत आदि हुंतो औ आतिम।
तुं अरेळ अपरेत प्रभु अचेत पुरातम।
विगन्यान ग्यान तुं हिज विपति तुं अछेद अभेद तन।
अविगत नाथ केवल अलख, पाप निही तुं कोइ पन ॥६१॥

पन प्रकास अविणास अलख उद्यास अपंपर;
सरब वास बसास आस पूरण अति अमर
दास दास लीला विलास निगुण ग्रभवास निवारण;
ग्रब प्रास निसचरां नास इळा अघ जास उतारण
किणि ठौड़ि रहै जायो कठै घणी पहचि दातार घण
विणि रूप रेख किणि दिसि वसै निमो निमो तु' नारीयण;॥६१॥
नमो नमो नारीयण इना किम जी।न उपाया;
अकळ वुद्धि अहंकार नमो नर नारि निपाया,
कीयौ पाप पुनि कीयौ च्यारि खाणै वाणै चत्र
कीया सुख दुख कीया अनिलि कीधौ कीधौ अत्र;
त्रैभुयण कीया किम करि त्रिगुण जवन देवि सरि जाईया;
आदेश नमो तोबह अनंत इतरा भूत उपाईया; ॥ ६२ ॥
इतरा भूति उपाय एक नवि इं'द्री उपाया;
दस इं'द्री दस देव परम करि धणी पठाया;
देवा इं'द्री दुमेळ कीया भेळा करणा करि;
तूं सबळौ ताहरैं सरव वसतां एकण सरि;
निगम ही क्रीत माणो नहीं किसौ पार अणपार किरि;
ताहरै डील सबळौ त्रिगुण पग पाताळ स्रगलोक सिरि; ॥६३॥

॥ छंद हणूफाळ ॥

स्रगलोक सीस सुचंग आदेस तोव्रह अंग;
परमेस पाव पताळ, कहि किसन घर टीकाळ;
ससि सूर लोचन साचि, चत्र वेद वायक वाचि।
बुद्धि ब्रह्म निसबावीस, अंतकरण कहिजै ईस।
नदि अधिक नवसै नाड़ि, घन घन अंतर धाडि।
दधि कूख है जम दाढ़ि गिणि सरव दांणव गाढ़ि।
है हंस माया हास, सहि पवन केसव सास।
हिदौ धरम विणियौ रूप, अलोक छात्र अनूप।

जस भगति जादव जांणि, वणराय रोम वखांणि ।
वपु वरण वीरज वारि, नह वैर रामा नारि ।
करतार इंद्री क्रंम, पळ में न दीह परंम ।
प्रभु तणौं हाड पहाड़ि जपि अगन मुंहडौ जाड़ि ।
अति लाभ कहिये लोभ, सोय अहर साहवि सोम ।
महा तत्त चेत मँडाण, परमेस डील प्रमांण ।
पर मुख पाप पछांणि, वळि गयण बाँह वखांणि ।
करतार मेह करंति, ग्रम चिहुँ रसा वरसंति ।
परमेस पार अपार, वैराट घट विसथार ॥ ६४ ॥

॥ कवित्त ॥

वडी देह वैराट, घाट तोबह घण नांमी ।
हूँ पापी हेकलौ, सुजस नह जांणां सांमी ।
भगत भलौ नंद भाग भगत ग्वाळिया भणीजै ।
वडा भगत भगवांन रा, रांम रींछा सिर रीजै ।
भील ही भगत थारै भला, कैये नां मौजां करै ।
हमां सत कूकि विरता हुयै यैरै काजि अवतरै ॥ ६५ ॥

येरै काज अलेख, अनंत फेरा अवतरिऔ ।
भगतां कजि भूधरां, कंध हैमर रौ करियौ ।
हंस अनैं वाराह, त्रिगुण अवतार तुहारा ।
तूं नां दीठौ तिकां, जिकां जीता जमवारा ।
नव खंड दीप सिगळा अनड़, वह पांणी सांबोड़िया ।
केई वार किसन कलिपत करि प्रयाग तणौं वड़ि पौढ़िया ॥६६॥

प्रयाग तणौ वड़ि पौढ़ियौ, पूरण ब्रह्म परमेस ।
आवी दाइ अतीत नां, सेभ्र कीओ ले सेस ॥ ६७ ॥

साहिव सूता सेससिरि, करम न दरसै कोइ ।
कान तणै मल सां किसिनि दैत उपाया दोइ ॥ ६८ ॥

आतमि दैत उपाइया, पीरिसि बळ अरणपार।
मध कीटग जीपै कमरा, मध कीटग मैवार ॥ ६९ ॥

॥ कवित्त ॥

मध कीटग दै मार हार देवतां हुई हरि।
त्राहि त्राहि सुर तवै, किसन वैहिली ऊपर करि।
व्रहंमि जगायौ विसिन, परम कोपियो ईसर परि।
महा कोप मन मांहि, कंध केकांरा जिसौ करि।
बह सांमि अनै दांणव बिन्हइ, घरण जोर जूटा घरणौ।
हेकला विढ़ै के जुग हुआ, जळ मथीयौ जळनिधि तरणौ ॥७०॥

जळ मांहै जगदीस विढै मध कीट विभाड़ै।
वतलावै वेसासि, पछै दाणवां पछाड़ै।
मध कीटग रौ मास करै धरतो करणा कर।
देवां नै तिरण दीह, वडौ सुख दियै विसंभर।
सहि जाव ग्यांन सनकादिखां जरण२ सरिसौ जू जूआै।
सुर जेठ भीड़ पड़ती समौ, हंस रूप ठाकुर हुआै ॥ ७१ ॥

हुऔ दैत हरणाख, ब्रह्म नै सोच हुऔ वळि।
समद सात सांकीया, रैरण ले गयौ रसातळि।
इंद्र वरण औद्रके, वहत देवी घटियौ बळ।
हुऔ रांम वाराह, जमी कारण मथियौ जळ।
आधारि दाढ़ ऊपरि इळा, धरणी धरि तारी धरा।
हरणाख मारि जीतौ हरी, प्रघळ जोर परमेसरा ॥ ७२ ॥

हेकै परमेसर कछ हुऔ, अवतार नमौ हरिः।
इंद निवाजण अरक, अमर तेड़िया अपंपरि।
वांम तरणै वासतै, रांम मथीयौ रेरणायर।
दईतां रा तिरण दिवस, वहत मन मौहै बायर।
विलौअे वार बळिराव वहि सुरां जैत सीता वरै।
रुघनाथ तिकै दिन राह रौ, धड़सां सिर अळगौ धरै ॥ ७३ ॥

अव्भा वेद अनूप, राम ब्रह्मा सूं रहिया।
हूँ वेदां वाहरू किसन नूं इण पर कहिया।
सोच घणौ अति सबळ, प्रघळ देवां नूं पड़ियौ।
हुवौ ब्रह्म बुध हीण, इसौ दांणव आ भिड़ियौ।
असुर नै कीयौ तीरथ अविल, समुद डोह अति कीध सर।
फुंक सूं संखासुर फाड़ियौ हुवो मछ अवतार हरि॥ ७४॥

हरि नै प्यारौ हेत प्रथम पहिलाद पियारो।
पुणौ प्रेम पहिलाद मुकंदहु वेली म्हारौ।
तिण वेळा तुरत प्रभु थंभ मांहि प्रगट्टे।
इधकि हुई आवाज वडौ कोई ब्रहमंड फट्टे।
तेत्रीस कोडि लिखमी तवै हुऔ कोड़ि जमराव हरि।
आजरी घणुं अध्रीयांमणी नारसिंघ थारी निजरि॥ ७५॥

निजर नमौ नरसंघ कोप दाणव सिर कीधौ।
लाधा थारा लखण, राम भगतां सिरि रीधौ।
ग्यांन आप गाजियो, हाथि हरिणाकस हिंणियौ।
चूंनाळि जिम चावियौ खरौ तैं काळि जि खिणियौ।
करि कोप मुख रातौ कियौ तूं नरसंघ न लाजियौ।
पहलाद हुवौ वालौ प्रभु, सगै भाई नां साभियौ॥ ७६॥

सगौ तुहारै साच, कूड़ ऊपरि नित कोपै।
कूड़ साच तैं किया इसा ब्रिदि तूं नां ओपै।
वांमण ब्राह्मण महा अविगत महाराजा।
आव आव आंहचै, करै रावां इंदराजा।
बलि राउ जिग न कीधा बहत इंद्रासण डूलै अही।
वांमणो राम आयो वहै छलिसै वलि राजा सही॥ ७७॥

बलि राजा बांधिवा हुयौ खाटरौ वडौ हरि।
आयो प्रोळि अनंत, किसन इहड़ौ तोफौ करि।

चाचा ले वाधियौ बडौ ब्रहमंड विलागौ।
चलण हेक हरि चांपियौ भलौ भूगोळ सभागौ।
हरि चलिणि हुँति गंगा हुई, साचां सां हिति सांधतौ।
तूं आप आप बाधौ त्रिगुण, बलिराजा नां वांधतौ॥ ७८॥

॥ दूहा ॥

बलि राजा ना बांधियौ, रहै इंद कौ राज।
कंटक गुर कांणौ कीयौ, सो वैराट सकाज॥७९॥
धन धन गंगा तूझ धन, निमो भगति तूं नाउ।
प्रेम घणौं सां परसिया, परमेसर रा पाउ॥८०॥
तूं नाँ के कीधौ त्रिगुण, कहि तूं आयौ काह।
नाग सेस जाणौं नहीं, रिषवदेव रा राह॥८१॥

॥ कवित्त ॥

रिषव नाभ सुत निमो अलख अणजीत अणंकल।
ब्रह्मा सेस महेस दत जोगी थारा दळ।
इसौ आप अविधूत जिको अनसोईया जायो।
वीठुल सां वादतैं, गरब गोरखि गमायौ।
कमळी भगत जीतौ कळह त्रिपुरासुर जिसतांन तन।
इमिरित वावि सोसी अलखि, विषंभ रूप वणियौ विसंन॥८२॥
विषंभ प्रमेसर वाह, भीड़ सकर री भागी।
प्रिथी दुहतै प्रथु निमिष इक बार न लागी।
वासिटि इंदि वाछड़ा दईत देवां गमियौ दुख।
राजि बड़ा पिथराउ, सरब जीवां दीन्हों सुख।
सगर रै घणौं ओळादि सिर, कपिलि महाप्रभ कोपियो।
इंद रौ कीयौ ऊपर अधिक इयां ग्यांन दे ओपियो॥८३॥
इयां ग्यांन आपियौ, महा ब्रह्मग्यांन कपिलि मुनि।
कपिलि मात धन करम, पूत पायौ अगलै पुनि।

नर नाराइण निमो, ध्यांन धरियौ धरणीधरि ।
पेखि रूप परम रौ, प्रघळ कांपियौ पुंलिंदर ।
करतार भीर भगतां करै साधां रै साचो थग्रौ ।
ग्राह नां मारि समपी सरग हाथी रौ साथी हुग्रौ ॥८४॥
हुग्रौ रांम दुजरांम ब्रह्म रै मन मां वेधौ ।
फरसो साही फरसि, खरौ खत्रिग्रां सिर खेधौ ।
ग्रौ ग्रलाह ग्रणग्राह निमो जम रेणां जायौ ।
देजां सरिसि धर दियण, ग्रसंख जिगि करवा ग्रायौ ।
पिता रो वेल करिवा प्रभु गह पौरिस मां गाजियौ ।
वाह हो वाह फरसा ब्रह्म, सहसब्राह नां साभियौ ॥८५॥
साभि दैत सांमळा, भीर समंपी भगतां नां ।
रामचंदर राघवा, दियौ दरसण दसरथ नां ।
रुघनंदण रुघनाथ, निमो रुघपति नरेसर ।
रुघराजा रुघराउ भूतभव भेख विसंभर ।
किसन रो सुरे दरसण कियौ कर जोड़े कीरति कहै ।
करतार काजि दसरथ कन्ही, विसवामिति ग्राया वहै ॥८६॥
विसवामित्रि कारणै, प्रभु चडियो जिगि पालण ।
जां मारै तां मुगति, ग्राज ताड़का उधारण ।
ग्रा ग्रहिला उधरी, किसिनि पगि पावन कीधी ।
कीर गियो कविलास दांन लेवै कंठ दीधी ।
जगदीस जनक रै ज्याग मां ग्रायौ वहै उतामळौ ।
भांजियौ धनख रुघनाथ भड़ि, सीत परणियौ सांमळौ ॥८७॥
सीत परणियौ सांम, गरब दुजरांमि गमायौ ।
हुग्रौ ग्रयोध्या हरख विळै कोसल्या वधायौ ।
ग्रमर करै ग्रालोभ मौहरि मंथरा नां मेली ।
के गहि मंथरा कहै, हिमैं हरि नां वन हेली ।
के गई ग्ररजां करण, वड़ौ राउ दसरथ नां ।
दईव नां हिमैं वनवास दे, भोमि समापि भरथ नां ॥८८॥

भरथ पिता दुख भाळि हुग्री वीठुळ वनवासी।
सरगि गिग्रौ दसरथ, ग्रनंत कीधौ ग्रविणासी।
सीता लखमण साथ, परम ग्रे पदवी पाई।
गोह भील गोविंद, रहे रन मां रुघराई।
भाद्रवी गोठि कीधी भली, विसन थियो भोजन वड़े।
सिर जटा राखि दसरथ सुतन, चित्रकोट ऊपर चढ़े ॥८६॥

चित्रकोट सां चले व्याधि दांणव विधांसण।
ग्रगथि धनष ग्रापियौ, मारि इंद रो रिपि रांमण।
सूपनखा रो स्रमण, नाक वाढ़ियौ निभै नरि।
निभौ ग्रकलि रुघनाथ ग्रनंत पंचवटी ऊपरि।
खर सधर दैत दूखण तिसर, दही बेल दहसीस री।
चउदह हजार खळ चूरिया, जैत जैत जगदीसरी।

॥ दोहा ॥

जैंत हुई जगदीस री, रावण रै मनि रीस।
तूं मारै मारीच नों, सीत हरै दहसीस ॥ ६१ ॥

लिखमी नां हर कुण लियै, कुण जीपै करतार।
कंटक मारण कारणौ, वीठळ कीयौ विचार ॥ ६२ ॥

किसन ग्रनै लखमण कहै, करां महा जुध काम।
सीता वाहर सांमळौ, रोस घणौ मां राम ॥ ६३ ॥

॥ कवित्त ॥

रामचंद रिम राहि, ग्राइ जटाइ उधारै।
कमंध छेदि कर कापि, तुरत सवरी नां तारै।
धन सवरी रौ धरम प्रभु महाराज पधारै।
बाळि बांण सांबहै साध सुग्रीव सुधारै।
सुग्रीव दुख टळियौ सही, कहर बाळि सिर कोपियो।
हरि मिळे ग्रावि हणमंत सूं ग्रधक पराक्रम ग्रोपियौ ॥६४॥

हणमंति किया हमल, सहल दांणव संघारे ।
ऊंधी नाखि असोक, पछै हरि चलणि पधारे ।
मधसूदन मछरियौ, पाज बांधै दधि ऊपरि ।
साथि रीछ कपि साथि, किसन आयो पारंभ करि ।
लाछिवर सहल भेळी लंका,पळचर खेचर पोखीया ।
तेत्रीस कोड़ि सुर तारीया, मारि दैत ग्रह मोखीया ॥६५॥

असुर मारि इंदजीत मेघ महि रावण मारे ।
निसचर नीचा नाखि, सत्र इंदतणा संवारे ।
रावण कुंभकरण, मार कीधा मळ-माटी ।
दीयौ वभीपण दान, खरी तै कीरति खाटी ।
सीता सहित कपि साथि सहि बैकुंठनाथ बधाइया ।
चउदमै बरस वे चक्रधर, आप अजोध्या आइया ॥६६॥

आप निमो अवतार आज ऊधरी अजोध्या ।
जिगि कीधा जगदीश जीपि लवणासुर जोधा ।
च्यारि वीर चत्रभुत्र, लाछिवर जिसौ लखमंण ।
भरथ आप भगवंत, समर परमेस सत्रघंण ।
संखासुर गया सुर सारिखाँ, दान महा उत्तम दीया ।
करतार इसौ पीरदान कहि कई दैत तीरथ कीया ॥६७॥

निमो राम वलिराम भळै संकरखण भाई ।
निमो सेस सारीख, हाथि आवध ग्रहीया हळ ।
वडा दैत ग्या वहै, निमो बळभद्र महाबळ ।
रैवती-रमण सुत रोहणी, निराळंव निगरब नर ।
काळ घण पूत वंधव किसन, मयण रूप मदमांणगर ॥६८॥

मयण वाप महाराज, गदा संख पदम संवाहे ।
चकर झालि चत्रभुत्र, ओपि कुंडळ पति आए ।
आठ सिधि नव निधि, सु पिण लीधे साथै सह्नी ।
साथै सात सरग, विसन आया वसदे वह्नि ।

बसदेव घरे आया वहे, तुं हीज रजोगुण सत तमो ।
देवकी बाळ धन देवकी, निमसकार तुनां निमो ॥ ९९ ॥

निमो निमो नान्हिया, किसन कनहिया काळा ।
प्राण जसोदा प्रभु, विसन नंद आंगण वाळा ।
सकटासुर साभीयो तेंईज मारीयौ तिणवत ।
पळ गमीयौ पूतना, वडो मांडीयौ सदाव्रत ।
रोज रा रोज गांजे असुर त्रीकिमि मारे से तरे ।
पालणे मांहि हीडे प्रभु, घण नांमी भगतां घरे ॥१००॥
भगते भी भांजियौ, नंद उपनंद निचीता ।
हसै जसोदा हीयौ, सरव प्राणी ग्रिह सूता ।
माटी खायै मुकन, देव नर नाग दिखाळे ।
मुंह मोटो महाराज, वसुह आकाश विचाळे ।
ओळभा किसन लावै इधक, छींका छोड़ण भालि है ।
व्रिज रै त्रिया आवै विढ़ण, पूत जसोदा पालि है ॥१०१॥
पूत जसोदा पालि, करै चोरै घी चाटै ।
माखण लूटै महर, अधकि वाकळा उभांटे ।
किसन धवै कूकड़ा, बाट वांधे विगताळी ।
दही तणौ ले दाण छाछि ढोळै छोगाळौ ।
गुयाळियां साथि भूखौ गयौ धेन साथि धेना धणों ।
बांभणां जिगन बोया वहत उधारी वांभणी ॥१०२॥

॥ दूहा ॥

वहन उधारे बांभणौ, जोइ जीमै जगदीस ।
साच पियारो सांइयां, कूड़ करौ की रीस ॥१०३॥

भगतां रा घट भांजिवा, आयौ इंद अजांण ।
श्री गोरधन उपाड़ियौ, कर सखरौ कलियांण ॥१०४॥

वरण नंद नां ले गयौ, ब्रहम ले गयौ वाछ ।
वरिणि ब्रहिमि ही वाचियो, मिनिखि नहीं तूं माछ ॥१०५॥

॥ कवित्त ॥

माछ सरीखो महर, तुहीज वाराह जिसौ तन ।
जादव रिमियो जेठ वाह मधवन विंदावन ।
व्रिज बैरां रा विसन, चीर झड़पै व्रख वसियौ ।
ऊंआं नां तूठौ अनंत, हुऔ मन मांही हंसियौ ।
वन मांहि वजाड़ी वांसळी, महीआरै तुं सां मिळै ।
आजरै घणौ हुइ ऊलटै, व्रम मूरति सांमै वळै ॥१०६॥

व्रम मूरति व्रजराज, निरति खेलियौ निरंतरि ।
राम वधारी रात, हुई जुग लाख तणी हरि ।
रास निमो रहमांण, मुगति दीन्ही महिलां नां ।
गोकळ मां गोविंदो, वळै मिळियौ विहलां नां ।
तोबह वखत ऊखळ तणौ, सबळौ रांढ़ू सांधियौ ।
जसोदा जोइ पीरदांन जण, बहनांमी नां बांधियौ ॥१०७॥

बहनामीं वांधियौ सु तन कमेर सुधरिया ।
हरि सारीखा हुआ पाप अगिला परिहरिया ।
दड़ काज जळ डोहि, नाग नाथियौ निभै नरि ।
पुठै चढ़ियौ प्रभु, तुरत तिखराव गयौ तरि ।
व्रिजराज जुऔ व्रिजवासियाँ, मोहण रा निरखी मता ।
कमाळी ब्रह्म डंडवत करै, देखण आया देवता ॥१०८॥

देव नंद रै दुवारि, करै ओळग कितराई ।
वैकुंठ आवी वहै, कमी न दीसै काई ।
गावैं तुंवर गीत वेद उचरै ब्रहमां ।
निमो नंद रा नेस आज ऊतरै अक्रमां ।
किसन सिर फूल विरखा करै, अमर तमासै आइया ।
निहंग धरि बीच मावै नही, सुरे विवांण संबाहिया ॥१०९॥

सुरां तणौ सिरदारि, असुर फाड़ियौ अघासुर ।
पछै बगासुर पाड़ि वळै मारीयौ वछासुर ।

अंकुर वेंण साचौ अवल हरि रौ मामौ हारीयौ ।
किसन नां देखि कंस कांपीयो महल तणै विचि मारीयौ ॥१२२॥

महल तणौ विचि मारि घणौ घीसीयो वड़ौ घर ।
सहस आठ संघरै असुर सहि कीधा अमर ।
ऊघा देखि अलाह इळा उगरै नां आपै ।
बंभ संभ दे विरिदि सहस दस धेन समापै ।
अकरूर घरे आया अनंत विळै मात पिति विळकळै ।
कूबड़ी हुँति कीधी क्रिपा माहव भगतां सा मिळै ॥१२३॥

मिळै सैंण माहवौ दहे वसदेव तणौ दुख ।
मुंआ पुत्र मेळिया सरस मां नां दोन्हो सुख ।
गुर रा बेटा गया प्रभु तूं लायो पाछा ।
ब्रह्म सुतन दस वळै अनंत ने अरिजण आछा ।
मछकंद सरिस दीन्हीं मुगति, काळ तणौ सिरि क्रोधियौ ।
जुरासंध इसी सबळो जवन, लिखमी वर नां लोधियो ॥१२४॥

लिखमी वर लोधियो, लखण देवतां न लाधा ।
पांडव वाल्हा पाँच, मया तो नां वह माधा ।
प्रघळ चीर पूरिया, परम पेखियो पंचाळी ।
पांडव दाखै प्रभु, वेगि आया वनमाळी ।
जुजिठिळ भीम अरिजण जिसा, जण जीता अरि जेरिया ।
भीषम द्रोण दुरजोध भ्रिगि, खोहिण अठारह खेरिया ॥१२५॥

खोहिण खोहिणि खळां, सांमि सांमठा संघारै ।
दियै सदामैं दांन, त्रिगुण त्रिघु राजा तारै ।
तरि तरि जमणां तणौ, कर कीळा करणाकर ।
छाया पाडळ सेभ, बिसन तौवह राधावर ।
व्रिज तणौ देस तजियो व्रहमि, अगै वाद तौ इंद सां ।
कुरखेत मांहि मिळियौ किसंन, निगुण जसोदा नंद सां ॥१२६॥

नंद तणी नर नाह, रीछ सां भिड़ियौ राघव ।
राम तणौ कजि रांमि, निगुणि नाथिया बळध नव ।
इळा तणौ अवतार, सांमि आंणी सतभांमा ।
घर सिसपाळ सिंघार, रुखमणी परणी रांमा ।
कालिंद्री विदा भद्रा कुंअरि, कहि लखमणा क्रिपाळ रैं ।
रींछड़ी नाग जीती निमो, पटरांणी प्रतिपाळ रैं ॥१२७॥

पटरांणी प्रतिपाळ, सील सहिजै सारीखै ।
मुद रुखमणी मात, आठ प्रभ सांमै ईखै ।
नरकासुर दीकरौ, महरि बूसट सां मारै ।
सोळ सहस अेकसौ, सांम गोपिआं सुधारै ।
जदरथ सलव बुल बुल जिसा, दईत किता ही दोटिया ।
कोपियै किसन झाझा करग, बांणासुर रा बोटियो ॥१२८॥
बांणासुर बोटियो, साध चेतियौ सदा सिवि ।
दळै दैंत व्रकदंत, खळां ऊपरां हिमैं खिवि ।
कासीपति कापियो, तास सुत सहर समापै ।
दहे दैंत दीकरौ, अगिन क्रितीया ऊथापै ।
(तैं) कीया काम वहिया कटग, करता कितरा अेक कहाँ ।
ताहरा विसव रूपी त्रिगुण, नाथ प्रवाड़ा ना लहां ॥१२९॥

नाथ प्रवाड़ा नमो, विसन ताहरौ वहै वंस ।
अखिल रूप आतमा, अेक बांण सां गयौ अंस ।
कलिजुग लागौ किसन, वचन कहियौ नंद वाळै ।
जुजिठळ म करे राज, हाल जाया हीमाळै ।
पांडवां सरग पोहचाड़िया, पांच पदारथ पाइया ।
जगनाथराय जगनाथजी, अनंत उडीसै आइया ॥१३०॥

॥ दूहा ॥

अनंत उडीसै आइयौ, श्री बहनांमी बुध ।
जै जीतौ खापर जवंन, जग जीतौ विण जुध ॥१३१॥

वाजा अति वाजसी, भेर मादळ नै भूंगळ।
काहळ संख अनेक, तांम धूजसै रसातळ॥
नीसांण रुड़ै कांपै निहथ, सहि जांणि गाजे सघण।
बरघू दमाम करनाळि बह, घुरै ढोल कंसाळ घण ॥१४२॥

केई ढोल कंसाळ, धरा व्रहमंड धड़क्कै।
सुरणायें सालुळै, राग सींधूओ रहक्कै।
वीर हाक तिण वार, देव दांणव जूटा दळ।
वाजै घाउ निहाउ, हेक हथवाह करै हळ।
हींसुए विढ़ै भड़ हंस रा कुंत कुहाड़ै जुध करै।
त्रिधारा खडग वाहै त्रिगुण, त्रिगुण हाथि दांणव तरै ॥१४३॥

त्रिगुण किलग रिणताळ बिन्हइ भिड़िसै अतळीवळ।
तरुआरै त्रिगडां, विळै विढ़िसै नर विमळ।
कई ढळा कांकरा, लाठी लोढां सां लड़िसै।
सहिसै घाव सूरमा पुरिखि पड़िसै गज गुड़िसै।
किलग सां कव्ह करिसै कहर, फौजां निकळंक फाबिसै।
पहाडां हंति लड़िसै प्रभु, असुर अमांडै आविसै ॥१४४॥

असुर अमर आहुड़ै, असख भड़ गुड़ै भिडै अत।
रुंड मुंड रडवड़ै, विमळ नदीआं वहिसै रत।
कंध संध कड़िडिसै, हाड मुड़िसै हेकांरा।
आविटिसै असरांण घमंक लेसै धीकांरा।
चत्रभुत्र तणा वहिसै चक्र, पडसादां पड़िसै पका।
मलेछां तणां मुड़िसै मरट, धडां तणां अति धूबका ॥१४५॥

धड़ा तणां धूबका, जवन दळ पडिसै जाडा।
अइयो निकळक अलख मुरिडि नाखै खळ माडा।
केई गिलै व्रम कीच. हुवै दस कोड़ि पजाहर।
जवन दळां जग जेठ, विसन मारै वहवाहर।
किळंग रौ नास करिसै, किसन, असरां नाद उतारिसै।
पचास कोड़ि दाणव-प्रचंड, सत गुरु आप सिधारिसै ॥१४६॥

सतगुरु तणा हुसेन, भला दइतां सां भिड़िसै ।
हणमंत करिसै हाक, प्रघळ पापी नर पड़िसै ॥
असरां रै ऊपरा, दइव आपरा फिरै दव ।
कूड़ा नां कांपिसै, प्रभु जण लड़िसै पांडव ।
हरि साथि साध सबळा हुआ, जगजीवन तारण जगत ।
किलंग ने कंस भेळा किया, भूधर रा जीता भगत ॥१४७॥
भूधरजी नौ भूप, तनां पूजै दशरथ-तण ।
गुण गंध्रप विणि ग्यांन, जख कींदर पित्तर जण ।
केई देव रिपि कोड़ि, प्रघळ चारण सुख पायै ।
माहव नां मोतीये, ब्रह्म माहेस वधायै ।
कळिजुग तणि जड़ काढ़िआ, आवो भलो अचंकरी ।
फर वरी पहवि ऊपरि फिरै, निमो फौज निकळंक री ॥१४८॥
इणि निकळंक नरेसि, भ्रांति सिगळो ही भागी ।
हुआ हरखि ओछाह, जोति अति घरि घरि जागी ।
इळि नीळो अति अंब, केई ऊगा कळिपतर ।
अन्न नीपिजसै अधिक, प्रैंज पालिसै परमेसर ।
ससि तणौ कलंक जाइसै सहो, गोतिम त्री अहिला लजा ।
वधायौ प्रम पदमावती वळो सतवती सुरज्या ॥१४९॥

॥ दूहा ॥

अे सतवंती सुरज्या, नरिंद किलंग री नार ॥
इण निकळंक रै ऊपरा, अति आरती उतार ॥१५०॥

इम्या लेसै उवारण, तूं आतिम आधार ।
सावत्री साराहीयौ, औ निकलंक अवतार ॥१५१॥

नीकौ जणरौ नाम निज, पणिजै निकळंक पात्र ।
सहि छात्रां ऊपरि सरै, श्रिया कंत रौ छात्र ॥१५२॥
रीत भली की रामचन्द्र, अधिक अमोलक अेह ।
वसु हुं तणै सिर वरससै मांगै तारां मेंह ॥१५३॥

तूं अेकल मल आतमा, तूं सबलो ससमाथ ।
तीन भुवन अेवै तनां, नाग नरां सुर नाथ ॥१५४॥

ग्वाळां साथै गोविंदो, गोविंद साथै ग्वाल ।
तूं स्याळां नां सूर करै, सूरां करै ले स्याळ ॥१५५॥
मरद भाल महिला करै, महिलां करै मरद्द ।
तूं आगै दसरथ तणां, राकस थायें रद्द ॥१५६॥

असुर मार तूं आतमा, निमो तुहारा नांम ।
मारै तां समपै मुगति, राकस तारै राम ॥१५७॥
अधम करै अन्याय अति, नाखै नहीं नरिग ।
साध रहै संसार मां, राकस रहै सरिग ॥१५८॥

॥ कवित्त ॥

राकस रहै सरिग, घणौ गरढ़ौ घणनांमी ।
तूं सीलै साहिबा, जूंन रिणि अन्तरजांमी ।
तूं न्यायी नारियण, अेक तूं नहीं अन्याई ।
गरब पहारी ग्यांन, भरत सत्रघण रौ भाई ।
सुहिद्रां वीर सरवरो सदा, भद्रा तणौं भरतार भड़ ।
सिव तणौ मित्र सुर जेठ रो, विसन करां कुण तूझ वड़ ॥१५९॥

विसन तूझ सिव ब्रह्म, अेव करतां पंड सूका ।
दैत तणै पहलाद, नाम ताहरा न मूका ।
अरिजण बळ आखियौ, सांमि तूनां नह छोडां ।
तुझ तणै तुडतांण, हमै कुण करिसै होडां ।
सत नै धरम संतोष सहि, सीळ साच सगळा सधर ।
तत पांच तीन गुण महा तत, अेवे तोनां संखधर ॥१६०॥

संख तुहारै सुकरि, वळै चक्र पदम विराजै ।
हरिणाकस नां हणौ, ग्यांन पोरस करि गाजै ।
हुओ सीह हैरान, देव सहि तोहां डरिया ।
दांणव सहि दाटिया, अेक पहिळाद उधरिया ।

गोविंदा नमो किम करि ग्रहै, तीन भुयुण रा राय नां ।
तूं करै बेल ईसर तणी, तूं मुरडै महमाय नां ॥१६१॥

तूं मुरड़ै महमाय, रुद्र मरतौ रखवाळै ।
तणौ सुग्रीव तुरत, तूं हीज सबळौ दुख टाळै ।
सूं पतिसाहां पतसाह, तूं हीज राजा तूं रांणौ ।
तूं गोकळ रौ ग्वाळ, किसन नंद रै कमांणौ ।
जगदीस ग्वाळ जीवाड़िया, दहन पियौ भौ डारियौ ।
पहिळाद सरिस चाटै प्रभु, तैं अंबरीष उधारियौ ॥१६२॥

तूं अंवरीष उधार, जो न तजसै थारा जण ।
तूं हूँता त्रीकमां, बहत प्रांमीयौ वभीषण ।
तूं ब्रह्मा रौ तात, नमो नारीयण तणौ नभ ।
हुऔ वडौ लहणियौ, पांच पांडव सरिस प्रभ ।
गुर तणा पुत्रजमपुर गया, सहल मात कीधा समा ।
जीवाड़ी त्रिया जैदेव री, तैंहोज मुऔड़ी त्रीकमा ॥१६३॥

तूं त्रीकम दातार, अटळ ध्रू कोधौ अमर ।
दसरथ रा दीकरा, कीयै पहिळाद फुलिंदर ।
भली कमाळी भगत, किसन सरिखौ ले कीधौ ।
रुखमांगद ना राम, दान वैकंठ रौ दीधौ ।
अंम्हाना मौज दीन्ही इसौ दूजौ कुण हुइसै भलू ।
पीरदास सरिसि तूठौ प्रभु, चौरासी कीधी चलू ॥१६४॥

चौरासी चक्रधर, घणी वाली रिजियो घण ।
मैं नह भजिऔ निगुण, तंनां तजिऔ दसरथ तण ।
अति कीधौ इनिआउ, कदे तीरथ नह कीधौ ।
हुँ इहड़ौ हरि हरे, दांन अन दान न दीधौ ।
पापरै संगि वैठौ प्रभु, कहौ सूझ अकरम किसौ ।
मोकळा जीव मैं मारिया, हूँ अयांण अणबूझ इसौ ॥१६५॥

हूँ अयांरा अराबूझ, प्रघळ कपटी वड पापी।
कांमी क्रोधी कहर, विळै पर निंदा विग्रापी।
अति लोभी लालची, कूड़ अधिकौ मन काळौ।
मुझ तरणै महाराज, दई ध्रम रौ देवाळौ।
बुधहीरा विळै सत वाहिरौ, तुं अजरौ वाल्हौ टकौ।
हेक तौ दया आवै नहीं, पीरदास मूरखि पकौ॥१६६॥

मुरिखि मन माहरौ, चरण चाहै चत्रभुजरा।
किम करि भेटिस किसन, कटक आडा अकरम रा।
सिंघ सरीख संसार, प्रांरा डाचा मां पड़ियौ।
नर किम कर निसरीस, जरू ले ताळो जड़ियौ।
नारगी भुगति करि नेह निज, इतौ पाप कीधौ असन।
नैडै निराट देखैं नहीं, कोड़ि कोस अळगौ किसन॥१६७॥

किसन किसन कहि किसन, हंस वड़ पाप हरैसै।
किसन किसन कहि किसन, किसन किल्यारा करैसै।
क्रिसन कहंतां किसन, देवळै दरसरा देसै।
क्रिसन क्रिपाल क्रिपाल, रांम पातिग नै रेसै।
करतार घरणूं कासूं कहां, वडा देव वांमरा व्रपा।
केसवा रखै कुमया करै, किसन हिमै करिजो क्रिपा॥१६८॥

क्रिपा करै सो किसन, हमैं रीझसौ घरणौं हरि।
नरां नाह नरसिंघ, प्रभु पहलाद तरणी परि॥
दरिसरा देसौ दई, मया करिसौ मो माथै।
तिम मोनां तूठसौ, प्रभु जिम तूठा पाथै।
हेक औ सोच मोनै हुऔ, घरणों जोर बळवंत घरण।
माहरै पाप छै मांकळौ, तोसां किम झलिसै त्रिगुरा॥ १६९॥

तूं बळिहीरणौ त्रिगुरा, सही छै पातिग सबळौ।
तूं अरारूप अकाज, निगुरा अभ्यागत निवळौ।
हाथ नहीं ताहरै, पाव बाहिरौ प्रमेसर।
पेट पूठ नहीं पाव, नाक बाहिरौ किसौ नर।

पीरदास तणौ अक्रम प्रघळ, सिंचिश्रौ घणौ सुधारियौ ।
आंगिमिणि न आ अनंतरै, हरि पातिगि सांहारियौ ॥१७०॥

हरि किम करि सारिसै, प्रभु अणपार पराक्रम ।
सरग समापै सहज, किसन कहतां गिऔ अक्रम ।
औ अतळीबळ, अनत, नाम वैराट कहाणौ ।
पार अपार अपार, घाट अणजीत घड़ांणौ ।
सुर जेठ करै सेवा सदा, अेवा निति राखै संभू ।
पीरदास नाम पावन परम, औ पतीत पावन प्रभू ॥१७१॥

॥ दूहा ॥

औ पतीत पावन प्रभु, इणिरौ करौ उचार ।
इणि रौ नाम कल्यांण छै औ अरिजण रौ यार ॥१७२॥

औ गोकुल मां खेलतौ, कहर खीजतो कंस ।
ब्रह्मा इक औ बडौ, हुऔ अमोलिक हंस ॥१७३॥

हंस हुअै रिखव हुऔ, हुऔ औ हीज हैग्रीव ।
हुऔ राम लखमण हुऔ, जाणै छै सुग्रीव ॥१७४॥

॥ कवित्त ॥

जाणै छै सुग्रीव, इयैरा दरसण आछा ।
आलम रहियो अकळ, ब्रह्म जद लेगौ वाछा ।
तूं ना भुजिसैं तिकै, वसै बैकुंठ विचाळै ।
भगतवछळ भगवंत, प्रभु भगतां पण पाळै ।
पीरदास वडौ रस परम रौ, चारण इमरित चाखियौ ।
निस दीह भजन जगनाथ रौ, ईसर बारठ आखियौ ॥१७५॥

ईसर बारट इसौ, रमै बैकंठ मा रामति ।
ईसर बारट इसै, ग्यान गोविंद जिसी गति ।
ईसर बारट इसै, अलख राखै सिरि ऊपरि ।
ईसर बारट इसै, अधिक मानियो अ ंपरि ।

तूं हुओ दास ईसर तणौ, मनछा वाछा दोष दहि।
किसन रा पाव भेटण करै, गुर ईसर रा ग्यांन ग्रहि ॥१७६॥

ग्यांन चरित छै अगम, नाग देवता न जांणै।
कितरै वरसे किसन, जोइ ब्रह्मा क्यैं जाणै।
कितरौ छै करतार, कहौ हिव करिसैं कासूं।
लाछ न जांणै लखण, नमो निरकार निरासूं।
पीरदास प्रेम दाखै प्रभु, कूडै काल्है कांकनां।
रिणछोड़ राय हो राघवा, रीझ समापै रांकनां ॥१७७॥

रांक सरिस दे रीझ, अखिल कांइ खीज करै अति।
वडौ विहळ हूँ बुरौ, पीर सां रीस किसी पति।
भगत वछळ दे भगति, भगति समपौ हू भांमी।
रात दीह रहमांण, घणौ समरौ घणनांमी।
बैकुंठ न मांगा लछिवर राज न मांगां इंदरा।
मांगीयौ दान दे मूझ नां, भगति समापै भूधरा ॥१७८॥

भूधर नमो भगति, करै सुर जेठ कमाळी।
भूधर नमो भगति, प्रथम अति करैं पंचाळी।
भूधर नमो भगति, भरथ सत्रघन री भारी।
भूधर नमो भगति, प्रघळ पहिळाद पियारी।
करतार कोयड़ो कियो, दईव निमो तूं दाव नां।
पीरदास नमो परमेस नां, वसुधा नमो वणाव नां ॥१७९॥

वसुधा नमो वणाव, नमो ब्रह्मांड तणौ वप।
सूरज ससिहर नमो, तूझ वासदे नमो तप।
नमो वांण चत्र खांण, नमो बैकुंठ वणांणी।
नागदेव दधि नमो, नमो परमेसर प्रांणी।
महाराज तूझ माया नमो, नमो नमो तूंहीज नमो।
करतार पार जांणै कमण, नमो नमो नरहर नमो ॥१८०॥

निमो निमो जगनाथ, बडौ ठग हुम्रौ विसंभर।
काठी झाली किसन, भगति नह समपै भूधर।
मनछ्या क्रम मूझ नां, वळै वाचा क्रम वसियौ।
क्रम ना अति कोपियौ, क्रमे ले मूनां कसियौ।
भगति रौ, सहो समैं भांजियौ, बंभ संभ थारै बंदा।
मोहरै अंदर माहे अंतर, गरव किया मैं गोविंदा ॥१८१॥

गरव कियौ ले ग्राम, पासि अभिमान रहै पिरिण।
अेक रहै अहंकार, गेम पातिग कन्हैं गिरिण।
पाखंड मा करौ पीर, सुमन राखौ भाखौ सति।
किसै वडायां करौ, इतौ तोफान करौ अति।
विन भजन कहै तूं विसनौ वडौ थूल सरिखौ वछां।
पीरदास कूड़ बोलै प्रभु, दास नहीं कहैं दास छां ॥१८२॥

॥ इति श्री ग्यान चरित संपूर्ण लिख्यौ छै संवत् १७६१ ॥

———

गुण पातगि पहार

॥ दूहा ॥

अति अनूप आखर अविलि, सरसति करौ पसाउ।
हींगलाज सुप्रसन्न हु, पछिम तणा पतिसाह ॥ १ ॥
समति समापे सारदा, देवि दिया री दंन।
पुरिषोत्तम री जस पणां, सरसती सुप्रसन्न ॥ २ ॥
औथीअै साहिब उपना, भोमि निमौ भाद्रेस।
पीरदास लागै पगे, ईसाणंद आदेस ॥ ३ ॥
धन धन जीवां रा धिणी, साहिवि तुं सुभिवाण।
मुंना तुं वाल्हौ मुकर, ईसरजी री आण ॥ ४ ॥
तुंना भजि भजि त्रीकमा, ऊधरिया अणपार।
भिणि रे भिणि भगवत भिणि, पिण पातिग पहार ॥ ५ ॥
माहव मोहण महमहण, कहि केसव करतार।
करणाकर केवल किसन, पातिग तणौ पहार ॥ ६ ॥
विसन देव पूरण ब्रहम, नरहर सरव निवास।
अतरजामी आतिमौ, नाराइणि अघ नास ॥ ७ ॥
पारि उतारै पाप ना, ग्यान वसारै ग्राम।
हेकोइ तारै हंसना, नाराइण री नाम ॥ ८ ॥
अजामेल अमरापुरी, वसियौ थारै वास।
सवरी गिनिका सारिखै, पहितै गोविंदि पासि ॥ ९ ॥
सिवि संकर ना सापियौ, दीयौ ब्रहन नां दान।
नाम तुहारौ नारीयण, भुजण दीयौ भगवान ॥ १० ॥
साहिबि तोनां समिदिसै, आठइ पोहर अलाह।
ऊआं उधारै आतिमा, औ जोइ समंद अथाह ॥ ११ ॥

प्रभ आधारे प्राणीयो, नाम तुहारौ नांऊ।
वोढे मत खाटै विरिदि, दुतर छै दरीयाऊ ॥ १२ ॥
तोरि तारि कासिप तणा, विसन तुहारी वार।
औ किमि कर तरिजै अनत, सागर कहर संसार ॥ १३ ॥
तारण नाम तुहाइलौ, अईयौ केवळ आप।
औ भवसागर आतिमा, तुं बेड़ा डंड वाप ॥ १४ ॥
अहि सारीखौ विसव औ, रखवाले श्री रंग।
तंना न भुजिसै त्रीकमा, भ्रखिसैं तिका भुइंगि ॥ १५ ॥
पीरै सां पुरिसोतमा, हिमै करीजै हिति।
भगति दिवारौ भूधरा, नाम लिवारौ निति ॥ १६ ॥
कांन्हइया थारा करम, वाह वाह जदवंस।
इणि संसार हुँता अनंत, हुँ बीहां हरि हंस ॥ १७ ॥
देव हिमै कीजै दया, वड़ा धणी रिणि बाढ़ि।
औ संसार कोहर आवसि, कोहर हुँता काढ़ि ॥ १८ ॥
भमतौ राखे भूधरा, जगजीवन घण जाण।
धणी तुनां हुइसै धरम, तारै तो तुडिताण ॥ १९ ॥
तारिस तौं मिळसै तुना, तूं तारिस तौ तारि।
भगतवछळ दाखै भगत, वारै तौ जम वारि ॥ २० ॥
कितराई दोरा करै, दियै घणा नां दोस।
भूत तुहारा भूधरा, साहिब राखै सीस ॥ २१ ॥
हरि दोरौ सोरौ हुयै, लाछि तणा कर लाजि।
तुं सिगळा मा त्रीकमा, नरहर जीव निवाजि ॥ २२ ॥
अरज करां छां आपनां, घणनामी निरघोख।
प्राणी प्राणी ना प्रभु, मुकंद समापौ मोख ॥ २३ ॥
जर तुहारी जांणीयौ, हुयै दईता हार।
कैरै कहियै केसवा, तुं लागै करतार ॥ २४ ॥

भिले ठगारा भूधरा, साध गरीव सुधार।
मतिहीणा मुंठा मिनिखि, जुठा देव जुहार ॥ २५ ॥
सिवि थारौ करिसै सुजस, पिणिसै अरिजन पाथ।
तोव तोव तुनां त्रिगुण, निमो निमो स्रवनाथ ॥ २६ ॥
निमो निमो नाराइणा, भगवंत निमो विभूति।
तुझ तणी वसदेव तण, कुण जाणै करतूति ॥ २७ ॥
सिवि कि जाणै सांकड़ी, उरलौ छै अणपार।
बंभ कि जाणै वापड़ी, परमेसर रौ पार ॥ २८ ॥
इंद न जाणै ओछड़ी, समद न जाणै सुद्धि।
लिखिमी ही लाभै नही, वहनामी री वुद्धि ॥ २९ ॥
निगमि वखाण न जाणीयौ, वहनामी मा वाप।
महाराज करजो मया, अलख वड़ा छौ आप ॥ ३० ॥

॥ अथ झंपाताली ॥

अलख बड़ा छौ आप स्रव बाप थे अेकला।
अधिकी गरढ़ा घणी, तना तौवह अला।
निगुण निराकार, निरभेद तु नांमडा।
कीया सहि काम, वे काम तै कामड़ा।
एक एको जिए कोजि अइयौ अलखं।
लीया अवतार किमि करि असी च्यारि लख।
सरग रा धिणी सिवि संकर माछर समौ।
आपना आप मारण करै आतिमौ।
विसन अण पार सहि आप आपणि वरै।
कान्हईयौ आप सां आप कीळा करै।
घणी थोड़ो तुं हीज निमो भांजण घडण।
करण अंतह करण पांच तत उपाअण।
मांडिऔ ब्रहम जद महा तत मांडिओं।
भूतरा जीक ना भूत सहि मांडियौ।

प्रभू तु अकिरिया कं नांकरता पुरिषि ।
सही अण सही वासिष्ट तणें वडौ सिखि ।
नमो निरगुण सगुण नारीयण निभै नर ।
वीर सुहिद्रा तणा रुक्मणी तणा वर ।
रूप अणरूप बैकंठ तणा राईया ।
भामणा लीया भगतां तणा भाईया ।
धणी थारी पहची बात थारी घणी ।
त्रोड़ि नाखं असुर भीर भगतां तणी ।
अनत दावै विना वाळि नां आहणी ।
पूत्र भगतां तणी भगत रै प्राहणी ।
जिनिखि राज माई भलौ जिणियौ जगत ।
भगत पति ताहरै हुये सुसरौ भगत ।
नारीयण तण आदेश हो भरहरा ।
भगत रै ऊपरा हींज रै भूधरा ।
हेत भगतां सरिसि भगत देखै हंसै ।
खरौ करि खेद काइ भगत हुता खसै ।

भगत सां आवि वातां करै महाभड़;
अकल रहियौ सदा सही रहियौ अघड़ ।
घणी रामति करै आवि भगतां घरै,
कमल लोचन कृपा पीर ऊपरि करै ।
खरा थारा चलण पयाला मेक षट,
प्रभू पूरण व्रह्म सरग माथौ प्रगट ।
किसिन दीपायण इणि भांति कीरति कही,
सहस कर तुहारै चंद लोचन सही ।
सपत दधि कूख नै दिसै थारा स्रमण,
नाडि नवसै नदै तुंहीज तारण तरण ।
विराजै भलो घर मांहि बैठो बिसन,
कोहिक जिण भेटिसै पाउ धारा किसन ।

आतिमा राम घट मांहि दीसै इसो,
जिकै हां गति हुयै तिकै दरिसण जिसो ।
इनौइति मांहि परमेस परमेस अंस,
हीयै हीयै वसै हीयाली तणौ हंस ।
झाझडा तणौं उरि झाझ नामो झिखै,
वडौ जंण निरखिसै दुलंभ दरिसण विखै ।
सेव थारी दुलंभ वरण नारद सरिसि,
एक त्रिपुरारि सुर जेठ स्रेवै अविसि ।
सदा मद स्रेवसै तना आवइ सकति,
भाग हुइसै जिकां जुडिसै भगति ।
भागइ विरी करौ कनां इंदरो भलो,
टळि गयौ परौ जमराउ वाळौ टलौ ।
वखत सवरी तणौ वखत गजरौ वळै,
वहत ध्रम जागियौ परौ पातिग बळे ।
अनंत रै नाम सां भगत तरिया अनंत,
सरगि साचा गिया सदामौ वडौ संत ।
तै हिज तै ताहरां ताहरा तारिया;
माहवा चकर सो ःदईत सहि मारिया ।
थूळ ऊथापिया साध नै थापिया;
इंदरा राज इंदि सरीखां आपिया ।
जडंग नीचा गमै ऊधरै भगत जण;
सामी पीरौ कहै निमो अशरण शरण ।
अइ अवरण वरण निमो निर दोष अज;
धिणी सिगळां तणौ प्रभु धख पंख धज ।
नाथ अनाथ निराळंब तु नारीयण;
सदा सिवि तूं हीज तुं भगत कीधो सघण ।
चक्रधर निमो चक्रभुज तुंहीज चिदानंद;
विमळ ब्रह्म ग्यान स्रव ज्ञान तुं गोपि व्रिंदि ॥

परा सिगळां परापर ब्रह्म पारब्रम,
काहि नांउ पाया तैं हीज अकरम करम।
दोस कांइ परमेसर इतौ जीवां दियैं,
लाछि वर तुंहीज तुं खांचि पातिग ळियै।
माहरौ आतिमो महा सूरिखि मयरा,
तुंहारै वातिडै तुहीज जाणै त्रिगुण।
दईव रौ दईवं तु सबळ दाणव दळैं;
तंनां दीठौ समौ तुरत पातिगि टळैं।
केई फेरा पियै तुंहिज इमिरित कुआै;
हेक दइतां तणै साल तूं हिज हुआै।
घणौ बळ तुझ मांह कहां कासुं घणौ;
तूं हीज दशरथ तण दईत दईतां तणौ।
दईव दईतां सरिसि धरिणि हेठा दियैं;
लाछि वर दईत रौ मांस झडपे लियैं।
समदरै ऊपरा पानि बड़रै सूअै;
जोरावर दईत सांभळौ रिमियौ जुअै।
खळिकियौ रगत मध कीट हुँता खिसैं;
वाह जी वाह ब्रह्मा तणै उरि वसैं।
पति रै भूझना निमो तो बह परा;
गोन्विद पराकम पहिचि कितरी गरा।
मुकंद मधकीट नां मारि समपै मुगिति,
बड़ा दातार कुरा लहै थारी विगिति।
जेठ सुर जेठ रौ सौच करिवा जुआै,
हेक दिनि बड़ौ दातार हासौ हुआै।
नरिंदि चौथौ प्रभु नारसींघ नाहरू,
विळे परमेस वेदां तणौ वाहरू।
ब्रहमि पीधा निहीं वेद चत्र वाळिया,
अधिकि चारण तणा वचन अजूआळिया।

काछिबा निमो बहरूप थारा किसन,
वाढ़िया राह सहिदेव जीता विसन।
मोहणी रूप हुइ दईत मन मोहिया,
समद मथियो सही प्रमेसर सोहिया।
वाह हो वाह वाराह थारी वडिमि,
कोई हरिणख सरिस वड़ौ जुध कीयौ किमि।
दीह कितराइ लड़ियौ निमौ देवता,
सवळ हरिणख जिसा किसँ भव स्रेवता।
भगत रा सांमियै असुर कद रा भगत,
राकसां न मारत घणौ तुनां रगत।
जवन दल सिरि सिरिणि खेत रिमियो जठे,
अधिकी तीरथ हुआ अविलि पगिपति उठै।
प्रभु कुण जाणिसै साचरी पारसी,
निमौ थंभि नीसरे गाजियौ नारसी।
निमौ नरसींघ नरसींघ थारी निजरि,
वुड वुसै दईत नां वाक फाडै वजरि।
भलौ हौ भलौ पहिलाद थारी भगति,
सांमि तुं सांहसै श्रीयाधूजै सकति।
भलौ हौ प्रभु हरिणाख नां भीड़िया,
कीया आपह जिसा नरगराकीड़ीया।
नाभ रै रिषभ नां घणौ भुजि नारीयण,
मिनिखि जोमण टळै अनेनुहु अमरण।
पिथि अवतार अवतार दत परमरा,
धरा राधिणी हरि ऊपायण धरमरा।
वाह अवतार कासिपि तणा वामणा,
भगत थारा लियै सदामिदि भामणा।
धिणी थारा लिया भामणा फरस घर,
कोई खत्रीआं तणां सीसि धिखीयो कहर।

संघारे सहस बाहु तणा दैत सहि,
मौज थारी निमो दुजा ना दीध महि।
भगत थारा जिके तिकां दरसण भयौ,
जमदगन तणा जगदीस तुं ना जयौ।
विभाड़ी रेणका वड़ौ कीधौं विघन,
जमदगिनि तणौ परमेस मांडै जिगिन।
सपूत्रां छात कुल छात तुं वाच सुध,
जनिमिऔ राम दसरथ घरे करण युध।
जनिमिआ भरथ लखमण कुंअर जाइया,
अहे परमेस दशरथ घरे आइया।
रामचंद अजोध्या मांहि राघव रमै,
निमिणि ब्रह्मा करै आवि नारद नमै।
कहो किणि भाँति रा धरम दसरथ किया,
हमै भगतां तणा घणौ ठरिया हिया।
ताडिका तणा जोनी संगट टालीया,
पहिलड़ै पवाड़ै लिगन ना पालिया।
गई अहिल्या सरगि कीर साथे गियौ,
धनख भांजौ धिणी लाछि पिरिणे लीयौ।
लिऔ वनवास हव दईत मारे लिऔ,
दुसटीआं तणी बभीषण नां दीऔ।
पगांरी रेण सां ऊधरै पाहणा,
प्रभू भीलां तणी सीम मा प्राहणा।
ज्यांनखी निमो लखमण तरगस जड़ै,
चक्रधर सही चित्रकोट ऊपरि चड़ै।
व्याधि दानव पड़ै वन मांही विसन,
किताई रिखां रै घरे रहीयौ किसन।
निमो गोदाउरी नदी थारा निमंध,
सांम ने तुहारै कहौ कदरौ समंध।

हरे हरि पेखीयौ वन पावन हुग्रौ,
जवन खर त्रिसररौ कीयौ घर जूजूग्रौ,
हरि तणी सीत तां ग्रावि रामिणि हरी,
फौतरा कंस तणी ग्रकलि तिणि दिन फिरी ॥
धिणी धिखीयो कहर वतप हाथे धरै,
मछिरियौ महमहण ग्राज रामण मरै।
हरि तणै साथि के रीछ वानर हूग्रा,
भगत सहिति रिखि इन्दजीत वाली भूग्रा।
बाँधिग्रौ समंद घर ग्रसुर रौ वोढ़ियौ,
रामचदि ग्रावि राकस घणौ रोढिग्रौ।
पाड़िया दईत सहि खाटियौ प्रवाड़ौ,
सुरां रा धिणी तु सुरां ना सवाड़ौ।
पालटे लंक गढ़ घरे ग्रायौ परम,
कोई इणि ग्रजोध्या तणो धिरियौ करम।
धिणी ब्रह्मा तणो धानंतर वैद धन,
मरै सहि सगर राऊ वरै कपिल मुनि।
बड़ौ ग्रवतार बलिराम वसदेव रौ,
हले खलही वियाईयै ई ज हेवरौ।
कंस उर कांपियौ गयौ घर कंस रौ,
देवकी तणै घरि जनिमीयौ दीकरौ।
कारण भूत नर नाह जायौ किसन,
बड़ां भगतां घरे हालि ग्रायौ विसन।
वधाई हुई भगतां घरे बधाई,
जसोदा जोइ हे समद रौ जमाई।
नंद उपनंद नवनंद ही निरखियौ,
पछै परमेस ना व्रिज मां परखियौ।
श्रीयावर सामलौ हुग्रौ गोकलि छतौ,
मुकुंद नां मारिसां कंसि कीधौ मतौ।

अलख करिवा प्रविति नंदरो आंगणौ,
प्रभूरौ जसोदा वंधायौ पालणौ ।
बड़ौ जस खाटियौ संगठ दाणव वहै,
त्रिणावत त्रोडियो कंस आघी कहै ।
कन्हईयै कन्हईयै कंस कासू कीयौ,
पूतना तणौ सहि रगत मुंहडौ पीयौ ।
ग्वालीया साथि चारे प्रभू गाविड़ै,
मरै दुख माहि दईतां तणै मावड़ै ।
वांसलै बजाड़ै व्रिज मांहि विसन ।
रास कीला रमै करै कीला किसन ।
साप नां नाथि आयौ घरे छोकरा,
दही रौ दाण ले नंद रा दीकरा ।
तै हीज कंस राऊ रा दईत सहि त्रोड़ीया,
छाछि रै काजि छीका घणा छोडिया ।
ज्ञान माता कहै गौलिया गौलिया,
धेन नव लाख रा दूध कंइ ढोलिया ।
वांधिया जसौदा ऊखळे बलि बंधण,
तुहारै बातड़ै म्हेइ लाधे त्रिगुण ।
गरब ब्रह्मा तणौ इन्द्र रौ गालियौ,
चरण लागौ पगे नंद नां बालियौ ।
हेक दिन पलंब तुं आंगली हारियौ,
मुकंद मामौ भलौ मुथुर मां मारियौ ।
व्रिज तणौ देस तजियौ नमो वीठळा,
भिले दुआरामती महल भुजिया भला ।
मह महमहण निमोगोपै सकल माणीयां,
रुखमणी परणिया आठ पटराणीयां ।
कैरवां ऊपरा कोप कीधो कहर,
पांडवां तणौ बेली हुओ प्रमेसर ।

निमो हो निमौ तै घणा कीधा निगुण,
पंचाली सरिस तें पूरिया पंगरण।
पराकंम निमो पद वंन वाळा पिता,
अंनरज पोतरौ अधिक जाया इता।
थुळ थुळां घरे पाप प्राखड थुऔ,
अंतरजामी विळै ऊडीसै बुध हुऔ।
अधिक अभमान तोफान उठाड़िया,
जगत्र जीयौ परौ ज्या.........................।
अवाड़ां तणौ लेखौ किसौ प्रमेसर,
नरिंदि घोडै सेतिलै निभै नर।
काळींगे ऊपरै करै काइमि कटक,
राकसां हुंति रहमाण लीजै रटक।
बिलंव के ही करौ हेमैं परमेसवर,
पालट परौ उपराध वाळौ पहर।
अथरवण वेद रौ करौ ऊपर अलख,
खसौ असराण सां ख्याल जोयै खलक।
मुगलां तणौ करि आभरण मोहणां,
पलक हेक हुऔ मेघां घरे प्राहुणा।
त्रिधारौ खड़ग बांधा परौ त्रीकमा,
आव हो आव घोडै चडौ आलमा।
बड़ा पतिसाह करि किलंग सा वेढ़ड़ी,
महमहण हमै पिरिखीजिजै मेघड़ी।
आजि रै बांधियौ कडी तरगस अभिगि,
प्रिथी रै धिणी ससमाथ चडियौ पविगि।
पांच कोडै मिळै सात कोड़ै प्रघळ,
वार नव कोडि मिळिया कटक महाबल।
साडि दस हुसेनी सहस मिळिया सही,
तेर कोड़े हुआ तुरत हणामंत तही।

बापड़े कोडि हेक पीर घोड़ै चड़े,
वीर वह मीर के किताई वडवडै ।
पछिम पतिसाह खडिसै कटक पाधरो,
खेचरां भूचरां तरणौ मेळो खरो ।
खेतपाळां तरणौ साथ साथै खिलै,
हरि तरणौ कटक काळींग ऊपरि हिलै ।
भुलौ है भुलौ भगवांन थारा भगत,
बभीषरण जिसा बळिराम सरिखा बहत ।
मिळे दळ मोकळो कोड़ि अपछर मिळै,
भूत भगवान सां भूत साचा भिळै ।
निमो नरनाह निकळंक चड़ियौ नरिंदि,
साथि सातइ सरग साथि सातइ समंद ।
सहस कर कोड़ि सिव कोड़ि इंहि सामठा,
आज सहि किलंग रै ऊपरा ऊलटा
हेक हरिचंद जिसा कोड़ि हरिचंद हुआ,
दोटि सां असुर परमेसि दीन्हा दूआ ।
मुहमंदा अली मुंसा मिलै मोकळा,
डाकिरणै प्रामिसै मांस वाळा डळा ।
धूं धड़ै आज ब्रम कीच पिरिग धापसै,
अधिकि सुख बांभरणा साधुआं आपसै ।
पांडवां सरिसि परमेसवर पूछिसै,
मांन गंमान तोफान नां मूंछिसै ।
महा सेतान हुई सै परी माजनै,
सुख कीऔ धेन रै मेघ रै साभनै ।
दईत रै राज मां परै वरताहि दुख,
सील नै साच सत धरम रै हुयै सुख ।
अहो दारगव किलंग अलख आया अही,
सुरज्या कही सो बात जारगे सही ।

आक नींवा तणो आख अध केरड़ा,
विरिणि नीली हुइ धानरा ढेरड़ा ।
साहिवै तणै सत आठ सहिनांणीयां,
फळी वह भांति अहि वेलि फुलाणियां ।
चंदमा तणौ सहि मेहणां चालिआं,
मेघ रिपि तणै घरि प्रमेसर माल्हिओ ।
प्राहुणौ हुओ साधां घरे पिताई,
कालरां मांहि ऊगा कमळ किताई ।
हाथिणी सांढि री दूध पालट हुओ,
कहै ससि लोक ओ समंद इमिरित कूओ ।
थले हीरा हुआ थले मोती थिया,
लाछिवर तणौ हव नांम मरदां लिया ।
वांभणा तणै घरि नूर वरतै वहत,
जिसै कलंगनां आज चडिया भगत ।
आज उजेणमां उभै दळ आहुड़ै,
खरा भड़ रायरा खेग आया खड़ै ।
राण रहमाण सुरतांणं पुरिपां रतन,
किलंग रै ऊपरा चालि आयौ किसन ।
हरिखि हुइ जोगणी ताम नारद हसै,
कांइमै त्रिधारी खडग कडियां कसै ।
वाजिया धनख सुर संख वह वाजिया,
धरिणि पुड़ धूजिया गयण पुड गाजिया ।
धणी रै हुकम सां वहत मादल धुवै,
हूआ वरघू सवद देव दाणव हुवे ।
सालले सीधूओ राग सरणाईयां,
भलांई आज भारथ करी भाईयां ।
मेह मेहां सरिसि आवि जूटा मौहरि,
बाण वाणा सरिसि वोटिया बहादरि ।

घणौ करि जोर असराण जूटा घणौ,
तो वहो त्रिधारो खडग निकलंक तणौ।
डहिकिया डमरू दांत दांते डसै,
खाग खागां सरिसि खान खानां खसैं।
बाथ बाथां पड़ै बाण बाणा बणण,
मिलिकि मिलिकां मिळै असरां मरण।
वाजिया भला रिणि खेत मां वीरवर,
गाजिया रामचंद किलंग करता गमर।
झाल सां बालिया किलंगना झाटिया,
काल रै कालि कालींगना काटिया।
काइमा देव साधां सरिसि काहला,
वसुह मा चालिया रगत रा वाहला।
अघळि रिणि खेत मा जवन पाथा पड़ै,
दईत सहि धरिण रै ऊपरा दड़दड़ै।
मरडकै कलायै हाडा आडा मुडै,
गिलै भ्रम कीच सहि कोड कोडै गुड़ै।
धरिणि रै ऊपरा धडा रा धूबका,
धिणी कुण झालिसै हे मै थारा धका।
धिणी जीवां तिणै धीक सांधी बीया,
हला सां ताणीया हींसु एही बिया।
आलमा निमो इलि भार ऊतारिया,
मारका दइत सहि किलंग रा मारिया।
पहाड़ां हेठि दीन्हा परा पापिया,
इन्दरा राज वलिराउ नां आपिया।
थूल ऊथापिया साध तै थापिया,
किलंग रा सेन तरूआरि सां कापिया।
खली रै वासतै खाड सखरी खणी,
धोख रिखां कन्है आवि बैठा धणी।

वेद च्यारइ अनै ब्रह्म वाखाणीयों,
जडाधर सरीखें प्रमेसर जाणीयो॥
पेख पारबती अनै पदमावती,
अनंत रै ऊपरा उतारो आरती।
अहिल्या गाईया गीत उतावला,
प्रभुराग रीवां तणै धर पावला।
जमा गोरजा घणी साराहियो,
अलख ना भलांई भला आराहिया,
पीरि रासै धिणी पाटि बैठा परम,
धरिणि नीली हुई घणी वधियो धरम।

॥ कविति ॥

वधे धरम सत वधे, साच संतोप सवाई,
जती सती जोगियां, भजन अब तुठो भाई।
भजन नमो भगवान, साध ब्रह्मा सिवि संकर,
समरइ तीनइ सकति अलख आदेस अपंपर।
आदेश करै तुनां अमर नाग करै आदेस नर,
पीरीयो दास कासु परणै चतर नमो तु चक्रधर।
इति श्री पातिग पहार संपूर्ण समाप्तं ॥ श्री ॥

डिंगल गीत

॥ गीत अठताळो ॥

लालस पीरदांन रो कहियौ

कायम आवसैं एक कळह करिसैं, धरिण नीलौ रूप धरिसैं।
मचीणां रौ धणी मरिसैं, चीणि नां चरिसैं।
सही पातिग विना सरिसैं, भूत भूंडौ डंड भरिसैं।
तुरत बांभण गाइ तरिसैं, मेघडी वरिसैं ॥ १ ॥

ओड़िसैं कालिंग टल्ला, हिमैं हुइसैं हळ्हला।
महमहण एकल मल्ला, सात्र वांसला।
आविसैं रहमांण अल्ला, ढळिकिसैं अणपार ढला।
प्रमेसर बांधिसैं पला, भूधरा भला ॥ २ ॥

घातिसैं तोफांन घांणी, पीलिसैं काढिसैं पांणी।
आखियौ सारंग प्रांणी, सूरिज्या रांणी।
अगैं कांइ रीछडी आंणी, भगत वछळ वात भांणी।
जादिवैं री अकलि जांणी, मेघडी मांणी ॥ ३ ॥

मूंस ईसा अली मूंगळ, सेख साथैं मीर सबळ।
पीरजादा पंडित प्रघळ, आदिमा उजळ।
दईव करिसैं एरसा दळ, विडंग सेत इनेक विमळ।
चढैं आलम पृथ्वी चळ चळ, किलंग रो कमळ।
ग्यांन साथैं भगति गाजी, वडी वाउल पछैं वाजी।
भूधरा करि दैंत भाजी, रांक सहि राजी।
तूंहिज रोटी दीयैं ताजी, बहत राखैं अमां बाजी।
पीर आगिम कहै आजी, साधुआं साजी ॥

लाछिवर हुव लाख लसकर, घोड़िलां रौ करी घूमर ।
खिणीं नीली करीजै धर, पोखिया पळ्चर ।
फवै फौजां चींध फरहर, साहिबा सिणगारसी धर ।
पणै पीरौ निमो नरहर, सांमि तूं सधर ॥ ५ ॥

॥ गीत लालस पीरदांन कहै ॥

सत धरंम तणौ कजि आव वड़ा छत्त, ग्यांन रही गतिवाळौ ग्रांमि ।
गिर भाखर वाळा गोसांई, सेतलै चडि प्रिथिमींरा सांमि ॥ १ ॥
करिहो कोप हिमैं करणाकर, वांभण दोरा अतळबळ ।
कळ्स थपावि धरमरा केसव, प्रिथमी रै ऊपरि प्रघळ ॥ २ ॥
न्याउ करण नां आव वड़ा नर, गरढेरा दईतां नां गोडि ।
घेन निवाजि हिमैं कांधो धर, छोगाळा व ळ वंवण छोडि ॥ ३ ॥
राजेसरां प्रथमी रा राजा, नरहर गुर लिखमी रा नाह ।
आव उरौ कांइ ढील करै अति, पीर कहै मोटा पतिसाह ॥ ४ ॥

॥ लिखतूं लालस पीरदांन ॥

॥ गीत लालस पीरदांन रौ कह्यौ ॥

राघव देखि··· ····राजा, भरत सत्रघण लक्षण भ्राजा ।
राज करसैं रांम राजा रांमचंद राजौ ।
प्रंमेसर बांधिसै पाजा, लोपसै दधि तणीं लाजा ।
साधुआं रा दीह साजा, वजाडौ वाजा ॥ १ ॥
तुरत ही गुरु दोख टाळण, प्रभु चडियौ जगंन पाळण ।
जयौ दांण(व) वंस जाळण, विदेही वाळण ।
गरब फरसै तणौ गाळण, आपरौ सुसरौ उलाळण ।
त्रक आयौ वेध चाळण, असुरां उदाळण ॥ २ ॥

वनवासी विसन विणियौ, जिकै श्रै संसार जणियौ ।
गोहि श्रगिलै जंनमि गिणियौ, भूधरौ भणियौ ।
हेक दांणव व्याधि हणियौ, खरां त्रिसरां मूळ खणियौ ।
लाछि वर सिर सूप लुणियौ, सात्रवे सुणियौ ॥ ३ ॥
सवळि दांणवि हरी सीता, मुरह भुबणां तणीं माता ।
जीव एक जटाइ जीत्या, प्रभू रा प्रीता ।
वरसि के वंन मांहि वीता, ग्यांन गोविंद रूप गीता ।
राकसां रां नेस रीता, श्रातम श्रजीता ॥ ४ ॥
परंम पद सुग्रीव पाया, कीध कटके वळि काया ।
लंकारै कांगरै लाया, हणमंत हलाया ।
गोविंदै रांमण गुड़ाया, जीपियां दसरथ जाया ॥
अयोध्या में धणी श्राया, ब्रह्मा वधाया ॥५॥
ळाछवर रौ नांम लीजै, कोई उत्तम कांम कीजै ।
दुरबळां नै श्रन्न दीजै, भूधरौ भीजै ॥
..........कमण धीजै, बेल नूं हवै..........जै ।
पीरदास प्रणांम कीजै, रामचन्द्र री जै ॥६॥

गीत ॥लालस पीरदांन रो कह्यौ॥

धर रे धर ध्यांन धणी धरणीधर, श्रति श्रवतिरयौ फिरियौ श्रंस ।
परहरि रे परहरि रे प्राखंड, हरि हरि कहि रे हरि रा हंस ॥१॥
किंहिक भजन करि किंहिक दया करि, किंहिक धरम करि हुश्रै कल्यांण ।
किंहिक सरम करि जीव नरम करि, इतौ थूळ कांइ हुश्रै श्रजांण ॥२॥
राजा रांम भजन सांराजी, भजियां इज देखिस भगवांन ।
श्राठंइ पहर धणी उळावै, कान्हईयो कान्हइयो कान्ह ॥३॥
गोकळ मांहि खेलियो गोविंद, श्राप सरीखा किया श्रहीर ।
कहतौ रहे तिकै नां कवियंण, परमेसर परमेसर पीर ॥४॥

|| गीत साणोर ||

लालस पीरदांन रो कहियौ ||

पहलाद संभरियौ आयो जगपति, चत्रभुज निमो भगत री चाड ।
बहनामी रै दाढ तणौ बळ, हरिणख तणौ जांणिसै हाड ||१||

पड़ियो असुर ऊपरा पडिअौ, कोपिअै ओपिअौ निमो कँठीर ।
झाझै त्रिसळै दैत झरिड़ियौ, वडियौ मांस भरथ रै वीर ||२||

हरिणाकस निरदळियौ हाथै, गिळियौ गुद्र नमो व्रंम ग्यांन ।
लिखमी धूजि निमे पाइ लागी, भलै भलै दरसण भगवांन ||३||

वामण देव भयांणक विणयो, निमो निमो नरसिंघ नरेस ।
सुप्रसंन हुए जगतगुर सांमी, पीरियो दास कहै परमेस ||४||

|| गीत ||

लालस पीरदांन श्री परमेसरजी नूं कहौ

वाराह नर ना..........., व्रजि राजिया पराक्रम वाह ।
दात्रिड़िआळ वडौ तूं डारण, तूं एकलमल भूत अथाह ||१||

ले गयौ दैत रसातळि लखमी, ग्यौ म्रतलोक तणौ सहि ग्रांम ।
रेण तणौ तूं धिणीं राजियो, रेण उरी लै आतम रांग ||२||

जळ मांही पैठौ जग जीवन, असुरां तणी भांजिवा आस ।
ताहरौ जांणियौ हुऔ त्रीकमा, प्रिथी मडांगीं कोड़ पचास ||३||

दीह किता लड़ियौ दांणव सूं, हो ! हरिणख रा मारणहार ।
पीरियौ कहै नमो चक्रपांणी, कितरा युद्ध कीधा करतार ||४||

गीत लालस पीरदांन रो कहियौ।

साहिब नां जोड़ि घरा गुण सखरा, सारिव रीझै..........साचि ।
बांभण देव तणौ तूं वारट, वाम..........तणौ जस वाचि ॥१॥
सूरति खूब वणी कासिपिसुत, वेद चियारइ वांणी वाह ।
इसी भांति सां आज आतिमौ, आवै बळि रै द्वारि अलाह ॥२॥
बळि राजा छळियो व़हनांमी, निबिळै सै दोइ त्रिख नाखि ।
एक कीयै तै इंदरै ऊपर, एक सुकर री काढ़ी आंखि ॥३॥
अति रीझाइ अम्हारा आतमि, गाइ रे गाइ वांमरण रा गीत ।
वप वैराट सरीखो वांमरण, पीरिया करि वांमरण सां प्रीत ॥४॥

गीत पीरदांन रो कह्यौ।

बहनामी आप निमो सिधि बाबा, सुकर नहीं चत्रभुत्र ससमाथ ॥
भगति दिवारि भरथरा भाई, नांम लिवारि हिमैं जगनाथ ॥१॥
जगपति कुंरण थारी गति जांरणै, अकलि तुहारी एक अनेक ।
जुध बाहिरौ जगत सहि जीतौ, तूं राखै भगतां री टेक ॥२॥
दळिदि कवीर तणौ तै दहियौ वसियौ भगत सरग रै बीच ।
चौर कांइ भगता रै चडियो, खाधौ कांइ करमां रो खीच ॥३॥
सतजुग मां मिळियौ सिगळां नां, कळिजुग मांहि सुधारण काज ।
गोविद तूं तूठौ गिनका नां, मीरां नांमि लियो महाराज ॥४॥
समपरण सरव उड़ीसा सांमी, वाहर हो वाहर ब्रिजराज ।
बुध अवतार पीरियौ बारट, सजिया सो कीजै सिरताज ॥५॥

॥ गीत पीरदांन रो कहियो ॥

करी कोप करण करंण, कट मोटी करी,
काांही कां थापि उथापि काँही ।
मेघड़ी पिरणि वसदेव रा माहवा,
माहवा आ.........................ही ॥ १ ॥
चंचळै चड़ावै..............................चडौ,
टोघड़ै निवाजण..................टापौ ।
त्रिधारी खडग नां बाधि कासिपि तणा,
किलंग रै ऊपरा हिमैं कोपी ॥ २ ॥
दांन मांगे प्रभु अत्रीरी दीकरी, वाज सिणगारिजै सेत वाराह ।
पुकारै साध पींपळ हुओ पुकारै, पुकारां सांभळी वड़ा पतिसाह ॥ ३ ॥
रछिमिसां आव तूं ल्याव पांडव प्रभू, महमहण ताहरा असंख मेळा ।
बांधिया कांइ वळिराउ रां वेलियां, भूधरा करी पहिळाद भेळा ॥ ४ ॥
ग्यांन गरुआ धिणी गोविंद गोसांई, दांणवां ऊपरा दिऔ नी डांण ।
क्रिपा करिजै किसंन पीर चाकर कहै, आलमा काइमा तुहारी आंण ॥५॥

॥ गीत पीरदांन रो कहियो ॥

मिळै कोडि तेत्रीस सुर भीमरै मांडहौ,
अधिकि आणंद कनां अधकि औछाह ।
जांनि उग्रसेन बळिभद्र जिसा जांनिया,
विद्रवां तणौ घर हुऔ वीमाह ॥ १ ॥
साझिया दैत साळै दिआ सेहरा,
वाजिया गाजिया केई बाजा ।
बांधिया मौड ब्रहमा पला बांधिया,
रुखमणी पिरिणिया रांम राजा ॥ २ ॥

निरखियौ भीम सखे भड़े नारीयण, देवता देवंतां तणी डाडी।
किसन नर रइंगि री वाह सूरति छि करतार लाडौ ॥३॥
इंदि अहल्यें उधारणा ऊपरा, गौरिज्या लूण उधारें।
छात्र त्रिहलोक रैं छोड़िया छेहड़ा, श्रीकमौ पिरिणियो संत तारें ॥४॥
हाटडें हाटड़ें लोक सहि हरिखिया, गौखडें गौखडें गीत गाया।
सांमि पीरे तणी वधावौ हे सखी, लाछिनां किसन पिरणीजि लाया ॥५॥

१२—गीत पीरदांन रो कहियो

दरसण देवण रै भाव रो

ओळिखिओ परी तनां म्हें अविगत, गोकळ ग्रांम तणी तू ग्वाळ।
माहवा नांम तुहारौ मीठौ, दीठौ दीठौ दीनदयाळ ॥१॥
अरिजण रा टळिया उपराधा, खळ खाधा पावक-भ्रखण।
वहनांमी मत राखौ वाधा, लाधा म्हे थारा लखण ॥२॥
छता हुआ किमि रहिसो छिपिया, घट मांही अजुआळ घणी।
कोमळ पग कांना मां कुंडळ, तोवह दरसण तूझ तणौ ॥३॥
चरण तुहारा दीठा चत्रभुज, मुख दीठौ दीठौ कमळ।
प्रीतंवर दीठौ परमेसर, दईतां ऊपर करो दळ ॥४॥
ईसाणंद बारट आराधे, भल गुण थारा व्यास भणें।
वालमीक तूंनां अति वाल्हौ, पीरदास अरदास पणें ॥ ५ ॥

१३—गीत सपंखरौ

अवतार स्तुति

भले भीमरा जमाई निमो बाई सुहिद्रां रा भाई,
पुत्रेई कमाई पाई ध्रूवक्राई धीक।
राजाई कहीजै किनां पातसाही थारी रांम,
ठगाई तुम्हारी निमो ठकराई ठीक ॥१॥

दईवांण सुरतांण दीवांण तूं ही ज देवा,
मांडिया मंडांण केई समंद मथांण ।
कुरबांण रहिमांण कुरांण पुरांण कहै,
आपरौ कल्यांण दांण उग्रसेन आंण ॥२॥

राखसां पथळ रांम महल आकास रेण,
मचीणां रा सल सांमी मांडि युध मल ।
लिखमी टहल करै अहल न आवै लिगी,
पंचाळी अलज पळ भिळे थारौ भल ॥३॥

गोपाळ व्रिजरा बाळ गोवाळ गोवाळ गति ।
छोगाळ छत्राळ साई प्रतिपाळ साच ।
जादवां उजाळ नमो बिरुदां विसाळ जूना,
डाँग‌थारी काळ माथै ससिपाळ डाच ॥४॥

जोईयौ जवने बिंदे गुडिदां गुडिदे जूटैं,
कंस रे नरंदे कही हलां तणी हीब ।
चीतारै दुंडिदै वंदे चरणारविंदे चाहै,
गोविंदे भगते गींदै तारीया गरीब ॥५॥

निरकार निरद्वार दईतां संघार निमो,
आदेस अपार पार अवतार अंस ।
साधुआं सुधार सांमी आविस्यैं निजारसाह,
काइमौ नंदकुआर, कंस मार कंस ॥ ६ ॥

हैग्रीव वाराह हंस ग्राहनां अथाह गति,
पातिसाहां पातिसाह अणथाह पीर ।
दईतां री हीयै दाह आविस्यै अलाह देखौ ।
निलाह सलाह निमो नर नाह नीर ॥ ७ ॥

साधुआं सुधारी सही पापिया विसारै परा,
संभारै चीतारै तिकां तारै सिरताज ।

जवनां उधारै मारै जुध मांन हारै जद,
पसारै समंद माथै परवारै पाज ॥ ८ ॥

सांमिरै रुखम साळा काळा काळा जिके कांन्ह,
संघारै सिघाळा भाई कंसवाळा सेख ।
दीसता दीनदयाळा चिरिताळा निमो देव,
अकरूर आळा भिळै तमासा अलेख ॥ ९ ॥

नारसिंघ थारो नांम फरसरांम निवाजै,
देखतां दुवारिका धांम सदांमै रै दांम ।
सत्य रांम रुघराम लिखमी वांमे सहेत,
गोविंदा तुहारौ भलै बैंकुंठ रौ ग्रांम ॥१०॥

तूं हीज अकाज काज भगतांरी लाज तनाँ ।
विसारियौ केम परौ विजराज वाज ।
आविस्यै अनंत आज गजराज उधारिवा,
निध माथै गाज करै निपाइयौ नाज ॥११॥

सास सासि विखै थारौ जस वास करां सांमी,
तनांई न जांणै जास तिकां थारी तास ।
ग्रभवास टाळै परा जमवाळा प्रास ग्यांन,
आपरा पगां री राखै पीरदास आस ॥ १२ ॥

१४—गीत पीरदांन रो कहियो

हैग्रीव, वाराह, धरणीधर नरसिहा री स्तुति

अविधूत अलेख अलाह अपंपर, सिगळाई देव तुहारा संत ।
अत्री तणै घर रा अजुआळा, अनसोईया वाळा अनंत ॥ १ ॥

कांइ हो कृपा करीस कद केसव, कूड़ म दाखवि; साच कहि ।
प्राणीया हिवै भगति करिय, तणा गुण दाखि रहि ॥ २ ॥

संमति करंतौ रखै समासै, कमंति करतो ढील करि ।
कवीयण माथै किहक क्रिपा करि, हैग्रीवा वाराह हरि ॥ ३ ॥

ध्रम सूरति वाळा धरणीधर, नरहर तूझ तणौ कोइ नांम।
अनंत भगति जिणिसां उधरिया, पीरिओइ तिणिनाँ करै प्रणाम। ४।

१५—गीत पीरदांन लालस रो कहियौ

साहिबा रै सहि थारी सारी, वडा धिणी जंम प्रासै वारी।
खोटी वात संसारौइ खारौ, आतिमा मुंना पारि उतारौ ॥ १ ॥

विखै संसार तणौ रस वाल्हौ, केसवराइ हुओ हूँ काल्हौ।
परमेसर पातिगनाँ पालौ, हरि रै गोढै झगडै हालौ ॥ २ ॥

केहिक होवैं तौ सुकिरिति करिया, जरणा रैं वातां सहि जरिया।
डाकण छै ममता थी डरिया, त्रीकम सां कितराई तरिया ॥ ३ ॥

श्रीकम अरज करां छां तूनां, मोटी अकलि समापे मूनां।
जादवराव निमो जर जूनां, वैकंठ मां राखे वे खूनां ॥ ४ ॥

अविगत नाथ परम पद आपे, साधां नां साज.................. ।
असरां एक इनेक उथापै, थर करि लंक वभीखण थापै ॥ ५ ।

जपतौ रहि दसरथ री जायौ, थांभौ फाडि भगत नां थायौ।
लाछि तणै वरि चलणै लायौ, पीरीओ ई परमेसर पायौ ॥ ६ ॥

१६—गीत पीरदांन लालस रो कहियौ

असुरां नै संघारण रो

मधकीटक मौत वडा जुध मांडण, गांजण असुर उधारण गोह।
रांमण नै महिरांमण रेसण, दईतां तणै मरण री डोह ॥१॥

खंड डंडूळ सरीखा खाफर, वळै अगासुर कंस वहि।
कितरा दैत कूटिया केसव, कवियण दाखै साच कहि ॥ २ ॥
बळिराजा बांधण बहनांमी, प्रांघण वेढि किलंग सा पीर ॥
समरासुर संगठासुर साझण, भारथ करण भगत री भीर ॥ ३ ॥
बांणासुर सरिखां हटिया बळ, नरकासुर गिळिया न्निरकार।
किमि करि पीर करै करणा कर, कळ्हां री लेखौ करतार ॥ ४ ॥

१७—गीत सांचोर पीरदांन रो कह्यौ

थाहर देवरा रो

....अंतरजांमी, वहनांमी दे आव...........वाज ।
गोविंद मेर सरग रा आंमी, भांमी हों भांमी सुभराज ॥ १ ॥
राजि रा पाउ पताळ तणी रुख, मसतक सरगां जिसौ मंडाण ।
राजरा छूमण दिसै रुघराजा, मन ससिहर क्रूखां महिरांण ॥ २ ॥
असट कमळ विचि वास आपरौ, वळिहारी हो वळिभद्र वाप ।
आपरौ भगत करैं छै अरजां, आपरौ रूप दिखाळौ आप ॥ ३ ॥
राजिरौ पार न जांणां राघव, आपरैं नांम तणौ आधार ।
थांहरां वीच पीरनां थाहर, दोजै हौ दीजै दातार ॥ ४ ॥

१८—गीत पीरदांन रो कह्यो

अवगत री स्तुति

महाराज तणौ कहिजै कंस मांमो, नरकासुर वेटौ निज नेह ।
सुसरौ रीछ रुखमयौ साळो, अविगत तणै गनाइति एह ॥ १ ॥
सुहिद्रां विहिन वाप तौ वसदे, कोसिलि मात निमो करतार ।
भांमिणि सीत द्रोपदी भगतिणि, जांमिणि कुण हो साह निजार ॥२॥
रुखमणो राजि तणौ पटरांणी, दईतां हुंता सदा दुमेळ ।
प्रम परधांन वात नां ब्रह्मां, मुंहमद................मेळ ॥ ३ ॥
किण रो मीत कुण रो केसव, वहनांमी सिगळां रौ बाप ।
पीरियौ करि थारौ परमेसर, अविगत नाथ वडेरा आप ॥ ४ ॥

१९—गीत पीरदांन लालस रो कहियौ

मेह वरसावण रो

हुयै परा हरीयाळ हरीआळ करि मनोहर,
जायै पातिगि परा धरम जागै ।
जीव नव खंडरा रिजकि मागै जुओ,
मेह करि गावडं घास मागै ॥ १ ॥

वंस अजुआळ प्रतिपाळ थे वीठला,
रांमचंद राजि सुर भुवण राईआ ।
पुरांणा डोकरा अरज सांभळि परी,
भाँजिहौ भांजि भैंचक भाईया ॥ २ ॥
केई सरवर भरी नयै सुभर करी,
क्रिपा करि क्रिपा करि किसन कलियांण ।
मेह री ढील राखौ हिमैं महमहण,
आप नां सरव भगतां तणी आंण ॥ ३ ॥
करी जगि छेळ हव छतौ हू केसवा,
नवै घातौ नदै निरमळा नीर ।
धणी सुर जेठ....................ण....भ्रवौ,
प्रमेसर राज नां पयंपे पीर ॥ ४ ॥

२०—गीत पीरदांन लालस रो कहियौ

इग्यारस रै व्रत रै महातम रो

मुर दईत जागियौ भुवणां मांही, देवां रै ऊपनौ डर ।
हर सुर जेठ करै सहि हेला, वहिलौ आवै लाछिवर ॥ १ ॥
देवां री तिण दीह डोकरै, परमेसर सांभळि पुकार ।
निसचरनां किमि करि निरदळियौ, इग्यारसि अईयौ अवतार ॥ २ ॥
एकादसी उधारण आवी, जीवडां ध्रम असमेध जिसौ ।
इग्यारसि करिसै उधिरिसैं, इग्यारसि रो वरत इसौ ॥ ३ ॥
राति नैं दीह भजंन मां रहिजै, दिनि बारिस रै देसै दांन ।
इण जुगरी बेड़ी इग्यारसि, गोविंदा तिके प्रांमिसै ग्यांन ॥ ४ ॥
पख पख मांहि हुवै पुन प्रघळा, पीर पतग रै जोडै पांण ।
सिगळाई परमेसर सरिखा, इगीयारसि थारा अहिनांण ॥ ५ ॥

२१—गीत लालस पीरदांन रो कहियो (श्री गंगसांमजीरो)

किम तरियै भव हव कासूं करणी, निज निसतरणौ थारै नांम ।
धणियां जेम उबारी धरणी, सरणौ तूझ तणौ गंगसांम ॥ १ ॥
संमरै ब्रहम..न, धन मुरधर तणी धर ।
मा...................................माह वडा, चलणी थारी च्रकधर ॥ २ ॥
आलिम साह पारवती ओपै, रुखमणी रांणी पासि रहै ।
ओ गंगसांम विराजै आछौ, देखै जिहांरा दळिद्र दहै ॥ ३ ॥
भूलिज्यो मति कदेई भूधर, जोइ लेखै राखै विजराज ।
तूझ तणौ निसदीह त्रीकमा, मुजरो पीर करै महाराज ॥ ४ ॥

२२—गीत पीरदांन लालस रो कह्यौ

भगवान री स्तुति रो

नारी अहिला सरीर सिला, कीर नां तारियौ थैंही ।
दातार अदला देव, चाव धारी चिति ।
हलाहला आया हालिम, हला स हल्या हुआ ।
महा प्रभु आप मला, भला भला मित ॥ १ ॥
पेहळाद गांन पला, अला अला कहो आप ।
राजिरां भगतां माथै राकसांरी रीस ।
ताहरां नां दियै टला, विशननु होमबला भुजाडंड वीस ।
अगासुरां बुगासुर कंसासुरा उधेड़िया ॥ २ ॥
निसाचरा प्रसासुरा अचासुरां नांखि ।
ब्रत्रासुरा वाणांसुरा दीया वाहि ।
आपरा भगता दिसी आँखि ॥ ३ ॥
उळाविजे अविणास अम्ह आस एह आछै ।
नितो निति रहाविजै नेम ।
वेद व्यास वालमीक सुखदेव दास वाला ।
प्रभु रे चितिमां वालौ पीरदास प्रेम ॥ ४ ॥

२३—गीत जाति अठतालौ

लालस पीरदांन रौ कहियौ, भगतिदांन देवण रो
जगपति नान्हीयौ वसदेवि जायौ, वड़े भगते थाळ वायौ ।
हरिख हरिख हुलरायौ, ग्वाळीये गायौ ॥
प्रघळ दैतै दुख पायौ, निसचरां नां सुख नायौ ।
कंस मन मी हुयो कायौ, आलमी आयो ॥ १ ॥
मेघ इंद री मद मुड़ियौ, चक्रधर रै विरिद चड़ीयौ ।
घणु सखरो घाट घड़ीयौ, विलोणा वड़ीयौ ॥
जवनं सां नित नित युड़ीयौ, पलंव ऐकणि धीकि पड़ीयौ ।
लाख दैतां हूँत लड़ीयौ, कंसरौ कड़ीयौ ॥ २ ॥
हालियौ अकरूर हड़वड़, विमळ धोरी हुँति वड़चड़ ।
कंस ऊपरि गयौ कांन्हड़, नंद रौ नांन्हड़ ॥
भगतवछळ भूधरो भड़, जो औ काढ़ै कंस री जड़ ।
पीटिया सहि दईत पड़ पड़, झोरीया झड़ झड़ ॥ ३ ॥
मात पित सां हुआ मेळां, कूवड़ी सां कीध कीळा ।
लाछिवर री निरखि लीला, लाछिवर लीला ॥
व्रक्क नाथण हार चीळा, किसंन रमीया रास कीळा ।
निमो हो नीळ नीळा, पंगरण पीळा ॥ ४ ॥
मारि तारो तुरत मासी, पिता री काटेयी प्रासी ।
वांमणौ द्वारका वासीं, ... ॥
किसन चड़िनै गयां कासी, असुर का..........णासी ।
खरी दीजै भगति खासी, दांन कवि दासी ॥ ५ ॥

२४—गीत सांणोर, लालस पीरदांन रौ कहियो

श्री नरसिंघजी री स्तुति रो

पहिळाद संमरियौ आयौ जगति, चत्रभुज निमो भगतरी चाड।
वहनांमी रै दाढ़ तणौ वळ, हरिणख तणौ जांणिसै हाड॥ १॥
पड़ियो असुर ऊपरा पड़िऔ, कोपिऔ ओपिऔ निमो कंठीर।
झाझै त्रिसळै दैत झरिड़ियो, वड़ियौ मांस भरथ रै वीर॥ २॥
हरिणाकस निरदळियो हाथे, गिलियौ गुद्र नमो ब्रंम-ध्यान।
लिखमीं धूजि निमे पाय लागी, भिळे भिळे दरसण भगवांन॥ ३॥
वामणदेव भयांणक विणयो, निमो नमो नरसिंघ नरेस।
सुप्रसंन हुए जगत गुर सांमी, पीरियो दास कहै परमेस॥ ४॥

२५—गीत

लालस पीरदांनजी रो कहियो॥

गंगा सिनान रो

अौ करां वंदगी तुम्हारी वाप,
आपौ आप ध्यान करां, जांणीऔ अजपा जाप।
न जांणीओ जाप, अस्वरां उथाप आप महापाप परा मेटो॥ १॥
समंद तरीजो केम जीवनां संताप, राकसां नां अै रीठौ पइठौ।
भीतरा प्रभु दीठौजी, घट मां दीठौ दीठौ दीठौ देव॥ २॥
माहरे तूं मात ताति, ताहरौ भुजंन मीठौ।
संवाहो नहीं पीरदास सांमळैरी छेव॥ ३॥
गंगरो सिनांन करै, औणरो निवास ग्रहै।
प्रागरै सिनांन कियां पातग पहार प्रांण नीड वड़ा छौ॥ ४॥

—पीरदांन लालस

२६—गीत

रुखमणी परण लाया तिण भाव रो

गुरड़ि चड़ी नी ग्यांन, वळिभद्र रथ चढीया वहसि ।
जादव सगळा जांन, परणेवा आयौ ॥ १ ॥
हाथे मिळिया हाथ, लवंगे मांडहो छाईयौ ।
सहि देवां री साथ, लेवा आयौ लाछि नै ॥ २ ॥
केसव राज कुंआर, रांणी अई औ रूखमणी ।
अलख तणी अवतार, सखरी लाडो सांवळो ॥ ३ ॥
गोविंद आयौ ग्रेह, भुजीअौ आंगण भीम री ।
नर हर वाळौ नेह, रांणी जांणै रुखमणी ॥ ४ ॥
नांन्हड़ थारै नारि, सोळ्ह सहस नै एक सै ।
पीर न जाणै पार, तूझ तणी वसदेवतण ॥ ५ ॥

२७—गीत (प्रणाम)

देवां दातारां झूझारां वेदां च्यारां अवतारां दसां,
धारा हिरा बारांगिरा रूप धांम ।
सतीयां जतीयां सारां सूरां-पूरां रूखेरां,
पीरां पेकंबरां सिधां साधकां प्रणांम ॥ १ ॥

२८—गीत लालस पीरदांनजी रो कहियो

स्तुति

निमौ ईस्वरी, अनंत नांम हींगळाज निरंजणी,
वड़ा देव मेकदंत संभु नाथ वछ।
अकल संमापौ आई देवी राजि कीजैं दया,
कथणी अनंत करा कहां मछ कछ।
विरोळिओ जळाकार, वाळिआ आपरा वेद,
साभियो फूक सासाँ..................................।

२९—चौमासौ

गुहिरौ गुहिरौ गरजोयौ, रेणा करिस्यै रूप।
वसधा मांहि वरसिस्यैं, औ आसाढ़ अनूप॥ १॥
चंद्राउळि री चूड़िलौ, राधाजी रो रास।
सहीयां नां प्यारौ सही, माहवा श्रांवण मास॥ २॥
भूधर वरसै भाद्रवौ, सेहिरे वीज सिळाउ।
जेथी तेथी जादवौ, कांन्हड़ करै कळाउ॥ ३॥
सांभळिजौ वसुदेव सुत, आसु मास अरज्ज।
कर जोड़ै पीरौ कहै, गोविंद करौ गरज्ज॥ ४॥

३०—कवित्त

आलमजी रा

हरि पैड़ी हरिद्वारि, नीर सोरंम रै वाह्यां।
मकै मदीनै मांहि, प्राग वड़ दरसंण पायां॥
गया कोड़ि गोमती, कोड़ि जिग तीरथ कीजै।
कोड़ि वार दस कोड़ि, दांन गांवतरी दीजै॥
इंद्र दमण उड़ीसै वीच अति, गोविंद गोवंद गाईयां।
हो पीर लाय इतरो हुयै, आलम चोरै आईयां॥ १॥

रहमांणी राघवौ पारि पैहिलै पहुचाया।
क्रिपा करंतै कांन्ह अतघ संसार तराया॥
आज भलै वातड़ै, आज्ञ रविवारू ऊगौ।
आज हुऔ आणंद पाप नाठो पंन पूगौ॥
सेतलै तणा दरसण सही, पीर कवेसरि पाइया।
धन घड़ी आज मुहरत धन, आलंम चोरे आइया॥ २॥

भिले भिले भेपगां, सरब ग्रह हुआ सवाड़ा।
भिले भिले भगवंत, प्रघळ ताहरां प्रवाड़ा॥
असर कमळ विचि एक, मांहि वैठो महाराजा।
दिलि भीतरि देवता, रहै रांमइयो राजा॥
प्रभ तणौ नांम रे पीरिया, जिकुंस सखरी जांणिया।
कलांण तणां चरणां कनै, आलम चोरै आंणिया॥ ३॥

प्रथिमि उड़िसै धाह, थाह खरसांणि उरेरो ।
दोडै नी दोड़ि रे, घोड़ वड़गड़े घणेरो ।
आवै रथ आंहचौ, हाथ बाहिरा क..................हल ।
तूं धानंतर धणी, भला थारो दाखे भल ।
कवि तणौ पुत्र साजो करे, कवि थारै रै काम छै ।
हरिदास ईए यारे हुओ, आलम आवै आंहचै ॥ ४ ॥

सिधि सागर सारखा, वांण गंगा बहतेरा ।
पंच तीरथी प्रिघळा, सेतवंदह सह तेरा ।
कासी सरखा किता, जंमण सरसती सिगळा जळ ।
परब तोया अण पार, चित्रकोट उदयाचळ ।
बदरी केदार सरीखा वहत, खांरालंभ राखण खरा ।
उआरणौ करै तीरथ इता, आलंम चीरै ऊपरा ॥ ५ ॥

———

परिशिष्ट १

३१ परमेसर पुरांण के छूटे हुए पद्य

पद्य सं० ९१ के वाद

साघां मांही सोहियी, आसागिरि तूं आज।
वड हथ सोढा वैरिसी, जोई वारठ जसराज—९२

पद्य सं० १०१ की १ लाईन के वाद

पुरी दमोदर पीर नां, त्रीकम पारि उतारि—१०४
वीरो सचियो वीर वर, तमण हरै नां तारि।
सुंदरि जेठी सारिखें, मलिसे जंमे मंझारि—१०५

पद्य सं० १०६ के वाद

भोळी गति रां भाईयां, अलख पधारे आज।
मिलका धर वे सांमीयां, सेसां नां सुभराज—११०
गोसांई सांई गहन, तखति वैसि तुड़िवांण।
काइमि राजा न्याउ करि, राजि वहा रहमांण—१११

पद्य सं० १०९ के वाद

गति मां आपो गोविंदो, दईतां री घरि दुक्ख।
वांभण पीपळ रे वहत, सुरहि घेनरी सुख—११४

पद्य सं० ११३ के वाद

कितरी.............................या, कहि मुंनां करतार।
नर हर हुं स.............................नहीं, अइयो पिथ अवतार—११९
तैं पहिळादो तारियो, असंख वार अपरंम।
प्रथळा दइत पछाड़िया, कान्हड़ तणा करंम—१२०

नंद महर रौ नांन्हीयें, गोविंदि चारी गाइ।
निसचर वाळौ नेस मां, लखमण दीन्ही लाइ—१२१
वैरीयां नां हळ वाहिया, बळिभद्र बुध विरदाळ।
के फेरां कीधौ कपट, ज्यांन धरम जंमजाळ—१२२

द्य सं० ११७ के बाद

कुण थारी कीरति करै, निहचळ थारौ नांम।
तूझ तणै बारट तिणै, रावां सांभळि रांम—१२८
गति मां राखै गोविंदा, जयो अजंपा जाप।
पगे लगाड़ौ पीरनां, बारट छै मां बाप—१२६

(सा० रि० सो० कलकत्ते के सं० १७१२ वि० गुटके से)

———

परिशिष्ट २

गुण छभा प्रब

गाहा

सरसति सुंमति संमपि सुर सामिणि,
गौरि तरणी[1] हंसागांमिणि ।
कोमळ काया कंआरी कामिणि,
ब्रहमाणी दे वरदाइणि ॥ १ ॥
ब्रहमाणी देवी वरदाता,
मौ वर देअ[2] सरसती माता ।
तै वरदाया देव विरवीयाता,
तो वरणवियै देवि विधाता ॥ २ ॥

वेद वदन तोरो वघवाणी, वघवाणी दे अविरल वाणी ।
रखण लाज पंडवा राणी, पणां सकत हूं सारंगपाणी ॥ ३ ॥
पग पूजिया परम पंचाळी, पंचाळी पति लज्याळी ।
कीध अकथां नथण काळी, ताइ मति सारि वदां वंनमाळी ॥४॥

छंद मोतीदांम

तौ वदां वंनमाळी आदि विसंन, पंचाळीय पूजि किसंन प्रसंन ।
'चाळी पूजे पाउ परंम, धरम तणै धरि आदि धरंम ।
आगै एक बार कहै जुग एम, जुजठिळ ज्याग किया बळि जेम ।
रायां सेंह रूप जुजठिळ राव, कियौ द्रिगविज कथन कहाव ।
अंनोइनि रांणी राउ इनेक, सुर नर आइ मिळै सबमेक ।
आया सहि सैण दुजोवण आव, रायां बळ रखण पोखण राव ।
दजोवण सनधि दुसासन, कंणै घु रखण कीप करन ।

मूल प्रति में इस प्रकार है—
१—नरनी, २—वदेअ,

सारिखा डाहिली ग्रै ससिपाळ, भेळा दोइ लाख मिळे भूपाळ।
भगतां हेत छूवै भगवांन, करैं झिकाळ³ चत्रभुज कांन।
गायै मुगधा मुखि मगळ गीत, गंमागमि ग्रंधप ग्यांन संगीत।
बड़ा रिख वेद वदै तिण वार, हुतासण होमि इंमृति ग्रहार।
सहुँ इळ साजन सैण समाज, विलोक विलोकति राज विराज।
महामिण मांणिक राजमहल, नवला चित्त चिरति नवल।
इसा मय दांणव ग्राइ उकत्ति, महल विणाया माया मत्रि।
जळ थळ जाम थळै जळ जेम, उपाया माया मंदरि एम।
महा कीय देखित भुलीय माहि, चक्रवति भूलि गयो सब चाहि।
दुजोवण भूलिवणी सब देखि, विचखण भूलो लेख विसेखि।
निरखे आंगणि ग्राछा नीर, धरे पग⁴ पाछा ताम ग्रधीर।
वलेत भीत भुरजि विचाळ, कटकेय पाथर वीच कपाळ।
ग्रायो दुरजोधन देखि ग्रसीध, कौतुहळ हास पंचाळीय कीध।
दुन्है कर ताळीय ताळी दीध, सुखी सुजिपति हसत सवेग्र।
हसी पंचाळीय भोळी होइ, कितु कळि होइण हारय कोइ।
टहटह भीम खिले परि तांह, ऊपनौ वंस विरोध ग्रथाह।
मंडांणौ मूळि कळेस मडांण, रीसाणो दूत दजेवण राण।
वेसासौ हासो एह विणास,.................................।
खरौ लोय लागौ वैण खटक, हुए दिल खाटो जीव हटक।
हुए त्रिष वैण हुए बह हांणि, जाळोवळ सांप लगो ग्रंगि जांणि।
चड़े मुखि क्रोध किया चखचोळ, वहादर दूखांणी जळत्रोळ।
भुठठे डसण काठा भीड़ि, सजोधन सोच सको जस भीड़ि।
रायां चीय पंकति वैठौ राउ, निहाळैय धोमक उर न्याउ।
निहाळै ग्राडी दीठ निभंत, वळि भरि कावळियौ वळिवंत।
रवि तळि....समै ध्रमराव, पूजे परषोतम उत्तेम पाव।
कथूरी कुंकम केळ कपूर, पूजे परषोत्तम पाउ पऊर।
पखाळै जोह नमी जळ पाउ, चरचे चंदण कुंकम चाउ।

३—झिचाळ, ४—धरेप।

पहप परमळ श्रीफळ पांन, भगत जगत वंदै भगवांन।
जुजठलि ज्याग तणै फळ जीत, प्रवति हुयौ पग पूजि प्रवीत।
समै तिण काळ चड़ै ससिपाळ, वड़ो सुर बोले बोल विसाळ।
जुजठिळ भीम अनै अरिजंन, करौ पग पूज[5] अहार किसंन।
राज्ञ संज्याग विषै ध्रमराज, अहीरां पूज संपेखी आज।
वदै विस वैण इसा विस लोउ, सुणै सुजि रांणा रांउ सकोइ।
सुणै सुजि वैठा सांमि सरीर, वचन-वचन हसै वळि वीर।
अरिजंन ताम लगे तन आगि, मरोड़ै मूँछ न बोलै मागि।
कहै निज नाथ सुणै सह कोइ, लहेसी लेखा पाखै लोइ।
वदै व्रिप वांणी वारोवारि, सिरजण हार गिणै सुविचार।
गणतां सौ लग संख्या गाळि, पणै पैहलौ हरि बोल स पाळि।
इसै ओधांण थकै सु विमेक, अरिजन गाळि दई तब एक।
अरजण गाळि सुणे आवाज, रिदै बह रीस चढ़ै व्रिजराज।
करे करि चक्कर कोप कराळ, कियौ ससिपाळ तणौ तद काळ।
हयो पैपांति मिसो मिस हाथ, निमो वनमाळी काळोनाथ।
निमो नरपति सहसर नाम, पथारीय सारी कीध प्रणाम।
समै तिण रांणा राव सकोइ, वदै गुण नाथ तंणा विस लोइ।
भलौ दिन आज अमीणो भाग, जोयै परतकि पुरिख जियाग।
सहुं मिळ सीख करै सप्रसंन, वळे पग पूजे आदि विसंन।
विसनोई सीख करी तिण वार, वळे धुज भूखण कंस विडार।
वळयो दुरजोधन लेह विरट्ट, मिटे घट हुंता मांण मरट्ट।
कहै दरजोधन एम कथन, सुकनीय सिनध[6]......दूसासन।
करौ बुधवत इसी बुधि कोइ, पंचाळीय लोपां लाज पळोई।
इसी अम्ह एक कियौ अपवाद, खरौखर डंकै वैण विखाद।
वळै जद वैर पंचाळीय वैण, निसा सुख नींद करां तद नैण।
सुकनीय जपै राउ सरिस, महा मतिवंत करां मिजलिस।
करां कळ कावळ कूड़ कपट्ट, वुलाव पाँडव देशा पट्ट।

5—पू, ६—...धा

जुजठळ हारि विसा इम जोइ, विहाणे दूत रमै विस लोइ।
जुजठिळ भोळो ठाकुर जांणि, न जांणे दूत विद्या निरवांणि।
रतन हर निज ता पद राज, विहांणे लूटि लिया गज वाज।
पंचाळीय तांगिलियां बुधपांणि, विमालिनि घात सघात विहांणि।
रंमे छळ छेतरि सां ध्रमराव, इसौ चिहुँये मिळ कीध उपाव।
चियारै चौपड़ि खेलण चाव, रची मनि वात जुजठिळ राव।
कहै दुरजोधन एह कथन्न, विनै विध पंडव पेम वचन्न।
अभै भड़ चोपड़ि खेलण आव, रंजे म ताम जुजठिळ राव।
जुजठिळ कीध कुमति जिकोई, होवे सुजि हुवणहारी होई।
विधाता लेख लिख्या चत्रवैण, तिसौ जळजोग मिळै दिन तेण।
लिख्या क्रमि लेख तिसी वुध लेय, वइठा चोपडि खेलण वेय।
रव तळि कैरव पांडव राव, भेळा मिळ दूत रंमै दोइ भाव।
जुजठळि पासि नहीं अरिजन, सहदेव[7] न भीम न कोइ सजन।
सुकनी माथै पारिख साखि, रव तळि राउ विहुँ मिळ राखि।
कहै दुरजोधन एम कथन, सुणौ ध्रम राजा ध्रम सुतन।
जुजठिळ हारै खेल जिकोई, वहै वनवास वदै विसलोई।
वरस दवादस श्रीवनवास, अकंचन छोड़ि खवास अंवास।
जुजठळि नांहि न भाखै जीह, दुरमति प्रापति थी तिण दीह।
हू बाळ मंडै बे होड-होडि, किया मनरथ मनोरथ कोडि।
दुजोवण कूड़ रमै रस दाखि, सूकनी[8] कूड़ी पूरै साख।
जुजठिळ जीपै खेल जिकोई, तवै दुरजोधन जीता तोई।
सुकनी वाद बदै वह सद, जुजठिळ हारविया जन पद।
हुई जुजठिळां माथै हेळ, खिलै दुरजोधन जीता खेल।
जुजठिळ राउ दजोवण जीत, किया पंचाळीय चीर पुनीत।
पथारी आयौ राव पळोयि, जुजठलि बैठा हेठौ जोइ।
गाढौ दरजोधन काढै गात, छत्रपति छांह वैराजा छात्र।
दुज़ोवण रूप हुयौ तै दीह, जंपै[9] जिम आवै नावै जीह।

७—सदेव, ८—सूपनी, ९—मिमै।

जुजठळि राउ राज थळ जोइ, धणी धणा खोइ खड़ा मुख धोइ।
हरूं नर तन जनपद हारि, बैठा क्यां काह हिमें[९] दरबारि।
वजो निज पास भुजो वनवास, अकंचन डूंगर जास अवास।
वहौ पथि लागै वारो बार, बइठा कासुं बधे बार।
हासै रिम हाथो ताळी होइ, पंचाळी माथै मीट पळोइ।
कहै दुरजोधन एम कथन, दुरग दुबाहा दूसासन।
जुजठळि राउ तणै घरि जाउ, अठै पंचाळी पाकड़ि आउ।
हसी पँचालीय पूजवि हास, कुभाखति पूछाँ वैण विकास।
दुसासन ऊठै ताम दुरति, करे तसलीम करेवा क्रित।
मलपै राज महलां माहि, चले मुख चख पंचाळी चाहि।
दुसासण मुख पंचाळी देखि, विळकुळि उठी ताम विसेख।
निरमळ लेकरि गंगा नीर, वधै मुख वाणि वदती वीर।
दुसासण गाळि हियै चढ़ि दिद्ध, करगहि केस अक्रषण किद्ध।
पंचाळीय पेटि विरट पड़ेह, चंद्राइण पांणि विवांण चड़ेह।
भई भैभीत भयौ चित भ्रम, किसी दिसीया कुण पाप करम।
मोरौ उपराध किसो इळ माहि, दइव तणै इम आयौ दाइ।
पंचाळी पाकड़ि[१०] बांह पगार, वळै उणिहीज पगे उणि वार।
पंचाळीय केह करै बिलपात, लगावत जात दुसासन लात।
सतीतन-नाभ बैसे सास, विसासौ पंडव पंच विणास।
पंचाळी वात विचारि परोगि, अरजन भीम नहीं आरोगि।
अरिजन साजौ नांही आज, इसीपरि मौ सिर होत अवाज।
वदै पंचाळीय दीन वचन, दुरातम देवर दुसासन।
विना उपराध विरोध मि वोर, किसुं करया तै वैण कँठोर।
दुसासन वेण विषे वल देय, लियै जिमदूत चल्यो जम लेय।
ढुळै दोइ रांणीव....आंसुय धार, बेवटै डोरोय मझ बाजारि।
सदा सुभवंतीय सीत-सुरख, महा पनवंतीय पालर मुख।
मुखे गळवंती आदि महेस, पुळी परिहथि बजार प्रवेस।

१०—पापाकड़ि।

बाजारीय लोक हजार विच्यारि, हुवा हेक कौगति देखणहार ।
वदै नर एम सिको विसलोय, हरीहर ग्रैसीय केण न होय ।
पंचाळीय लार लगै ग्रणपार, करै नर नारीय हाहाकार ।
ग्रखत्र ग्रध्रम वड़ौ उतपात, वडीयणिचंत ग्रछाजति वात ।
चंद्राणिण पाकड़ीयां परि चोर, जुलमीय लेह चल्यो करि जोर ।
पंचाळी माथै हाथ पसारि, दुसासन ल्यायो राज दुयारि ।
पथारीय ग्रायो वांह पळोइ, हैरान पथारी सोरीय होइ ।
मोटा मंडळीक पथारीय माहि, चवै मुख ग्राहि इसीपरि चाहि ।
जुजठिळ भीम ग्रनै ग्ररिजन, निहाळै नीचा ढाळि नैयन ।
पितामहि भीषम ध्रोण पळौइ, खंढाळै खोणि खत्रीवट खोइ ।
करे मुख भखो ताम करन,.................................।
करे हाकार भला करतार,.................................।
सती दुसासन संगठ साहि, मरोड़ै मूंछ पथारीय मांहि ।
सजोधन राउ कहै दिन साइ, पधारीय पंचाळी पंन पाइ ।
घण सुरही ताय सोचि घड़ीय, चंद्राणिण खोळै ग्राइ चडीय ।
तुहारै खोळै मेलै ताळ, चड़ेसी भीम गदा चंडाळ ।
दुजोवण देवर खवरदार, गमै तिम वोल न वोल गिमार ।
भणै जग तात वडेरो भ्रात; मंगणै भौजाई जिम मात ।
मोरै नह पंच भ्रतारीय माइ, सती गंधारीय जगि सराइ ।
पंचाळीय ग्राज इसैपर जाइ, पुजा वह प्रांमिस जीभ पसाइ ।
विमासण छोड़ि दुसासण वीर, चंद्राणिण काढ़ि कहां तंम चीर ।
वडा रजपूत किसी हद वाणि, पंचाळीय पौढि इसै ग्रविसाण ।
वसत विसुति वेगा कर वाहि, मोरै फुरमाणि पथारीय माहि ।
हुयौ दुरजोधन एम हुकम, हजूरिज हैंता एह स हम ।
वदै दूसासण वारौवार, पंचाळीय पलव छांड़ि पियार ।
सिर घट घूंघट घट सरम, हमै पट ग्रोढ़त जोत महंम ।
ग्ररिजन भीम तणै ग्रासारि, न छूटिस नारिस ग्रंखि निवारि ।
जुजठिळ सार लिगार म जोइ, हिमै करतार न ग्राडो होइ ।

कहां करतार सकूड़ म कथि, हिमै इण ताळ चड़ी इण हथि ।
जंपै दुसासन होइ जिकोइ, सभालेय उपरि सांपर सोइ ।
अंमीरां ऊपरि छै धुरि आज, रवि तळि एक अछै व्रिजराज ।
अछै व्रिजराज भगत अधीस, विसव आधार विसवा वीस[11] ।
उवारै तुझ इसौ कुण आज, रामां थळ छोड़ि गियौ व्रिजराज ।
दुनी सोहि देखै धोळेइ दीह, वीहावै अवल एह अवीह ।
पंचाळीय आकुळ व्याकुळ पांणि, रूठौ दुसमण दजोअण रांण ।
गमे पति बैठा धौण गंगेव, देखै सिर ऊपर सूरिज देव ।
हुवंतां देखि सती परि होल, हुयौ हथणापुर हालकहोल ।
पंचाळीय देखे एहा पार, विखो[12] आइ वणे इण वार ।
विणठो दाउ हमैं विसलोइ, हरी कांइ प्रांण मुगति न होइ ।
अमुंकीय पारथ भीम पचार, हथौहथि दीध जिन्हां हथिआर ।
कहै पंचाळीय काह करेस, दमोदर मंदर ओखामंडळ देस ।
हुरमति इजति रखणहार, विसंभर वेग लड़ो इण वार ।
अविसर हाजिर नांहीय आज, रुखांवर वेग लड़ी विजराज ।
करै कुण सार पखै करतार, विसन अधार जिसी तो वार ।
पंचाळीय जपै जीवन प्रांण, अहो प्रम तुझ तणा अविसांण ।
निसुंग रखे लज लोपै नाथ, सुता सिर ऊभां सामि सनाथ ।
रावां त्रिभुवन छपनां राउ, अम्हीणै ऊपरि सांपरि आउ ।
पथारीय देखै देखै पथ, हुई हव कथ-अकथां हथ ।
धरै कहि केम पंचाळीय धीर, विलगीय चीर दुजोवण वीर ।
पंचाळी खालीय पंडव पाथ, अनाथ हुई हुं नाथ अनाथ ।
सुतां सरणागति सांम सरीर, विसंभर वाहर धारय वीर ।
अम्हां अवळा बळ तोरौ आज, रहै निज लाज सोतो विजराज ।
निरबळ नारि पुकारै नाथ, सदुखा साद सुणे ससमाथ ।
समै तिण सूतौ सेझ संमारि, मुकंद मुरारि समंद मझारि ।
गोमां उपकंठ समदां गांम, सुतौ श्रीय सुंदरि मिंदरि सांमि ।

११—ईस, १२—विमो ।

हुई वह लछीय हारोहार, विमाणसण गोपि करै तिण वार।
निकुं गुरड़ासंण वैठा नाथ, गुलाराण रैवंन रथ समाथ।
पयादोइ नंगै पाउ परम, वहै अति आतुर चातुर क्रम।
विमाळ न कीध न ताळ विमाळ, चत्रभुज धायो छूटी चाल।
खगेसुर छेतरियौ पग खेह, निरंतर धायो एम नरेह।
वदां तांई वेण किती एक वार, आयौ हथिणापुर पंथ अधारि।
कुसमथळी हथणापुर कथि, तर्डकस आठ पोहंनो तेथि।
पीतंबर धारीय चक्कर पांण, सत्रै अटपटीय पाघ सुहांण।
महोरति आंखि तणौ अध माहि, आपांणांय दीध दीदार स आइ।
पंचाळीय दीध दीदार प्रिथम, परै करि धीरज दीध परंम।
दीदार स पंच पंडवा दीध, किणा निज नाथ किणा वह कीध।
दजोवण देखै नांहि दयाळ, छभा विच ऊभा कान्ह छोगाळ।
निकुं दुसासन देखै नाथ, सभै विच ऊभा सांमि समाथ।
वदै दरजोधन एम विसेख, दुसासन काह रह्यो हव देखि।
पंचाळीय पलवि छोड़ि पलीत, देखै पंच पंडव देव दईत।
मोरै मुख आगळि देव मंझारि, निरखै लोक नंगी करि नारि।
निरखै लोग लगै नख चख. महा सहि सूरति सुंदरि सुख।
अजांई तांई मुझ अछेह, न भागोइ नांवक छाती नेह।
वदु ताइ वेण किती एक वार, धरे सोइ चीर सरीरां धार।
नवौ तै माहि वळे नवलंग, रुळै पग लग सपोत सुरंग।
न दीसै चख न मुख न नख, सती मन माहि हुयौ वह सुख।
हुया हरि लज्या रखणहार, किसनइ मंन प्रसंन करार।
दुसासन हाथ पसारै दोई, वळै तै चीर लिया विसलोई।
वळे वप तांईय होइ विभंति, भलै रंग पोति भलेरीय भंति।
चंद्राणिणि नख सिखा लग चीर, सोहै हंज पंख सरीख सरीर।
सोई दुसासन संगठ साह, वहादर खांचि लियौ वळि वाह।
वळै तै माहि पसाइ विसन, वंणे वप अंबर मेघ वरन।
वरी करि कढेइ वारोवार, हथोहथि पूरेय पूरणहार।

निनाणंय सो लग चीर नरेह, लिया दुसासण दाव लहेह ।
अजाँ पंचाळीय गूँघट ओट, करै हरि रखीय कपड़ कोट ।
कहै दुसासण कारण कोइ, अजां ही नंगीय नारि न होइ ।
तंणौ घंणसाम वणै वप तांण, इसौ निज नाथ तणौ अवसांण ।
जंण जंण साजण दूजण जोई, हुयौ दलगीर सगा गुर होई ।
मिजालस मंडीय माहो मांहि, चत्रभुज आयौ औसर चाहि ।
भगतां भीड़ पड़ी तब भीर, सदानो आयो साम सरीर ।
कहै इम राजछभा सह कोई, हरी विण अै कुण कारण होई ।
लोपै कुळ कुण पंचाळीय लाज, रहावण सामरथी विजराज ।
पंचालीय चीर परम्म पसाई, अखूट अतूट हुआ इळ मांहि ।
हुया दुसासन थाकिय हाथ, न थाकौ गैंवीय गोकळनाथ ।
दजोवण दूरि स भूर सदंत, कहै इम भीखम काल कयंत ।
हमै घणियाइ हुईसै हद, सहसबळी वहसै बह सद ।
तिसौ छै पै कर नांखिस तौड़ि, मरघड़ नांखिस हाड़ मरोड़ि ।
दुसासंन दूरि हिमै दुसमंन, पितामहि भीखम ध्रोण प्रसंन ।
भली जरणी कीय पारथ भेम, तवै तारीफ पितामह तेम ।
साचां सूं साचो सामि सुरत्त, विसंभर राखण संत वरत्त ।
सती चौ सत रहै रवि साखि, रहै जिम राखण हारै राखि ।
किसंनाइ जंपै वाप किसन, भली परि राखीय त्रेण भवन ।
किसंन किसंना स्याहित किध, दजोवण मुख न जोवण दिध ।
भगतां भीड़ पड़ी भगवांन, किया नह अंखीय आडा कांन्ह ।
किया नह अंखिय आडा क्रग, जसोदानंदन जीवन जग ।
देवकीय नंदण दीनदयाळ, छभा छळ रखण कान्ह छोगाळ ।
पंचाळीय राखिय लाज परंम, सबांई राखै तेम सरम ।
जंपै हरिदास अजंपाइ जाप, मोरी पति राखिय मां वाप ।

इति श्री छभा प्रव संपूर्णम्—

लिखंत लालस हरिदास । वाचै तिणनै रांम रांम वांचिजो जी ।

। श्री । संमत् १७७''' मिती फागण वदी १० । श्री ।

इनके पिता का नाम तो श्वफलक था और इनकी माता का नाम गोदिनी जब कि वसुदेव के पिता का नाम देवमीढ और माता का नाम मारिषा था। संभव है दोनों निकट संबंधी और एक ही कुल के हों जिस से अक्रूर, कृष्ण के चाचा कहलाये।

अखंड (३५)—अटूट, अविच्छिन्न, पूरा।

अखियात (३०)—अद्भुत।

अगथि (५६)—अगस्त्य।

अगन (५१)—अग्नि।

अगम (३५, ३६)—अगम्य, जहाँ जहाँ पहुंचा न जा सके।

अगलै (५४)—पूर्व के।

अगादि (४६)—पूर्व का।

अगासुर (४, १००)—अघ नाम का एक दैत्य जो कंस की खास मंडली का असुर सेनापति था तथा जिसे कृष्ण ने मारा था। इसे बकासुर और पूतना का छोटा भाई भी बतलाया जाता है।

अगासुरां (१०३)—अघासुर नामक असुर।

अगै (३५)—अगाड़ी, आगे।

अग्रंमु (२८)—अगम; ईश्वर ?

अघ (५०, ७४)—पाप।

अघड (७७)—वह, जिसकी रचना न हुई हो।

अघासुर (५६)—अघ नामक असुर (राक्षस)

अचासुरां (१०२)—एक असुर।

अछती (१६)—गुप्त।

अछतौ (३८)—गुप्त, गायब।

अछेद (४६)—अछेद्य।

अछेप (४, ४६)—अस्पृश्य, स्पर्श रहित।

अजंपा (३४, ३५)—वह जाप जिस के मूलमंत्र हंस का उच्चारण श्वास प्रति श्वास निरन्तर होता रहता हो; अजपा; हंस मंत्र।

अजपा (४५)—उच्चारण न किया जाने वाला तांत्रिक मंत्र।

अजमाल (१६)—अजमाल नाम-धारी।

अजरी (६४)—चंचल, उत्पात करने वाली।

अजरी (४३, ७०)—ब्रह्मा (अज) का।

अजाच (४०)—अयाचक।

अजामेल (७४)—कन्नौज निवासी एक ब्राह्मण जिन्होंने आ-जीवन न तो कोई पुण्य कार्य

किया था और न ईश्वराराधना ही ।
अजायौ (२)— अजातः, अजन्मा ।
अजीत (३५)—वह, जिसे कोई विजय नहीं कर सके; अजयी ।
अजीता (६३)—अजयी ।
अजुआळ (६७)—उज्ज्वल (प्रकाश) (१०२)—उज्ज्वल करिए; वंश को उज्ज्वल करने वाला ।
अजुआळा (६६)—उज्ज्वल करने वाला ।
अजू आळिया (७६)—उज्ज्वल किये ।
अजे (२६)—अभी तक ।
अटल (३७)—दृढ़ ।
अठै (४१)—यहाँ ।
अड़ियौ (२६)—अड़ गया, भिड़ा ।
अडूर (१२, ३७)—जबरदस्त, बलशाली ।
अणंकल (७, ५४)—समर्थ शक्तिशाली वीर ।
अण (अणजीव ?) (४०)—नहीं । (४६)—विना, रहित ।
अणकल (२७)—समर्थ, शक्तिशाली ।
अणघड़ (६१)—अनगढ़ ।
अणजायौ (४५)—अजन्मा ।
अणथाह (६८)—जिसकी कोई सीमा न हो, अपार ।
अणघाह (५५)—अथाह, अपार ।
अणपार (१४, २८, ३५, ५२)—अपार, असीम ।
अणबूझ (६१)—अल्पज्ञ, अज्ञ, अनजान
अणभंग (७)—वह जो कभी नाश न हो
अणमोल (४६)—अमूल्य ।
अणरूप (२७, ३५)—अरूप, विना रूप का ।
अणवर (१३, ६४)—विवाह के अवसर पर दुलहा अथवा दुलहिन के साथ रहने वाला सखा या सखी ।
अणवौ (३१)—'लाना' का प्रेरणार्थक रूप ।
अणसही (७७)—अनुचित ।
अतरी (२१)—ज्ञानी ।
अतळीबळ (६६)—अतुलित, बलशाली
अताग (८)—त्याग रहित अथवा अत्याज्य ।
अति (४२)—अत्यन्त ।
अतीत (३५)—निर्लेप, विषम, पृथक
अत्र (५०)—यहाँ ।
अत्रीरौ (दीकरौ) (६६)—अत्रि ऋषि के पुत्र दत्तात्रेय ऋषि ।
अथरवण (३१)—अथर्ववेद ।
अथाह (३६, ७४, ६८)—अपार, असीम ।
अदल (२७)—न्यायशील ।
अदला (१०३)—(अदलादेव)—न्यायकर्त्ता ।

अद्यास (५०)—उदासीन ।
अध (४५, ८६)—नीचे ।
अधक (५६)—अधिक ।
अधकि (२३)—अधिक ।
अधरम (४०)—अधर्म, पाप ।
अधिका (३८)—अधिक ।
अधिकि (२०)—अधिक ।
अधिकेरा (३८)—विशेष, अधिक ।
अधिकी (२५, ३९, ४७, ७०) अधिक,
अध्रम (४९)—अधर्म ।
अनड़ (३०, ४८, ५१)—पर्वत ।
अनमां (४० —अन्य में ।
अनरज (३०)—अनिरुद्ध, प्रद्युम्न के पुत्र और श्रीकृष्ण के पौत्र ।
अनसोईया (९९)—अत्रि ऋषि की पत्नी अनसूया ।
अनां (४३)—और ।
अनिलि (५०)—अनिल, हवा ।
अनील (३६) (अलील)–लीला रहित; रंग ?
अनु (२६)—१. अन्न, २. अन्य ।
अनूप (३४, ५०, ७४)—अनुपम, अद्भुत ।
अने (४६)—और ।
अनेक (९०)—बहुत ।
अनै (२९, ३७, ३८, ४३, ४४, ४९, ५२, ६४)—और ।
अपं (२५)—आपन, आप, स्वयं ।
अपंपर (२३, ४६, ८८, ९९)—अपरंपार, असीम, महान् ।
अपंपरि (७१)—ईश्वर ।
अपराध (२३)—गुनाह ।
अपरेत (४९)—निर्मोही ।
अपार (२३)—असीम ।
अप्रवीत (६४)—अपवित्र ।
अवखी (१०) —कठिन, दुरूह ।
अवदाळ (१६)—महान उदार । मुसलमानों द्वारा माने जाने वाले महान ईश्वर भक्त जिनकी संख्या तीस मानी जाती है—उसी तात्पर्य से उपमित यह शब्द बना है ।
अवाथ (७८)—विना बाहु ।
अवाहं (२७)—विना भुजा का ।
अभिगि (८४)—अभंग, वीर ।
अभियागत (५)—(सं० अभ्यागत), सम्मुख आया हुआ ।
अभेद (४९)—अभेद्य ।
अभ्यागत (७०)—अतिथि, संन्यासी, फकीर ।
अमर (३८)—देवता ।
अमरण (८०)—अमरत्व ।
अमरां (२०)—देवताओं ।
अमां (८९)—हमारी ।
अमांडै (६६)—हमारे यहाँ ।
अमूल (४९)—निर्मूल, आदि रहित ।

अम्य (१०३)—हमारी।
अम्हां (१९)—हमरे, मेरे।
अम्हांनां (७)—हमको।
अम्हारा (९५)—मेरा, हमारा।
अम्हारै (७)—हमारे।
अयांण (६९, ७०)—अज्ञानी, अल्पज्ञ, अज्ञ।
अयिरल (३४)—धारा-प्रवाह।
अरक (४३, ५२)—सूर्य, अर्क।
अरजाँ (३१)—पुकार प्रार्थनाएँ।
अरण (६१)—(सं० अरण्य), जंगल, संन्यासियों का एक भेद।
अरथ (३५, ३८)—अर्थ।
अरदास (१५, ८७)—प्रार्थना, अर्ज-दाश्त।
अरसु (२९)—ढीला पड़ना या करना देरी लगना।
अरि (३६, ६२)—शत्रु।
अरिजण (५, ३४, ४४, ६२, ६८, ७१, ९७)—अर्जुन।
अरिहंत (४)—वीतराग, जिन।
(३३)—ईश्वर, अरिघ्न, शत्रुविनाशक।
(४६) अर्हत् (भगवान जैन)
अरेल (४९)—नहीं जीता जा सकने वाला। अजित
अलख (२३)—अलक्ष्य, ईश्वर।
अलगा (५२)—दूर।

अळगौ (५२, ७०)—दूर, पृथक।
अलज (९८)—लज्जापहरण।
अला (१०, १०३)—ईश्वर, अल्लाह
अलाह (३, ७, ७४, ९५, ९९)—ईश्वर, परमात्मा, खुदा
अलेख (७, ३४, ३६, ९९)—अलक्ष्य अपार।
अलोक (५०)—१. जो दिखाई न पड़े २. वह स्थान जहाँ को आदमी न हो; ३. ऐसा जी जो मरने के बाद अन्य किसी लोक में न जाय, ४. मनुष्य का अभाव।
अल्ला (८९)—ईश्वर।
अवतार (३६, ४२)—विष्णु का संसा में शरीर धारण करना अथव पुराणानुसार किसी देव विशे का मनुष्य शरीर धारण करना।
अवतरियौ (९३)—अवतार लिया।
अवदाळ (१७)—देखो–'अबदाळ'
अवर (३९)—अपर, अन्य।
अवरण (४९)—वर्ण या रंग रहित।
अवरन (७, २७)—वह जिसका को रंग न हो, अवर्ण।
अवल (६२)—सर्वश्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य अव्वल।
अवलौ (४१)—बांकुरा।

अविगत (३४, ४३, ५३)—वह जिसकी गति (लीला) का पार पाया न जा सके।
अविणासं (२७) – वह जिसका नाश न हो, अविनाशी।
अविणास (४९, ५०, १०३)-अविनाश
अविणासी (२९)—अविनासी।
अविद्या (३५)—अज्ञान, मूर्खता।
अविधूत (५४, ९९)-अवधूत, सन्यासी, मस्त फकीर।
अविसि (७८)—अवश्य।
अविल (३५, ५२)—अखंड।
अविलि (७४, ८०)—धारा प्रवाह।
अष्टंग (४३)—अष्टांग।
असंख (९६)—असंख्य।
असख (असंख) (४७)—असंख्य।
असटंग (३५)—अष्टाङ्ग।
असट-कमल (१०१)—अष्ट कमल। योग के षड्कमल तो हिन्दी में भी मिलते हैं परन्तु राजस्थानी मे आठ है।
असतूल (४९)—स्थूल।
असन (७०)—भोजन करना, भोगना।
असमेध (१०२)—अश्वमेध यज्ञ।
असरण (४०)—जिसका कोई शरण नही।
असरां (१२, ८७, १००)—असुर, राक्षस।
असराण (८४, ८७)—असुर, दैत्य।
असरै (१९)—असुर, राक्षस।
असीळनि (४९)—अशीलता।
असोक (५७)—अशोक वृक्ष।
अहर (५१)-अधर, (नीचे का) होंठ।
अहल (९८)—हिलना, काँपना; जोर पड़ना।
अहारिणि (१९)—आहार करने वाली
अहि (२०, ३६, ३८, ४६, ६०, ७५)—नाग, सर्प।
अहिकार (४२, ४३) – अहंकार।
अहिनांण (१०२)—चिन्ह, निशान।
अहिवेलि (८६) – नागवेल।
अहिला (५५, ६७, १०३)—गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या।
अहिल्या (२, ४४, ८१, ८८)—गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या।
अही (५३)—शेपनाग।
अहीर (९३)—(सं० आभीर), वह जाति जो गाएँ, भैंसे रखती है तथा उनका दूध वेचने का काम करती हैं, ग्वाला।
अहीरिया (६०)—अहीर का तुच्छता-सूचक शब्द।
अहै (३२)—यह; है।
अहो-निस (३)—रातदिन, अहर्निश।

आ

आंगणौ (२९)—आंगन, प्राङ्गन।
आंगळी (८६)—अंगुली।

आंण (५) —आज्ञा, शपथ ।
(३५)—ला
(६४, ६८, १०२)—शपथ, आज्ञा ।
आंणि (३५)—लाकर ।
(३७)—लाओ ।
आंणी (३०)—लाया
आंणे (२६)—लाता है ।
आंणौ (१२, ३१)—लाओ ।
आंसु (२१)—इनसे, इसलिए ।
आंहचै (३०, ५३)—शीघ्रता, त्वरा ।
आईनाथ (१६)—देवी दुर्गा ।
आउध (२६, ३६, ४२)—आयुध, अस्त्र-शस्त्र ।
आकरी (१२)—भयंकर, जबरदस्त ।
आखर (२३, ७४)—अक्षर, वर्ण ।
आखां (१७)—कहे
(३०)—कहता हूँ ।
आखियौ (६८, ७१)—कहा
आखीयौ (३८)—कहा ।
आखै (२५)—कहता है ।
आग्राजै (१६)—गर्जना करती है ।
आघी (१५)—दूर, पृथक ।
(८३)—सामने, आगे ।
आच (६१)—हाथ
आचार (४१)—व्यवहार, चलन ।
आछा (६२, ७१)—अच्छे, श्रेष्ठ ।
आछै (१०३)—(सं० अस्ति) है ।
आछी (२६, १०३)—अच्छा, उत्तम ।
आठइ (३४)—आठ ही ।
आडा (८७ —पडा ।
आण (७४)—शपथ ।
आतिमा (४२, १००)—आत्मा ।
आतिमाराम (७८)—आत्मा ।
आदमां (३१)—आदम ।
आदि सकति (२०)—आद्या शक्ति ।
आधार (४६)—सहारा, आश्रय ।
आनिंहि (४८)—अन्य नहीं ।
आपनां (४८)—आत्मन्, अपना ।
(७५)—आपको ।
आपमां (४७)—आप में ।
आपरा (३६)—आपके ।
(६६)—अपने ।
(१०३)—अपने ।
आपरै (३२)—अपने, निज के ।
आपरी (१०१)—आपका ।
आपह (४४)—अपने ।
आपि (३७)—स्वयं, दीजिए ।
आपिया (७८)—दे दिये ।
आपियौ (५६)—दिया ।
आपै (२, ३२, १००)—अर्पित करता है, देता है ।
आफे (३)—अपने आप, स्वयमेव ।
आभरण (८४)—पालन-पोषण, परवरिश ।
आया (१०३)—आये ।

उ

उआरणा (३६, ६७)—वलैया, न्यौछावर ।
उकति (२३)—उक्ति ।
उकत्ति (३४)—उक्ति ।
उखिणौ (२८) उठाकर ।
उगरै (६२)—उग्रसेन, कंस का पिता ।
उग्रसेन (५, ६६)—कंस का पिता, मथुरा का राजा ।
उचरां (३८)—उच्चारण करें ।
उचार (७१)—उच्चारण, जप ।
उचारे (४५)—उच्चारण किया, उच्चारण करके ।
उछाळौ (१४)—दो, वितरण करो ।
उछाह (६)—उत्सव ।
उजाळ (६८)—उज्ज्वल ।
उझांटै (५८)—उछालते, वाँटते ।
उठाड़िया (८४)—उठाये, उत्पन्न किए
उठै (४१)—वहाँ ।
उडाड़ै (४२)—उडाड़ देता है ।
उण (३९)—उस ।
उणहार (३५)—सूरत ।
उणि (९, ४८)—उस ।
उणिहारि (३२)—समान ।
उतामळौ (५५)—शीघ्रता पूर्वक ।
उतारिसै (१२, ६६)—उतारेगा, मिटा देंगे ।
उतारै (२०)—आरती करता है ।
(३२)—दूर करे ।
उतिमि (३८, ४५)—उत्तम, श्रेष्ठ ।
उत्तिम (२८)—उत्तम, श्रेष्ट ।
उथापि (६६)—उथापन करके, उन्मूलन करके ।
उथापै (१००)—उन्मूलन करता है ।
उदाळण (६२)—उन्मूलन करने को ।
उद्यास (३५, ४६)—उदासीन, विरक्त
उद्यासी (६०)—विरक्त, उदासीन ।
उधरिया (२, ६८, १००)—उद्धार किया, मोक्ष दे दी ।
उधरै (३६)—उद्धार किए, उद्धार करता है ।
उधार (३६)— उद्धार ।
उधारण (१, ५, १००)—उद्धार करने को ।
उधारी (५८)—उद्धार किया ।
उधारै (१८)—उद्धार कर देना ।
(२६)—उद्धार करता है ।
(५६, ६६)—उद्धार किया ।
उधिरिसै (१०२)—उद्धार होगा ।
उवेड़िया (१०३)—विदीर्ण कर डाले, मार डाले ।
उवेड़िसै (१२)—उन्मूलन करेगा, उखाड़ देगा ।
उवेडै (४७)—उवेड़ता है ।
उपजै (४३)—उत्पन्न होते हैं ।
उपना (७४)—उत्पन्न ।
उपराध (३५)—अपराध ।
अपराधा (६७)—अपराध, दोष ।

उपरि (४३)—ऊपर, पर ।
उपाग्रण (७६)—उत्पन्न करने को, उत्पन्न करने वाला ।
उपाड्या (२०, ५२)—उत्पन्न किए ।
उपाईया (५०)—उत्पन्न किए ।
उपाड़ियौ (५८)—ऊपर उठा लिया ।
उपाड़े (३०)—उठा लिया ।
उपाया (१६, २१, ४३, ५०, ५१)—उत्पन्न किये ।
उपायौ (४५)—उत्पन्न किया ।
उवारी (१०३)—रक्षा ।
उभै (८६)—उभय, दोनों ।
उयौ (४४)—वे ।
उर (४३)—हृदय, वक्षस्थल ।
उरळौ (२७, ४७, ७६)—चौड़ा, विस्तृत ।
उरा (११, ४६, ६०)—इस ओर ।
उरि (४३, ७६)—उर में, वक्षस्थल में, हृदय मे ।
उरौ (९२)—यहाँ, समीप,
उलसै (४३)—प्रसन्न होता है, उलसित होता है ।
उलाळण (९२)—उल्लसित करने वाला ।
उळाविजै (१०३)—गाइये । सुमिरण करिये ।
उळावै (९३)—भजन करे, सुमिरण करे ।
उवरै (४८)—वच गया, वच जाता है

उवारण (३३, ६७)—वलैया ।
उवारणा (४४, ४८)-वलैया, न्यौछावर
उसास (३६)—उच्छ्वास ।

ऊ

ऊंआं (५९)—उन ।
ऊंधौ (५७)—औंधा, उलटा ।
ऊआं (७४)—उनकी ।
ऊए (४४)—वे ।
ऊखले (८३)—ऊखल में ।
ऊगा (११)—उत्पन्न हुए ।
ऊग्रसेन (६०)—महा पापाचारी राजा कंस के पिता उग्रसेन ।
ऊधा (६२)—उद्धव ।
ऊचरै (६१)—उच्चारण करते हैं ।
ऊडीसै (८४)—भारत के एक प्रान्त का नाम जहाँ भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था, उड़ीसा ।
ऊथापिया (७८, ८७)—उन्मूलन कर दिये ।
ऊथापै (६३)—उन्मूलन किया ।
ऊधरां (३८)—उद्धार हो जावे ।
ऊधरिया (७४)—उद्धार कर दिये ।
ऊधव (४४)—उद्धव ।
ऊन्हो (४७)—उष्ण ।
ऊपनौ (१०२)—उत्पन्न हुआ ।
ऊपर (९७)—ऊपर ।
ऊपरां (३१, ३२, ६३)—ऊपर ।
ऊपरा (३६, ४५)—ऊपर ।

ऊपरि (२०)—रक्षा, सहायता ।
(३८, ४१, ४२, ४५)—ऊपर ।
ऊपायरा (८०)—उत्पन्न करने वाला ।
ऊभ (१४)—उभय, दोनों ।
ऊभै (६१)—उभय, दो ।
ऊभी (११, १२)—खड़ा ।
ऊलटा (८५)—उलट पड़े, युद्धार्थ आक्रमण किया ।
ऊलटै (५९)-उलटा, विलोम, विरुद्ध ।

ए

ए (१५)—हे, यह, है ।
(३१, ५६)—यह
एक (३७)—एक ।
एकल-मलं (२७)-ईश्वर का एक नाम ।
एकलमल (४, ६८, ९४)—पारब्रह्म, विष्णु, सर्व शक्तिवान, अकेला ही कइयों से युद्ध करने वाला ।
एकलमला (१०)-ईश्वर का एक नाम ।
एकिरिग (३०, ४७)—एक ।
एतलौ (४६)—इतना ।
एतोज (४६)—इतना ही ।
एतौ (४६)—इतना ।
एथि (१६)—यहां ।
एथीयै (१३, १४, ६०)—यहाँ ।
एम (३७, ५३, ६०)—इस प्रकार ।
एरसा (८९)—ईर्ष्या ।
एह (३, ३५, ४१, ४२, ४४, ४५, ४७, ६७, १०१, १०३)-यह, ये ।
एही (८७)—यही ।

ऐ

ऐ (९)—ये ।
(९३)—यह
ऐनै (८८)—और ।
ऐसहि (६०)—ऐसे ही ।
ऐह (५)—यह ।

ओ

ओ (३)—अरे, वह ।
ओखा (३०)—ऊषा—वाणासुर की कन्या जो अनिरुद्ध को व्याही गई थी ।
ओछड़ी (७६)—छोटा, तुच्छ ।
ओछाह (६७)—उत्सव, हर्ष ।
ओछेरी (४०)—लघु, छोटा ।
ओण (७, २५)—चरण, पैर ।
ओथि (३०)—वहां ।
ओथी (३०)—वहाँ ।
ओपम (४६)—शोभा देता है ।
ओपि (५७)—शोभित होकर ।
ओपियौ (५४, ५६)—शोभायमान हुआ ।
ओपै (५३)—शोभा देते है ।
(६०)—शोभित होता है ।
(१०३,—शोभायमान होती है ।
ओळखियै (२)—पहिचाना जाना ।
ओळखियौ (३४)—पहिचान लिया, समझ लिया ।
ओळखै (३५)—पहिचानता है ।

श्रोळगै (६०, ६१)—स्तुति करता है (करते हैं)।

श्रोळभा (५८)—उपालंभ।

श्रोळिखिश्रौ (६७)—पहिचान लिया।

श्री

श्रौ (३, १२, २६, ३४, ४२, ४५, ४६, ४६)—यह।
(६३, ८६)—श्ररे!

श्रौछाह (६६)—उत्साह, हर्ष।

श्रौथीऐ (७४)—वहाँ।

श्रौद्रके (५२)—भयभीत हुए।

श्रौळग (५६)—स्तुति, यशोगान।

श्रौळगू (३)—स्तुति करूं, यश वर्णन करूं।

क

कंइ (८३)—क्या।

कंटक (५४, ५६)—श्रसुर, राक्षस, शठ

कंटग (२२)—वाधक, विघ्नकर्ता।

कंठीर (६४)—सिंह (नृसिंहावतार)।

कंत (३६)—कांत, पति।

कंध (४)—स्कन्ध, कन्धा।

कंमण (१६)—कौन।

कंस (३६, ६०, ६१, ६२, ६७, ७१, ८३)—मथुराधीश उग्रसेन का पुत्र श्रौर श्रीकृष्ण का मामा कंस, जिसे मारकर श्रीकृष्ण ने उसकी कैद से श्रपने माता-पिता को छुड़ाया था।

कंसवाळा (६६)—कंस के।

कंसार (१२)—एक प्रकार का व्यंजन-विशेष।

कंसाळ (६६)—वाद्य-विशेष जो झांझ से वड़ा होता है।

कंसासुर (६०)—देखो 'कंस'।

कंसासुर (१०३)—देखो 'कंस'।

कंसि (८२)—देखो 'कंस'।

कछ (५२)—कच्छपावतार।

कजि (५१, ८२)—लिये

कट (४३)—कटि, कमर।
(६६)—नाश

कटक (६४, ७०, ८४, ८५, ६१)—सेना, दल, समूह।

कटकड़ी (१२)—सेना

कटके (६३)—कटक, दल।

कटग (६३)—सेना

कठण (२, ३५)—कठिन।

कठियांणी (१५)—काठियावाड़ प्रान्त में उत्पन्न स्त्री श्रथवा काठी जाति की स्त्री।

कठै (४१, ५०)—कहाँ।

कड़कड़ (६१)—प्रहार की ध्वनि।

कड़िडिसै (६६)—कड़कड़ाहट की ध्वनि करते हुए टूटेंगे।

कड़ियाँ (८६)—कटि, कमर।

कड़ी (८४)—कटि, कमर।

कतियाणी (२२)—कल्प गोत्र में उत्पन्न एक दुर्गा-कात्यायनी।

कतीआणी (१९)—देखो 'कतियाणी'

कद (९, ११, १९, ६४)—कब
(९९)—कभी।

कदरी (८१)—कब का।

कदि (६४)—कब

कदे (६९)—कभी

कदेई (१०३)—कभी भी।

कनहिया (५८)—श्रीकृष्ण।

कनां (४१)—न ही।
(८६)—अथवा, और।

कना (४८)—पास
(६५)—या, अथवा।
(७८)—कब, क्यों नही।

कन्हईयै (८३)—श्रीकृष्ण।

कन्ही (५५)—पास।

कन्है (७३)—पास, निकट।

कन्हैया (३३)—श्रीकृष्ण।

कपटी (७०)—कपट (धोखा) करने वाला।

कपाळ (६१)—मस्तक से, शिर झुका कर।

कपि (६५)—वानर।

कपिल (३, ६, २८, ८२)—साख्य शास्त्र के प्रणेता एक ऋषि जिन्होंने राजा सगर के साठ पुत्रों को भस्म कर दिया था। इन्हे विष्णु का पाँचवा अवतार भी मानते हैं।

कपिलि (२४, ३९, ५४)—कपिल मुनि

कमंति (९९)—कमी।

कमंध (५६)—कवंध नामक असुर।

कमण (२९, ३५, ५२, ७२, ९३)—कैसे, कौन।

कमध (१६)—राठौड़।

कमध (३६, १००)—कमल, पंकज।

कमळा-कंत (३६)—लक्ष्मीपति, विष्णु

कमळी (५४)—महादेव।

कमांणौ (६९)—प्रिय पुत्र, कमाने वाला बेटा, कमाऊ।

कमाइण (५)—१. कमाने के लिये २. मारने के लिये।

कमाई (४७, ९७)—उपार्जन।

कमाली (३९, ५९, ६९)—शिव, महादेव।

*कमेर (५६)—नल कूवर ।

कर (४१)—हाथ ।

करग (६३)—हाथ ।

करणा (५०, ५२)—करुणा ।

करणाकर (१००)—करुणाकर, दया-सागर ।

करणौ (१०३)—करूँ, करना ।

करता (२३)—कर्ता, रचने वाला ।

करतौ (६६)—किया करता, करता हुआ ।

करत्ता (६४)—कर्ता, रचयिता

करनाळि (६६)—१. एक प्रकार का बड़ा ढोल जिसे चलती गाड़ी पर बजाया जाता था । २. एक प्रकार का फूंक-वाद्य नारसिंह, भोंपू ।

करमां (६५)—भक्त स्त्री कर्मा बाई जो जगन्नाथपुरी मे रहती थी ।

करां (१)—करू ।

(६८, ६६)—करें ।

करावै (५)—करवाता है ।

करि (२७, ३८, ४५)—करके ।

(३४)—करिये ।

करिजै (३२)—करिये ।

करिजो (६)—करिए ।

करिणाळा (१६)—वीर, तेजस्वी ।

करिया (४८)—करिए ।

करिसै (१२, १७, ७२)—करेगा ।

करिहो (३४)—करिए ।

करीम (६)—कृपालु, महरबान ।

करीस (६६)—करेगा ।

करै (३६, ४४, ४७)—करते है ।

करौ (२३)—करूं, करता हूँ ।

करौ (५६)—करते हो, करता है ।

करौ (६६)—कीजिये ।

---

* यहाँ पर निम्न आख्यान से अर्थ स्पष्ट हो सकेगा—

नल कूवर कुवेर के पुत्र थे । एक बार अपने भाई मणिग्रीव के साथ ये कैलाश पर्वत के समीप उपवन में जलक्रीड़ा कर रहे थे । अधिक शराब पी लेने के कारण अपनी स्त्रियों सहित ये नग्न हो गये और इनको अपनी नग्नता का भान तक न रहा । इधर महर्षि नारद आ निकले । इनकी औरतों ने तो तुरन्त वस्त्र पहिन लिए किन्तु ये दोनों निर्लज होकर नग्न ही खड़े रहे । नारद जी ने इन्हें श्राप दिया कि तुम बिना वस्त्र पहने ठूंठ की तरह खड़े हो जावो, वृक्ष बन जाओ ।

कलंकी (५, ३०)—कल्कि अवतार।
कलपंत (३९, ४७)—कल्पांत, प्रलय।
कळस (२४, ३२, ३७, ९२)—देवमूर्ति को जल चढ़ाने का पात्र अथवा ऐसे पवित्र कलश का देवमूर्ति पर चढाया हुआ जल।
कळह (५४, ६६, ८९)—युद्ध।
कळहां (१००)—युद्धों।
कलायै (८७)—पौंचा।
कलिंग (३१)—१. देश का नाम, २. दुष्टजन।
कलि (४४)—कलियुग।
कलिपंत (२, ४७)—कल्पान्त, प्रलय, नाश।
कलिमांहि (४५)—कलियुग में
कलियांण (१०२)—कल्याण।
कळिया (२१)—नाश किये।
कल्याण (३५)—उद्धार, मोक्ष।
कवण (३६)—कौन
कवियण (१००)-कविजन, काव्यकार।
कविलासं (२९)—कैलास।
कविलास (२, ४३)—मोक्ष, कैलास।
कविली (१६)—कपिला।
कवीयण (९९)—कवि लोगों।
कवेसर (११, ३८)—कवीस्वर, महाकवि।
कसंन (१६)—श्रीकृष्ण।
कसट (४९)—कष्ट।
कसियौ (७३)—बंधन में डाला।
कसिसै (६५)—कटिबद्ध करेगा।
कहड़ी (२)—कैसी।
कहती (९३)—कहता रह।
कहर (५९, ६६, ७०, ७१, ७५, ८३)-भयंकर।
(८०)—कोप।
(८२)—आपत्ति।
कहां (३४, ३८)—कहता।
कहि (३९)—कहकर।
कहिक (८)—कहकर अथवा कुछ।
कहिजै (३५, ३७, ४६, ५०)—कहा जाता है, कहे जाते हैं; कहिये।
कहिसी (३९)—कहेंगे।
कहौ (८१)—कहिये।
कांइ (३५, ४०, ९२, ९३, ९५, ९९)-क्या।
कांइमै (८६)—कायम, दृढ़, ईश्वर।
कांक नां (७२)-कोई को, किसी को।
कांकरा (६६)—कंकड़।
कांगरै (९३)—कंगुरा।
कांधौ (९२)—कंधा।
कांनड़ (५)—श्रीकृष्ण।
कांनै (३४)—दूर।
कान्हइया (७५)—श्रीकृष्ण।
कान्हड़ (२७)—श्रीकृष्ण।
कांवड़ (१६)-चमार जाति के वे पुरुष जो रामदेव के अनन्य भक्त होते हैं।
कांहि (७९)—कुछ।

काइं (२०)—कुछ ।
काउ (३२, ४६)—क्या ।
काइम (६, १०, ११, १७, २४, ६४; ६०)—दृढ़, स्थिर ।
काइमा (११, ६६)—देखो, काइमि ।
काइमि (६, ११, ८४)—वह जिसका अस्तित्व बिना किसी दूसरे की सहायता के बना रहे ।
काइमों (६८)—दृढ़, अटल, ईश्वर ।
काई (३६)—१. कोई, २. कुछ ।
काछिबा (८०)—कच्छपावतार ।
काज (५६)—लिए ।
काठो (७३)—दृढ़, मजबूत ।
काढि (७५)—निकाल दे ।
काढी (६५)—निकाल ली ।
कान्हइयो (६३, ७६)—श्रीकृष्ण ।
कान्हड़ (१, ६०)—श्रीकृष्ण ।
कान्हुआ (३३, ३६)—श्रीकृष्ण ।
कापड़ी (१३, ६५)—एक प्रकार के सन्यासी याचक विशेष, भाटों की एक शाखा ।
कापि (५६)—काटकर ।
कापुरिस (१३)—कापुरुष, कायर ।
कामी (३०)—मिटा दिया, नाश किया ।
कामड़ा (७६)—काम, कार्य ।
कायम (८९)—ईश्वर ।
कारण (५२)—लिए, निमित्त ।
कारणें (५३)—लिए ।

काळ (२०, ६८)—मृत्यु, मौत, यम ।
काळ-काळूं (२७)—यमराज का भी यमराज ।
कालरां (३१, ८६)—कोयला, नमकीन भूमि जहाँ पर पपड़ी अधिक उतरती हो तथा बोने पर कुछ भी पैदा नहीं होता है ।
कालिग (८६)—असुर का नाम ।
कालि (५३)—काल, मृत्यु ।
कालीग (३२)—असुर का नाम ।
कालीगना (८७)—असुर का नाम ।
काळीगा (१३)—एक असुर का नाम जिसे कल्कि अवतार ने मारा था, हिंदवानी नामक लताफल जो तरबूज से मिलता जुलता होता है ।
काळी (१)—कृष्ण सर्प ।
काळी (२, ७०)—पागल, उन्मत, कलुषित ।
काल्है (७२)—पागल ।
कान्ही (१००)—पागल ।
कासिपि (८०, ६६)—कश्यप का, कश्यप के ।
कासुं (३८, ३६, ८८)—किसने, क्या, कैसे ।
कासु (४०)—क्या, किसने ।
कासूं (७, २६, ७०, ७२, ८३, १०३)—कैसे, क्या ।
काह (३६)—क्या ।

कुहाड़ँ (६६)—कुल्हाड़ी ।
कूओ (८६)—कूप ।
कूकड़ा (५८)—कपड़े की वाती, वस्त्र-वर्तिका ।
कूकूउवा ४८)—त्राहि-त्राहि, पुकार ।
कूखां (१०१)—कोख, कुक्षि।
कूटतां (१३) मारने पर ।
कूटाडि से (१०)—असत्य करेगा, झूठा सिद्ध करेगा ।
कूटिजै (१६)—पीटे जायेंगे ।
कूटिया (३६, १००)—नाश किये, संहार किये, मरे ।
कूडा (१६)—असत्य भाषी ।
कूप (३५)—कूआं ।
कूवड़ी (३०)—कुब्जा नामक कंस की दासी ।
कूरम (३, ६)—कच्छप, सूर्यावतार, कच्छपावतार ।
के (११, १७, १८)—क्या, कई ।
केई (३६, ३९, ४१, ५१, ६६, ६७, ९६)—कितने ही, कई, कितनी ।
केकांण (५२)—अश्व, घोड़ा ।
केणि (३०)—किस ।
केतो (४६)—कितना ।
केथि (१६)—कहाँ ।
केम (७, ४६, ९९)—कैसे, किस प्रकार
केरड़ा (८६)—करील का वृक्ष ?
केवल-गियान (२९)—कैवल्य ज्ञान ।
केवी (१९)—शत्रु ।
केसव (१, ७४)—विष्णु, श्रीकृष्ण, केशव ।
केसवराइ (१००)—केशवराज, ईश्वर। विष्णु का एक नाम ।
केसवा (९, १०, ३४)—केशव, विष्णु का एक नाम ।
केहर (२९) नृसिंह ।
केहिक (१००)—कुछ, कई ।
कै (४६, २०, ४१, ४४, ६१)—किस, का ।
कैये (५१)—कितने ।
कैरै (७५)—किसके ।
को (२३)—कोई ।
कोइ (४१)—कोई, निश्चित ।
कोइला-गिरि (२१)—पर्वत विशेष ।
कोकि (२८)—विष्णु ।
कोट (२८)—मधु, कैटभ ।
कोटवाळ (१३)—पहरेदार, चौकीदार
कोड (९)—उत्साह, उमंग ।
कोड (८७)—करोड़ ।
कोडि (३१, २०, २६, ३६, ४४)—करोड़, कोटि ।
कोड़ियां (३३)—कोटी, कोड़ ।
कोड़े (१२)—कोटि, कोड़ ।
कोप (३२, ६५)—गुस्सा ।
कोपियो (५२, ५४)—कोप किया ।
कोपै (५३, ४२, ६०)—कोप करता है।

कोम (३९)—कूर्मावतार ।
कोयड़ो (७२)—बच्चों का एक खास प्रकार का खेल जिसमें कपड़े को गेंद के आकार में बड़ी दक्षता से समेट लेते हैं। इस गेंद को आकाश में फेंकते हैं जिससे कपड़ा खुलकर गेंद रूप मिट जाता है तब बच्चा हार जाता है।
कोलाली (३९)—कुम्भकार, ब्रह्मा।
कोसल्या (६, ५५)—कौशल्या।
कोसिलि (१०१)—कौशिल्या।
कोहर (७५)—कूप।
कोहिक (७७)—कोई एक।
कौ (५४)—का।
क्यां (४५)—किसलिए, क्यों; कैसे।
क्यै (७२)—कैसे।
क्रँम (५१, ७, ३७)—कर्म, काम।
क्रिपा (९९, १०२)—कृपा।
क्रिसन (३९)—श्रीकृष्ण।
क्रीत (५, ५०)—कीर्ति।
क्रेत (३९)—केतुह।
क्रोधियौ (६२)—क्रुध हुआ, क्रोध किया।

ख

खंड (१००)—टुकड़ा।
खंड-डंडूल (३०)—
खड़खड़ (९१)—टकराने की ध्वनि, ध्वनि विशेष।
खड़ग (३२)—तलवार।
खड़ि (६०)—हांककर, हांका।
खड़िसै (८५)—चलाएगा।
खरणी (८७)—खना, खोदा।
खपाय (१९)—नाश कर दिया।
खपावण (५)—नाश करने को, ध्वंस करने को।
खमा (४२)—क्षमा।
खर (६, ५६)—एक राक्षस जो रावण का भाई था।
खरा (१३, ७७, ८६)—ठीक, पक्का, दृढ़।
खरो (८५)—पक्का, दृढ़, निश्चय।
खरौ (५३, ६०, ६४)—पक्का, दृढ़, निश्चय।
खल (१९, २१, ५६, ६६, ९७)—दुष्ट, असुर, राक्षस, शत्रु।
खलक (८४)—संसार, दुनियाँ।
खलही (८२)—दुष्टों को।
खलां (६२, ६३)—शत्रुओं, दुष्टों।
खळिकियौ (७९)—कलकल की ध्वनि करता बहा, प्रवाह में हुआ।
खली (८७)—दुष्ट, असुर।
खवाड़ै (४२)—खिलाता है।
खवारै (४२)—खिलाता है।
खसां (१४)—१. भागते है २. लड़ते है।

खसै (८७, ७७)—भिड़े, युद्ध किया, भिड़ेगा, युद्ध करेगा ।
खसौ (१०, ८४)—युद्ध कीजिए, भिड़िये ।
खाँचि (७९)—खांच कर, आकर्षण करके ।
खांणि (४७)—प्रकार, तरह, खानि ।
खाग (८७, ९१)—तलवार ।
खाटियौ (८२, ८३)—प्राप्त किया, अपार्जन किया ।
खाटी (५७)—प्राप्त की ।
खाटै (७५)—प्रात करता है, प्रात्त करना ।
खाड (३, ८७)—खड्डा, गड्डा ।
खाण (३९)—खानि, जीवयोनि ।
खाणि (४०, ४८)—खानि, प्रकार ।
खाणै (५०)—खानि, प्रकार ।
खाधा (९७)—खा गये ।
खाधी (३)—खाई
खापर (६३)—दुष्ट ।
खाफर (५, ३०, १००)—असुर, राक्षस, असुर का नाम, दुष्ट ।
खारौ (१००)—कड़ुवा, कटु ।
खासा (९१)—वढ़िया, सुडौल ।
खासौ (१६)—खास, विशेष, मुख्य, प्रधान ।
खिड़ि खिड़ि (२३)—देश-देश, खंड-खंड
खिणियी (५३)—नोच दिया, उखेड़ दिया ।
खिणै (२८)—पटकना, डालना ।
खिमावंत (४१)—क्षमावान
खिमिया (१९, २३)—क्षमा
खिम्या (४७)—खमा
खिवि (६३)—कोप करता है, कोप करके ।
खिसै (७९)—भिड़े, टक्कर ली, युद्ध किया ।
खीच (९५)—व्यंजन विशेष जो प्रायः वाजरा को ऊखल में कूट कर वनाया जाता है ।
खीज (४१, ७२)—कोप
खीजतो (७१)—कोप करना ।
खुदाइ (२३)—खुदा, ईश्वर ।
खुरासांण (६४)—यवन
खूंदामलजी (११)—ईश्वर, वह प्रचंड योद्धा वादशाह जो वहुत से प्राणियों के कष्ट अपने ऊपर सहन करता है ।
खूटविहो (९०)—समात करोगे; समात कर देंगे ।
खूटा (१९)—समात हो गये, मर गये ।
खूव (९५)=वहुत, वढ़िया ।
खेचर (५७)—आकाशगामी ।
खेचरा (८५)—आकाशगामी ।
खेत (१०,३२)—युद्धस्थल, रणक्षेत्र ।
खेतपाळ (१३)—क्षेत्रपाल ।
खेतपाळां (८५)—क्षेत्रपाल नामक देवों ।

खेतल (६१)—क्षेत्रपाल देव ।
खेध (१४, ६०)—द्वेष, डाह ।
खेधौ (५५)—द्वेष, डाह ।
खेरिया (६२)—मार डाले ।
खेळा (६१)—साथी, मित्र ।
खेलियो (६३)—खेला, क्रीड़ा की ।
खेलौ (३२)—खेलो, युद्ध करो ।
खैंग (८६)—घोड़ा
खैर (११)—कुशल क्षेत्र
खोटी (१००)—खराब, बुरी ।
खोड़ील (५)—बुरी आदतें, गर्व ।
खोसण (५)—छीनने को, छीनने वाली

ग

गंग (४४)—गंगा नदी ।
गंगा (२)—गंगा
गंगेव (४४)—गांगेय, भीष्म पितामह ।
गंजण (४५)=नाश करने वाला ।
गजराज (६)—बड़ा हाथी ।
गजरी (७८) · भक्तराज, गजराज का
गटक (२०)—घूँट
गडा (३८)—गाढ़ा
गणा (७६)—समझे
गति (६५, २१, ३५, ४२)—हाल, लीला, गतिका, मोक्ष ।
गत्ती (६१)—गति, मोक्ष ।
गदा (१७)—शस्त्र विशेष ।
गदापति (४३)—गदा नामक शस्त्र को धारण करने वाला, विष्णु
गनाइति (१०१)—समधी
गम (३६, ३६)—पहुँच, ज्ञान ।
गमर (८७)—युद्ध
गमा (४०)—चुहुअँ-गमां, चारों ओर।
गमाड़ां (८)—नाश कीजिए, मिटाइए
गमाया (२१)—नाश किये ।
गमायौ (५४, ५५)—नाश किया, मिटा दिया ।
गमियो (२)—नाश हुआ ।
गमैं (७८) - जाते हैं ।
गयण (५१, ८६)—गगन, आकाश ।
गयासुर (४)—एक असुर का नाम ।
गरढ़ा (२७, ३६, ७६)—वृद्ध
गरढेरा (६२)—वृद्ध
गरढैरी (१६)—प्रति वृद्धी ।
गरढ़ेरौ (४, ७) वृद्ध ।
गरढ़ौ (४७, ६८, ६०)—वृद्ध, प्राचीन
गरव (५५)—गर्व, अभिमान ।
गरुऔ (२४)—गंभीर
गळिया (२१) निगल गई, मांस-पिंड
गह (५५)—गंभीर
गहन (६)—गंभीर
ग्रहियां (६०)—ग्रहण करने से ।
गांजण (१००)—पराजित करने को ।
गांजैं (५८)—संहार करता है, नाश करता है, पराजित करता है ।
गांन (१०३)—गुण-गान, नाम-स्मरण
गांमी (ग्रांमी) (२७)—गमन करने वाला ।

गाइ (६, ३६, ४५)—गाय, गा।
गाइयां (६०)—गाएँ
गाजिया (८७, ६६)—गर्जित हुए।
गाजियौ (५५, ८०)—गर्जना की।
गाढ़ि (५०)—ठोस रूप से, सम्मिलित
गाय (६४)—गौ
गालियौ (८३)—नष्ट कर दिया, मिटा दिया।
गावंतरी (४४)—गायत्री
गावड़ँ (१०१)—गायें
गावतरी (१३, २१)—गायत्री
गावां (३८)—वर्णन करें।
गाविडै (८३)—गाएँ
गावित्री (३२)—गायत्री
गायौ (३२)—गाया
गाहिया (६०)—ध्वंस किए।
गाहेड़ि (३८)—गंभीर, गांभीर्य।
गिऔ (५६, ७१)—गया, मिट गया, नाश हो गया।
गिणि (४२, ७३)—समझ, समझकर
गिणियौ (६३)—समझा
गिणीजै (४६)—गिना जाता है, गिनिए।
गिनका (६५)—वेश्या
गिनिका (७४)—एक वेश्या जिसे भगवान ने मोक्षपद दिया।
गिमि (६१)—मिटा दे, नाश करदे।
गिर (४७)—पर्वत, गिरि।
गिरवर (६५)—गिरिवर, पर्वत।
गिळि (४८)—निकल गया।
गिळिया (२०, १८, १००)—निगल गई, ध्वंस कर दिये, संहार कर दिया।
गिळियौ (६४)—निगल गया।
गिलै (४, ४७, ६६, ८७)—निगलता है, नाश करता है, निगल जाते है।
गीता (३२)—भगवद् गीता।
गुआर (१७)—गँवार
गुडाया (६३)—मार डाला, संहार किये।
गुड़िदां (६८)—१ सिर, २ वीर।
गुड़िसै (६६)—लुढक जायेंगे।
गुड़ँ (६६, ८७)—वीर गति प्राप्त होंगे गिर गये, लुढ़क गये।
गुण (६७)—कीर्ति।
गुणपति (६)—गणपति, गजानन।
गुणी (४७)—गुनवान, उत्कृष्ठ।
गुद्र (६४)—मांस-पिंड।
गुर (३८)—शिक्षक, ज्ञानदाता।
गुरड़ (३६)—विष्णु के वाहन का नाम जो पक्षियों के राजा समझे जाते हैं, गरुड़।
गुरहर (६०)—गुरुवर, श्रेष्ठ।

गुरुड़ (४८)— गरुड़ ।

गुलांम (३७)—दाम ।

गेम (२, ८, २१, ६४, ७३)—पाप, कलंक ।

गेमरा (२१)—गज, हाथी ।

गेल (६४)—पीछे ।

गोकल (९३)—गोकुल ।

गोखड़ँ (९७)—गवाक्ष, झरोखा ।

गोठ (१६)—गोष्ठी ।

गोठि (५६)—गोष्ठी, प्रीति भोज ।

गोड़वाड़ (१७)–मारवाड़ राज्यान्तरगत पाली ज़िले का एक वड़ा भाग जहाँ पर पहिले गौड़वंश के क्षत्रियों का राज्य था ।

गोड़ि (९२)—ध्वंस करके ।

गोड़ियौ (१५) इन्द्रजाल का खेल करने वाला ।

गोढ़ँ (१००)—पास, निकट ।

गोतिम (६७)—गौतम ऋषि ।

गोतौ (२)—चक्कर ।

गोदड (१६, ३८)—एक प्रकार के सन्यासी, एक महात्मा का नाम जो निरंतर कंथा ही पहन कर रहता था ।

गोदाउरी (८१)—गोदावरी नामक नदी ।

गोपाल (४७)—श्रीकृष्ण, विष्णु का एक नाम ।

गोपियां (३६)—गोपिकाएं ।

गोपी (११)—श्रीकृष्ण के साथ वाल क्रीड़ा करने वाली व्रज की गोप जाति की स्त्रिएं, गोप पत्नि ।

गोविद (९३)—गोविद ।

गोम (४९)—भूमि, पृथ्वी ।

गोरजा (८८)—गौरी, पार्वती ।

गोविन्द (७९, ५६, ९३, ९६)–ईश्वर, विष्णु का एक नाम ।

गोविन्दा (३७, ६९)—श्रीकृष्ण ।

गोविंदि (७४)—गोविन्द के, कृष्ण के

गोविंदे (६१, ९३)—गोविंद, श्रीकृष्ण श्री रामचंद ।

गोविंदौ (६०, ६८)–श्रीकृष्ण, गोविंद ।

गोह (१००)—निषाद जाति का नायक जो श्रृंगवेरपुर रहता था और श्री रामचंद भगवान का मित्र था, गुह ।

गोहि (९३)—गुह, निषाव ।

गौरि (३९, ४४)—पार्वती ।

गौरिजा (३८)—गौरी, पार्वती ।

गौरिज्या (३२, ९७)—गौरी, पार्वती, उमा ।

गौरी (२१)—गौर वर्ण की, पार्वती ।

गौलिया (८३)—गोपाल, ग्वाला ।

ग्यांन (१५, ३८, ९९, १०२)–ज्ञांन ।

ग्यांनरी (३६)—ज्ञान ।

ग्या (४६)—गये ।
ग्यानह (४४) - ज्ञान ।
ग्रव (४५, ५०)—गर्व, गर्म ।
ग्रभवास (५०, ६६)—गर्भवास ।
ग्वाल (३३)—गोपाल, रक्षक ।
ग्रह (५७)—वे तारे जिनके उदय अस्त काल आदि के विषय मे प्राचीन ज्योतिषियो ने ज्ञान कर लिया था। इनकी संख्या फलित ज्योतिष मे भी मानी गई है ।
ग्रहि (७२)—पकडकर ।
ग्रहियो (२६)—पकडा, धारण किया ।
ग्रहिसी (६४)—पकडोगे ।
ग्रांम (६६)—ग्राम ।
ग्रांमी (१०१)—गामी, गमन करने वाला, चलने वाला ।
ग्रामहं (४१)—ग्राम ।
ग्राह नां (६६)—ग्राह को ।
ग्रिह (५८)—घर ।
ग्रेह (४८)—गृह, घर ।

घ

घड़ग (३५)--रचना ।
घड़ै (३४, ४२, ४३)—रचता है, रचते है ।
घट (२३)—शरीर, मन, हृदय ।
घटियौ (५२)—घट गया, कम हो गया ।
घटै (४६)—कम, घटता है ।
घण (११, ४५, ४६, ५०, ६६, ७५)-वहुत, अधिक ।
घणनांमी (२४, ५१, ६८)—वहुत से नामों वाला, ईश्वर ।
घणनाम (२६)—वहुत से नाम वाला ।
घणनामी (७५)—वह जिसके अनेक नाम हों ।
घणा (३२, ७५, ८३, ८४, ६१)—वहुत, अधिक ।
घणी (३६)—चातुर्य ।
घणूं (७०)—अधिक ।
घणेरी (४०)—वहुत ।
घणैं (५४, ५६)—अधिक, वहुत ।
घणैरिड़ै (१०)—अधिकहठ, जिद्द ।
घणौ (७०)—अधिक ।
घणौ (१, ४०, ७६, ५२, ४६, ५४, ६८, ७२, ७६, ८०, ८१, ८२, ८७, ८८, ६७, ६३)—वहुत, अधिक, घना, अत्यन्त ।
घन (२०)—वहुत, अधिक ।
घमसांण (१२)—युद्ध ।
घांणी (३२)—कोल्हू ।
घाउ (६६)—प्रहार ।
घाट (६)—रचना ।
घाणी (२०)—ध्वंस करने वाली ।
घाणीयां ( )—कोल्हू ।
घात (२)—अनिष्ट, दुर्दशा ।
घाति (२२)—डालकर ।

छांनै (२५)—गुप्त रूप से।
छात्र (६७)—राजा।
छात्रां (६७)— छत्रपति, राजा।
छाया (२१)—फैल गया, छा गया।
छिनि (३१)—शनिश्चर।
छींका (५८)—छींका, झूला।
छीका (८३)—कटोरीनुमा आकार का रस्सियो का गूंथा हुआ जाल जो प्रायः छत में लटकाया जाता है और जिस पर प्रायः प्याद्य पदार्थ रखे जाते हैं।
छीया (५) - सीता।
छूमण (१०१)—चरण, पांव।
छूव (३७)—सर्व, सव।
छेहड़ा (९७)—गठ-वंधन, गठ-वंधन के वस्त्र का छोर।
छै (१००)—है।
छै (३३)—है।
छोकरा (८३)–छोकरा, वच्चा, लड़का।
छोगाळ (९८)—जिसकी पगड़ी मे छोगा लगा हो। छोगा वाली पगड़ी पहिने हुए।
छोगाळा (९२)—अवतंसधारी, श्रेष्ठ, सुन्दर।
छोगाळौ (५८)—श्रेष्ठ, शौकीन, छैल छवीली।
छोड़िया (९७)—छोड़ दिये।
छोति (४०)—छिलका।
छौळ (१०२)—१: लहर, २. आनंद।
छौ (४८) - था।
छौगाळौ ५ - छैला, सुन्दर और बना ठना, सजा-वजा और युवा पुरुष, सुन्दर वेश विन्यास युक्त युवा पुरुष, रंगीला, वांका।
छ्रव (१९)—प्रसिद्ध।

ज

जंगम (४०)—चलने फिरने वाले।
जंपसै (२१)—जप करेंगे।
जंवक (४०)—यव, घास, तृण, चारा
जंस (१००)—यमराज।
जइ (४८)—जो, अगर।
जकांनु (२)—जिनको
जखं (२८)—यक्ष
जख (१३, ३६)—यक्ष
जगंन (९२)—यज्ञ, संसार, जगत।
जग (२२, ४३)—संसार, जगत।
जगतनाथ (४६) —जगन्नाथ, ईश्वर।
जगति (३४)—संसार
जगदाह (४६)—जगत का।
जगदीश (३३, ५७)—जगदीश्वर
जगदीस (३६, ४४, ४६, ६०, ६९)—ईश्वर।
जगनाथजी (६३)–जगतस्वामी, विष्णु, श्रीकृष्ण।

जगनाथराय (६३)—विष्णु, श्रीकृष्ण।
जग-पुड़ (१०)—पृथ्वीतल, जगतीतल
जगि (१०२)—संसार में।
जजमान (१५)—यजमांन
जटाय (६)—प्रसिद्ध भक्त, गिद्ध, जटायु।
जड़ंग (७८)—जड़, मूर्ख, अस।
जड़धार (१६)—महादेव।
जडांणो (४०)–घनीभूत हुआ।
जड़ाउ (४७)=जटित
जडाधार (४८)—जटाधर, महादेव।
जड़ाधर (८८)—शिव, महादेव।
जण (५२, ५६, ६६)—व्यक्ति, भक्त।
जणारौ (६७)—जिसका
जणस्यै (३६)—जनेगी, उत्पन्न करेगी
जणांरी (६४)—जिनकी।
जणियौ (६३)—जन्म दिया, उत्पन्न किया।
जती (६१)—यति, परमपद के लिए यत्न करने वाले, संन्यासी।
जद (४८, ७१, ६६)—जब
जदरथ (६३)—महाभारत युद्ध में दुर्योधन पक्षीय एक राजा।
जदवंस (७५)—यदुवंश, श्रीकृष्ण।
जपीजै (४०)—जापा जाता है।
जपै (२३)—जपते है।
जपौ (३४)—जप करिए।
जवने (२०)—यवनों ने।
जवानैं (६०)—जवान
जम (३६)—यम
जमणां (६०)—यमुना नदी।
जमणा (१३)—यमुना
जमदग्न (८१)—एक ऋषि जो परशुराम के पिता थे, जमदग्नि
जमपास (३४)—यमपाश
जमराव (२५)—यमराज
जमलैं (१५)—साथ ?
जमवाळा (६६)—यमराज के।
जमवारा (५१)—जीवन, जन्म, यमयातना।
जमैं (१७)—रामदेव पीर के नाम पर किया जाने वाला रात्रि जागरण।
जमो (१४)—रात्रि जागरण, जिसमें प्रायः रामदेव के ही भजन गाये जाते हैं, राती-जोगो।
जयो (६, २२, ३६, २३, ३३, ४८)—जय हो।
जयो (२७, ३४)—जय हो, जय !
जर (१००)—धन दौलत।
मुहा—जन जूनौ
जरणा (१००)—सहन शक्ति।
जरिया (४८, १००)—सहन किए, हजम किए।
जरू (२८, ७०)—अवश्य, जरूर ही, दृढ़, मजबूत।

जळ (५२, ५६)—पानी; समुद्र ।

जळ मांणसिया (१६)—जलमानुस ।

जवन (५०, ६२, ६३, ६१)—असुर, राक्षस यवन ।

जवनां (६६) – यवन ।

जवने (६८)—यवनों ।

जस (३८, ४४, ५१, ६५)—यश, जैसी कीर्ति ।

जसहि (६०)—यश ।

जसोदा (५८, ६२, ८३)—व्रज में माता के रूप में श्रीकृष्ण का पालन पोषण करने वाली नंद गोपराज की धर्मपत्नी, यशोदा ।

जसौदा (५)—यशोदा ।

जांणां (१०१)—जानता हूँ ।

जांणि (३५)—जानकर ।

जांणी (३२)–समझली, समझ लिया ।

जांणै (३६)—जानता है ।

जांनी (३१, ३७)—बराती ।

जांमिणि (१०१)—माता ।

जांमी (२)—पिता, जन्म देने वाला ।

जाइयौ (३६)—उत्पन्न किया ।

जाइनै (३०)—जा करके ।

जाइया (८१)—जन्म दिया ।

जाए (३३)—जा करके ।

जाजम (१३)—छपा हुआ या रंगा हुआ दो सूती मोटा बिछाने का कपड़ा, जाजिम ।

जाड़ (२, ४, ३५, ३७)—जड़ता, अग्यान जाड़्य अज्ञानता ।

जाडा (६६)—शक्तिशाली, बहुत बड़ा ।

जाड़ि (५१)—जबडा ।

जाणै (१६, ७६)—जानती है, जानता है ।

जाति (३६)—हो जाना, हो सकना ।

जात्र (३७)—यात्रा, पूजा, अर्चना ।

जादवराव (१००)–यादवराज, श्रीकृष्ण ।

जादवा (३६)—यादव, श्रीकृष्ण ।

जाप (३४, २३)—जप, पठन पाठन ।

जाव (५२)—जबाब, प्रत्युत्तर ।

जामिणी (२२)—जन्म देने वाली ।

जामै (४३)—जन्म लेते है ।

जाया (१६)— जन्म दिया ।

जायौ (३६, ४२, ५५, ८२, १००)—जन्म दिया, उत्पन्न किया, पुत्र ।

जाळण (६२)—जालने वाला, जलाने का ।

जास (२८, ३५, ५०, ६८)—जिसका, जिसे जिससे ।

जिकां (५१)—जिन्हों ।

जिके (२, १६, ८१)—जो ।

जिकै (६३)—जिस, जिसने ।

जिकौ (२६, ४५, ५४)—वह, जो ।

जिगन (४४)—यज्ञ ।

जिगि (५५)—यज्ञ ।

जिण (७७)—जन, मनुष्य, भक्त ।
जिणि (४४, ४८)—जिस ।
जिणिसां (१००)—जिससे ।
जितरौ (४६)—जितना ।
जिनक (२६)—राजा जनक ।
जिनिखि (७७, २१)—जनक ।
जिनेता (४६)—जनयतृ, माता ।
जिम (३५, ५३)-जिस प्रकार से, जैसे ।
जिमि (२०)—जैसे ।
जिसा (१६, ६५, ६२, ६६)—जैसे, जैसा ।
जिसी (४८)—जैसी ।
जिसौ (२५, ४१, ५२, ५७, ५६, ७८, १०१, १०२)—जैसा ।
जिहांरा (१०३)—जिनके ।
जीतौ (५४, ६३)—जीत गया, विजय हो, जाओ ।
जीपै (७, ५२, ५६)—जीत सके, विजय प्राप्त कर सके, जीतता है ।
जीमिसै (१२)—भोजन करेगा ।
जीमै (५८)—जीमता है ।
जीवती (४५)—जीवित ।
जीव (४०)—प्राण, जीवन ।
जीवड़ां (१०२)—जीवो, प्राणियों ।
जीवाड़िया (६६)—जीवित किए ।
जीवाड़ी (६६)—जीवित की ।
जुआंण (१२)—जवान, युवा ।
जुअै (७६)—जुवा ।
जुग (५२, १०२)—युग ।
जुजिठळ (६३)—युधिष्ठिर ।
जुजिठिळ (६२)—युधिष्ठिर ।
जुजिठिळि (३१)—युधिष्ठिर ।
जुठा (७६)—चंचल, उत्पात करने वाला, लीला करने वाला ।
जुड़िया (६५)—भिड़े, युद्ध किया ।
जुध (१६, ३६, १००)—युद्ध ।
जुधि (२०)—युद्ध में ।
जुरारी (३३)—ज्वरारि, तापो का नाश करने वाला, सदैव युवा रहने वाला ।
जुरासंध (६२)—मगधापति वृहद्रथ के पुत्र का नाम ।
जुहारं (२८, १४, ७६)—अभिवादन ।
जुहारूं (२५)—नमस्कार करता हूं । अभिवादन करता हूं ।
जुहारै (३६, ४६)—अभिवादन करते हैं ।
जूजूआ (८२, १०१, ४५)—पृथक ।
जूटा (१२, ६६, ८६, ८७)-भिड़े, भिड़ गये, युद्ध किया, युद्ध में लग गये ।
जुटै (६८)—भिड़ गये ।
जूढिया (३७)—जोधपुर राज्यान्तर्गत शेरगढ तहसील का एक लालस गोत्र के चारणों की जागीर का गाँव ।

जूनां (३७, १००)—प्राचीन ।
जेज (६४)—देरी, विलंव ।
जेम (६, ३८)—जैसे, जिससे ।
जेरिया (६२) – ध्वंस किए ।
जेवां (२८) – जैसे ।
जेसलौ (१५)—एक भक्त का नाम जो रावल मल्लिनाथ के दरबार में था ।
जै (४२)—जिस ।
जै (२१, ३६, ६३)–जो, यदि, अगर।
जैत (२०, ५२, ५६)—विजय, जीत।
जै देव (३८, ६६)—प्रसिद्ध संस्कृत ग्रंथ गीत-गोविंद के रचयिता एक परम वैष्णव कवि ।
जोइ (१३, ३७, १०३)—देखकर, देखिए जिस ।
जोइया (१६)—देखे
जोईयौ (६८)—देख
जोग (२२)—योग
जोगणी (८६)—यौगिनी, रणचंडी ।
जोडै-पाण (१०२)—कर-बद्ध होता है
जोत (१५)—ज्योति
जोति (२४, ३३, ३५, ३६, ४०)—ज्योति, ईश्वर (वेदान्त)
जोध (१२, ३१)—योद्धा, वीर ।
जोनि (४३)—योनि
जोनी (८१)—योनि
जोनीयां (३६)—योनि, जन्म ।
जोमण (८०)—जन्म सा
जोरवर (४६)—शक्तिशाली
जोरावर (७६)—शक्तिशाली
जोवै (३१, ६४)—देखता हैं, देखती है
ज्यांनखी (८१)—जानकी, सीता ।
ज्याग (६, ४३, ५५) – यज्ञ
ज्यानखी (३६)—जानकी, वैदेही ।

झ

झगड़ै (१००)—लडाई
झड़पै (७६) झपट कर, छीनकर ।
झडपै (५६)—छीनता है, खोसता है।
झड़िपिया (६१)—छीन लिए ।
झलिसै (७०)—धारण कर सकेगा, उठा सकेगा ।
झलू (६६)— रक्षक, मददगार, उत्तर-दायित्व लेने वाला ।
झाझ (३१, ७८)
झाझै (६४)—बहुत, अधिक ।
झाटिया (८७)—मार दिया ।
झरिड़ियौ (६४)—नोच डाला ।
झाल (६८)—पकड़ कर ।
झाळ (८७)—ज्वाला, आग की लपट आग ।
झालणहार (६)—धारण करने वाला, पकड़ने वाला ।
झालि (१६, २६, ५८)—पकड़कर ।
झालिसै (८७)—पकड़ेगा ।
झाली (७३)—पकड़ी
झालौ (३१)—धारण करते ही ।

झिखै (७८)—प्रकाशित हो।
झूझ (३२)—युद्ध
झूझना (७६)—युद्ध के, युद्ध का।
झेडै (४५)—गिराता है, प्राप्त करता है

ट

टको (७०)—पैसा
मुहा—वाल्ही टको—अत्यन्त प्यारा।
टला (१०३)—टक्कर
टळिया (६७)—मिट गये, दूर हो गए।
टळियौ (५६)—दूर हुआ, मिट गया।
टळै (३५, ८०)—दूर हो, मिट जाता है।
टलौ (७८)—टक्कर, आघात।
टल्ला (८६)—टक्कर, आघात।
टापौ (६६)–१. मारो, २. फेरा, व्यर्थ आना जाना।
टाळण (६२)—मिटाने की, दूर करने की।
टाळिहौ (३७)—दूर करिये।
टाळीया (८१)–दूर किये, मिटा दिये।
टाळै (६६)–दूर करता है, मिटाता है।
टीकाळ (५०)—तिलकधारी, श्रेष्ठ।
टेक (६०, ६५)—प्रण।
टोघड़ं (६६)—गायों के बछड़े।

ठ

ठकरांणी (१५)–ठाकुर की धर्म पत्नी।
ठग (७३)—ठगने वाला, धूर्त।
ठगाई (६७)—धूर्तता।
ठगारा (७६)—ठगने वाला, ठग, धूर्त।
ठगारौ (१५)—ठग, धूर्त।
ठरिया (८१)—शीतल हुए।
ठरी (१६)—ठंढी पड गई।
ठळा (६६)—ढेला।
ठांभी (६०)—रोकिये।
ठांम (४६)—स्थान।
ठाकराई (६७)—स्वामीत्व।
ठाड़ं (३६)—स्थान।
ठाढौ (४७)—शीतल।
ठावा (६५)—प्रसिद्ध, महान।
ठावी (३२)—प्रसिद्ध।
ठावौ (६१)—महान, बड़ा।
ठीक (६७, ६१)–अच्छा, भली प्रकार।
ठेलसै (६५)—पीछे होयेंगे, पराजित करेंगे।
ठेले (१)—धकेल दे, ढकेल दे।
ठीड़ि (५०)—स्थान।

ड

डंडवत (५६)—दण्डवत्।
डंडूळ (१००)—एक दैत्य का नाम।
डळा (८५)—पिंड, खंड।
डरिया (१००)—डर गये।
डसै (८७)—चबाये, काटे।
डहिकिया (८७)–ध्वनिमान हुये, बजे
डांग (६८)—लाठी।
डांण (६६)—दण्ड।

डाक चड़ियौ (३७)—डावां डौल हुआ,

डाकण (१००)— डाकिनी।

डाकिणौ (८५) — डाकिनी।

डाच (९८)—मुँह, गाल।

डाचा (७०)—मुख।

डाडौ (९७)—पितामह।

डाभी (४१)—दर्भ।

डाहुल (५)—१. एक दैत्य का नाम, २. दैत्य।

डाहुळिया (१३)—असुर, राक्षस।

डिगतां (२)—डांवा-डौल होने वाले। अस्थिर, डिगने वाले।

डिगपाल (३९)—दिक्पाल।

डील (५, २५, ५०)—शरीर।

डूलै (५३)—डोलायमान होता है, डोलायमान हो गया।

डूलौ (३७)—डांवा-डौल हो गया, विभ्रम में पड़ गया।

डोकरा (२७, १०२)—वृद्ध।

डोकरै (१०२)—वृद्ध, बुढ़ा।

डोर (१००)—डोरी, गलफास।

डोह (५३)—विलोडित करके, मंथन करके।

डोहा (१७)—आनन्द।

ढ

ढळिकिसै (८९)—लुढकेंगे।

ढाहिया (९०)—मार डाले।

ढील (९, ९२, ९९, १०२)—विलम्ब, देरी।

ढेरड़ा (८६)—ढेर, राशि।

ढोलण (५)—ढरकाने वाला, ढोलने वाला।

ढोळिया (८३) —ढरका देना, गिरा देना।

ढोळै (५८)—गिराता है।

त

तंण (१८)—तनय, पुत्र।

तंणी (८१)—की

तनां (६९, ७९, ७५)—तुझको

तण (३, ६९, ७६, ९९, ४८)—तनय, पुत्र की।

तणां (६, १३, १९, ३१, ४४, ६६)—का, के।

तणां (६८)—तनय, पुत्र।

तणा (९, १०, १९, ३६, ४५, ४८, ६६, ६७, ६९, ७५, ७७, ७९, ७४, ८०, ८१, ९१)—के

तणि (६७)—की

तणीं (९२, ९४, ९३)—की

तणी (७, १९, २५, ३२, ३५, ३९, ४२, ४७, ६४, ६९, ७०, ७७, ८२, ९०, ९८, १०१, १०२, ९६, १०३)—की

तणों (७७)—के

तणौ (५१, ९, २०, २२, ४४, ६२, ५९, ६३, ५२, ६५, ६७, ६८, ७१, ७९, ८०, ८८, ८२, ९९, ९२, १००)—के

तणो (१६, ४३, ८२, ८५, ८६)—का

तणौ (२, १३, ६८)—का

तणी (६६, ७२, ८४, ८५, ८६, ८३, ७४, ८७, १, ४, ६, १३, १४, १६, २३, २८, ३०, ३१, ३२, ३६, ३८, ३६, ४२, ४४, ६४, ५२, ५८, ६२, ६३, ७८, ७६, ६७, १०१, १००, ६५)—का

तंणौ (६१, ६४, ६६)—का

तत (४३, ४५, २५)— तत्व

तनां (२२, ३४, ३६, ३७, ६७, ६८, ६७, ६६)—तुझको

तनांई (६६)—तुझको ही ।

तना (७६, ७८)—तुझको

तनौ (३६)—तुझको

तवै (५२)—कहते हैं, कहने लगे, स्तवन करने लगे ।

तमारा (६१)—तुम्हारे

तमासा (६६)—तमाशा

तमासै (५६)—खेल, तमाशा ।

तमो (५८)—तीन गुणो मे से एक तमोगुण ।

तरगस (१२)—तर्कश, तूणीर ।

तरां (२२, ३८)—पार हो जायें ।

तरिजै (७५)—तैरा जा सके ।

तरिया (२, १६, १००)—मोक्ष प्राप्त हुए, तैर गये, पार हो गये, उद्धार पा गये ।

तरुआरि (८७)—तलवार

तळातळ (६५)—सात अध: लोकों मे से एक अध. लोक का नाम

तळिया (   )—भून डाले ।

तवि (८, ४१)—कहकर

तवै (४४, ४६, ५३)—कहती हैं, स्तवन करती है, स्तवन करते है ।

तसलीम (२४)—तस्लीम, प्रणाम ।

तही (८४)—के लिए ?

तां (६८)—उन

तांती (१७)—तार वाद्य का, तार ।

तांम (६६)—तव, उन ।

तांमस (४२)—तमो गुण ।

ताडका (५५)—यक्ष सुकेतु की कन्या मतान्तर से सुंद नामक दैत्य की कन्या । तथा मारीच सुबाहु की माता, एक प्रसिद्ध राक्षसी ।

ताड़िका (८१)—दैत्य मारीच और सुबाहु की माता ।

ताणिया (८७)—खीचे ।

ताम (८६)—तव ।

तारण-तरण (१७)—उद्धार करने वाला ।

तारहा (२६)—तेरा ।
तारां (६७)—तव, तुझसे ।
तारा (४४)—वानर राज वालि की स्त्री, अंगद की माता, बृहस्पती की दो स्त्रियों में से दूसरी ।
तारिनै (३०)—तार करके ।
तारिया (६८)—उद्धार किये, पार उतार दिए ।
तारी (५२)—उद्धार किया ।
तारै (४६, ६८)—उद्धार करता है ।
ताळो (७०)—ताला ।
तास (६३, ६६)—उसके, संकट, पीड़ा
ताह (३८)—उन ।
ताहरां (१०३)—तब, उस समय ।
ताहरा (२०, २६, २८, ३६, ६८)—तेरे तेरा ।
ताहरी (२६, ३६, ४६)—तेरी ।
ताहरैं (५०)—तेरे ।
ताहरै (४२, ५०, ७७, ६०)—तेंरे ।
ताहरौ (१५, २५, २६, २७, ३७; ६४)—तेरा ।
तिहुँ (१५)—तीनो ।
तिकां (५१, ६८)—उन्हें, उनको ।
तिका (६६)—वह ।
तिके (२, १०२)—वे ।
तिकै (५२, ७१, ७८, ६३)—उस, वे ।
तिको (४२)—वह ।
तिखराव (५६)—तक्षकराज कालीदह के नाग के लिए प्रयोग किया है ।
तिण (५२, ५३, ६६)—उस ।
तिणि (३६, ४६, ८२)—उस ।
तिणिनां (१००)—उसको ।
तिणी (६, ५)—की ।
तिणौं (१४, ३१, ८७)—के, की ।
तिनां (२६)—तुझको ।
तिम (७०)—तैंसे ।
तिमि (२०)—तैसै ।
तिल (४६)—तिल, जिसका तेल निकाला जाता है ।
तिलोइ (३६)—तिल मात्र की ।
तिलौई (१०)—तिल मात्र ।
तिसर (५६)—त्रिशरासुर, एक दैत्य ।
तीकम (६)—त्रिविक्रम, वामना वतार का एक नाम, विष्णु का एक नाम ।
तुं (४२, ४७)—तू ।
तुंड (६१)—मस्तक, शिर ।
तुंवर (२५, ५६)—इकतारा, किन्नर
तुंसां (१६, ५६, ८०)—तुझसे ।
तुंहारै (७६)—तेरे ।
तुनां (५८, ७५, ७६, ८८)—तुझको
तुझ (१६, ३८)—तेरे, तेरी ।

तुड़ तांरा (६८)—अपने दल को अथवा अपने भक्त को अपनी ओर आकर्षण करने वाला, महत्व प्रदान करने वाला। तड़ या तुड़ राजस्थानी में पार्टी या कुटुम्ब-समूह का पर्याय है, अपने कुटुम्ब-समूह या दल को महत्ता प्रदान करने वाला तुडतांरा कहलाता है। यहाँ भक्त-समूह को महत्ता देने वाला, ईश्वर।
तुड़ितांरा (६, १७, ७५)—अपने कुल (तुड या तड़) या दल का महत्व वढाने वाला, समर्थ।
तुठी (२०)—तुष्ठ मान हुई।
तुठौ (८८)—तुष्टमान हुआ।
तणां (६६)—के
तुनां (४०, ४२)—तुझको।
तुनै (३६)—तुझको।
तुरंगम (४)—घोड़ा।
तुरंगम-कंध=हयग्रीवावतार।
तुरकणी (१४)—यवन स्त्री।
तुरत (७९)—तुरन्त, शीघ्र।
तुरी (११)—घोड़ा।
तुलछी (४१)—तुलसी।
तुहाइलौ (७५)—तेरा।
तुहारा (२०, ३४, ४३, ४४, ७५, ९७, ९९)—तेरा।
तुहारी (४, ५, ३२, ३४, ४२, ४८, ७५)—तेरी, तुम्हारी।
तुहारै (८३, ८१)—तेरे, तुम्हारे।
तुहारौ (६, २३, ३७, ७४, ७५, ९९)—तेरा, तुम्हारा।
तूं (३४, ३८, ४६, ६८, ७२)—तू।
तूझ (३३, ३५, ३८, ६८)—तुझको, तुझसे, तेरा, तेरे।
तूठसी (७०)—तुष्टमान होगे।
तूठा (७०)—तुष्टमान हुए।
तूठौ (१७, ५९, ६९, ९५)—तुष्टमान हुआ।
तूनां (३७, ४८, ६८, १००)—तेरी, तुझको।
तूसां (३६)—तुझ मे।
तूसे (२०)—तुष्टमान हो।
तैं (२१, ४८, ८४)—तू ने।
तेजालू (११)—तेजस्वी, तेज वाला।
तेड़ (६०)—बुलाकर।
तेड़स्यँ (६४)—बुलाएगा, बुलवाएगा।
तेड़ावैं (१४)—बुलवाइए।
तेड़ौ (१४)—बुलावा।
तेतौ (४६)—इतना, उतना।
तै (१९, २३, ५३, ६९)—तेरे, तूने।
तैईज (५८)—तूने ही।
तैही (१९,—तूने ही।
तैहीज (६९)—तूने ही।
तैं (६१, ८४, ८७, ९५)—तूने।

तोइ (४०)—तो भी।

तोड़ै (३२)—संहार कर देता है।

तौ (२)—तेरा।

तोनां (६८, ७४)—तुझको।

तोनूं (३४)—तुझको।

तोफांन (८९)-असुर, उत्पात, उपद्रव।

तोफान (३२, ७३, ८५)--उत्पात, उपद्रव, तूफान।

तोफौ (५३)—उत्तम, वढ़िया, आश्चर्य का कार्य।

तोव (६१, ७६)—देखो तोवा।

तोवह (३८, ३९, ४८, ५०, ५९, ९७) अनुचित कार्य को भविष्य में न करने की शपथ, दीनतापूर्ण पुकार।

तोरल (१५)—एक भक्त स्त्री का नाम जो रावल मल्लिनाथ के समकालीन थी।

तोसां (७)—तुझसे।

तोहां (६८)—तुझसे।

तौ (२०, १०१)—तू।

तौवह (७, २६, ६२, ७६)—है, तोवह।

त्यां (३)—उन, उन्होने।

त्रड़ त्रड़ (९१)—प्रहार की ध्वनि।

त्राहि (५२)—रक्षा, वचाओ।

त्रिगड़ां (६६, ९१)—एक प्रकार का शस्त्र विशेष, तलवार विशेष।

त्रिध (५)—नीवि।

त्रिणावत (८३)—तिनके के समान।

त्रिधार (१२)—तीन पैनी धारा का भाला विशेष।

त्रिधारा (६६)-एक प्रकार का भाला।

त्रिधारै (३२)—तीन धार का।

त्रिविध (४२)—तीन प्रकार।

त्रिसर (८२)—रावण का भाई, एक असुर जो खर-दूषण के साथ दंडका वन में रहता था, त्रिशरासुर।

त्रिसळै (९४)—कोप के समय, लिलाट में पड़ने वाले तीन सिलावट या वल।

त्रिसिधि (१८)—समर्थ, शक्तिशाली।

त्रिहलोक (९७)—तीन लोक, त्रिलोक,

त्रीग्र (४४)—तीन।

त्रीकम (८, १००)-त्रिविक्रम, वामनावतार, विष्णु का एक नाम।

त्रीकमां (११, ३४, ६९)—त्रिविक्रम, विष्णु का एक नाम, वामनावतार।

त्रीकमा (४०, ६९, ७४, ७५, ८४, ९४, १०३)—त्रिविक्रम, विष्णु, वामनावतार ईश्वर।

त्रीकमौ (९७)—त्रिविक्रम, वामनावतार विष्णु।

त्रुटा (१६)—नाश हो गये ।
त्रेभुयण (३६, ४७)—त्रिभुवन ।
त्रेवइ (३७, १५)—तीन ही ।
त्रोटो (३८, ४२)–अभाव, कमी, टोटा ।
त्रोडिया (१३)—काटा डाला, तोड़ा ।
त्रोड़ियो (८३)—तोड़ वाला ।
त्रोड़ीया (८३)–तोड़ डाले, मार डाले ।

थ

थंमीयौ (६४)—रुका, रोका ।
थग्रौ (५५)—हुआ
थपावि (६२)—स्थापित करायेगा ।
थयो (५६)—हुआ
थले (८६)—स्थल, रेगिस्तान ।
थांभौ (१००)—स्तंभ
थांहरां (१०१)—स्थानों
थापि .३७, ६६)—स्थापित करके, स्थापन करिये ।
थापिया (७८, ८७)–स्थापित करिये ।
थापै (३२, १००)—स्थापित किया, रखे स्थापित किये ।
थायौ (१००)—रक्षा की
थारा (७, ३६, ३७, ४१, ५३, ५४, ६६, ७५, ७७, ८०, ८१, ८५. ६७, १०२)—तेरा, तेरे ।
थारी (१०, ३६, ५३, ७७, ७८, ७६, ८०, ८१, ६५, ६७, ६८, ६६, १०३)—तेरी
थारै (७३, ७४, १०३, ५१)—तेरे
थारौ (२, ३, ६. १०, १६, २३, २६, ३५, ७६, ६८, ६६, १००, १०१)—तेरा
थावर (४०)—स्थावर
थाविरे (३२) – स्थान पर ।
थाहर (१०१)—स्थान ।
थाहरीयौ (४०)—ठहरा हुआ, स्थित ।
थाहरै (२६)—तेरा
थिया (८६) – हुए
थिरि (४०)—स्थिर
थी (१००)—से
थुग्रौ (८४)—संपति, धन, माया ।
थुळ-थुळां (८४)—असुर, दुष्ट ।
थूळ (७८, ६४, ७३)—असुर, दुष्ट, मूरख, स्थूल ।
थे (१०२)—आप
थै ही (१०३)—तू ने ही
थोक (४७, ३६, ३७, ४, ४०)—प्रकार, पदार्थ, तरह ।
थोकां (७)—पदार्थों, कार्यों ।

द

दंड (१६)—डंडा, प्रताप, भय ।
दंन (७४)—१. दान, २. दिन ।
दइवांण (१४) ईश्वर
दई (४७)—दैव, ईश्वर, दी ।
दईत (१५, ८३)—दैत्य

दईतां (६८, १००, १०१)—दैत्यों, दैत्य ।

दईव (१०, ३६, ५५)–श्रीराम, विष्णु ईश्वर ।

दईवांण (६८) – वीर ।

दड़ दड़ (६१)—गिरने की ध्वनि, गिरने की क्रिया ।

दड़दड़ै (८७)— गिर पड़े, लुढक गये ।

दड़ैं (५९) – गैंद, वड़ी गैंद ।

दत (३, ६, २८)—दत्तात्रय ऋषि ।

दधि (५०, ७७, ९२)—उदधि, समुद्र ।

दमाम (६६)—ढोल विशेप ।

दमोदर (५)—दामोदर, श्रीकृष्ण ।

दरगहि (७)—दरबार ।

दरसण (९७)—दर्शन, झाँकी ।

दरसै (५१)—दिखाई देते है ।

दरिसण (४५)—दर्शन, दार्शनिक, सिद्धान्त, धर्म सम्बन्धी ज्ञान ।

दरीयाऊ (७५)—समुद्र ।

दळ (५४, ८६) – सेना ।

दळिदि (९५)—दारिद्रय, कंगाली ।

दळिद्र (१०३)—कंगाली ।

दळिया (२०, २१)—ध्वंस कर दिये, नाश कर दिये, संहार किए ।

दळेवा (६)—ध्वंस करने को ।

दळै (६३)—ध्वंस किए ।

दव (६७)—कोपाग्नि ।

दशरथ (१, २, ३, ६, ८, ५५, ५६, ६९, ७९, ८१)—सूर्यवंशी राजा दशरथ ।

दहकंध (६, ९०)—रावण, दशस्कंध, दशानन ।

दहन (६९)—अग्नि, आग ।

दहसीस (५६) रावण ।

दहि (७२)—भस्म कर ।

दहियौ (९५)—नाश, ध्वंस ।

दही (५६) – नाश करदी, जला दी ।

दहे (६२, ६३)—भस्म कर दिये ।

दहै (१०३)– ध्वंस होते है, नाश करता है ।

दांण (५, ९८)—टैक्स ।

दांणव (५७)—असुर, दानव ।

दांणवे (९१ —दानव

दांम (९९) – दाम, रुपये-पैसे ।

दाइ (२०, ५१)—पसन्द

दाइम (६४)—१. सर्व शक्तिमान, २. अपनी इच्छानुसार करने वाला

दाख (३७)—कह

दाखवि (९९)

दाखां (३०, २८)—दहते हैं, कहता हूँ

दाखि (३७)—कहिए

दाखीजे ( )—कहिए

दाखीजै (४३)—कहिए, कहा जाता है

दाखे (२२)—कहता है

दाखै (११, २५, ३३, ३७, ३८, ६१, ६२, ७५, १००)—कहता है, कहती है, कहते हैं ।

दाट (६)—गाड़ना, बंधन करना, काटना ।

दाटिया (६८)—दवा डाले ।

दाढां (२८)—दंष्ट्रा

दाढि (५०)—दंष्ट्रा, दाढ़ ।

दाण (८३)—कर, टैक्स ।

दातार (३५, ३७)—देने वाला

दात्रिड़िआल (६४)—सुअर

दाळिद (११)—दारिद्र

दावै (७७) कारण

दास (३४, ३७)—गुलाम, अनुचर

दाह (६८)—जलन

दिखाळै (५८)—दिखाता है ।

दिखाळौ (१०१) दिखाई

दिणीअर (६१)—सूर्य

दिनि (१०२)—दिनि में, दिवस में ।

दियण (५५)—देने को

दियै (३६, ५२ — देता, देकर ।

दिलि (१९)—दल, सेना ।

दिवै (२८)—देता है ।

दिसडी (६)—दिसा, तरफ, ओर ।

दिसी (१०३)—दिशा मे, तरफ, ओर

दिसै (१०१, ३१)—दिखाई देते है ।

दिसो (६)—तरफ, ओर ।

दीकरा (६६, ८३,—पुत्र, लड़का ।

दीकरी (८२, ६३)—पुत्र

दीजै (३८)—दीजिए

दीजो (१६)—दीजिए

दीठा (६७)—देखे

दीठो (३४)—देखा

दीठौ (५१, ७६, ६७)—देखा

दीध (४) ?

दीध (८१)—देदी, दी ।

दीधौ (२८)—दिया

दीनदयाळ (६०)—दीनों पर दया करने वाला ।

दीनांदयाळ (३६)—दीनों पर दया करने वाला ।

दीन्हा (१४, ८७)—दिया, दे दिए ।

दीन्ही (६२, ५६)—दे दी ।

दीन्हौ (११)—दिया

दीयै (३४)—दीजिए

दीवलौ (१०)—दीपक, प्रकाश ।

दीवांण (३६, ६८)—वजीर, मंत्री ।

दीसै (१०, ३१, ४८)—दिखाई देता है

दीह (४, ३८, ४८, ५१, ५२, ७१, ८०, ८४, ७२, ६२, १०२)—दिवस, दिन, देवता ।

दुगम (७)—दुर्गम ।

दुज (३६)—द्विज, ब्राह्मण ।

दुजां (४८)—द्विजो, ब्राह्मणों ।

दुझाल (१७)—वीर ।

दुंड़दै (६८)—सूर्य ।
दुड़िदि (४६)—सूर्य ।
दुतर (७५, ३८)—दुस्तर, कठिन ।
दुमेल (५०, ६४, १०१)—शत्रुता, वैमनस्य ।
दुरजोध (६२)—दुर्योधन ।
दुरबळ (३४)—दुर्बल, अशक्त ।
दुवारिका (६६)—द्वारका ।
दुसटिआं (३०)—दुष्टों ।
दुहतै (५४)—दोहन करते समय, दोहने पर ।
दूआ (८५)—दूहा कहना, दूआ देना, प्रशंसा करना ।
दूपण (५६)—एक दैत्य ।
दूपर (६)—रावण का भाई दूषण ।
दूजां (२०)—दूसरों ।
दूजै (२५)—दूसरो से ।
दे (३८)—प्रदान करो, दो ।
देखै (४४)—देखते है ।
देजां (५५)—दीजो ।
देंव (३६, ४५)—देवता ।
देवकी (५८)—मथुरा के महाराज उग्रसेन के छोटे भाई वसुदेव की स्त्री तथा कृष्ण की माता ।
देवळै (७०)—देवालय, मंदिर ।
देवाइचि (१५)—एक भक्त स्त्री का नाम ।
देवाधिदेव (३७)—महान देव, ईश्वर, विष्णु ।
देवाळी (७०)—अभाव, कमी ।
देसै (१०२)—देंगे ।
देह (३५)—शरीर ।
दै (३८)—दो, प्रदान करो ।
दैत (२०, ३०, १००)—दैत्य, असुर ।
दैतां (६)—दैत्यों ।
दोइ (३७)—दो ।
दोख (६२)—दोष ।
दोटि (८५)—बले की टक्कर ?
दोटिया (६३)—मार डाले, जमींदोज कर दिये ।
दोटोह (१०)—टक्कर, आघात ।
दोरा (७५)—कष्ट में ।
दोरी (१५, ७५)—कठिन, मुश्किल, दुख में, कष्ट में ।
द्यौ (३५)—दीजिए ?
द्रोण (६२)—द्रोणाचार्य ।

ध

धकैहां (६१)—अगाड़ी से ।
धख-पंख (२१)—गरुड़ ।
धख-पंख-ध्वज (७८)—गरुड़ध्वज ।
धड़क्कै (६६)—कंपायमान होते हैं ।
धड़ां (६६)—शरीरों ।
धरिणयांणी (१६)—स्वामी, मालिक ।
धणीयाणी (२२)—स्वामिनी ।

में नागों के नौकुल माने जाते हैं।
नवनाथ (१०)—नौ नाथ
नवसै (५७)—नौ सौ
नवां (३३)—नौ
नवि (५०)—नहीं
नवै (१०२)—नया
नह (२७, ३६, ४०, ४१, ४६, ४८, ५१, ६८, ६६, ७३)—नहीं।
नां (१, ५, ३, ११, १७, २३, २६, ३०, ३३, ३४, ४१, ४२, ४४, ४७, ४८, ५१, ५५, ५६, ६०, ७५, ६४, ८३, ६६, ६७, १००, १०१, १०२, १०३)—को।
नांउ (७६)—नाम, यश।
नांऊ (७५)—नाम
नांखि (७, १०३)—डाल दे, डालकर।
नांखै (२६)—डालता है
नांमड़ा (७६)—नाम
ना (१०, ८२)—की
नाउ (५४—१. नाव, २. नाम।
नाकारा (१७)—नही
नाखि (५७)—डालकर
नाखै (६६, ६८, ७७)—डालते है, डालेंगे।
नाग (५६)—कालीदह का नाग
नागां (६१)—नागों, सर्पों (६१)।
नागेंद्र (३६)—नागों (सर्पों) का इन्द्र (स्वामी)।
नाज (६६)—अनाज
नाड़ि (५०)—नाड़ी
नाथ (३४)—स्वामी
नाथण-नाग (५)—नाग को नाथने वाला, श्रीकृष्ण।
नाद (६६)—गर्व
नान्हिया (५८)—छोटा, लघु।
नान्हीओ (२७)—छोटा, लघु।
नान्हो (४)—छोटा, लघु।
नान्हौ (७, ३७)—छोटा, लघु।
नाभ (४३)—नाभि
नाभि-सुत (३६)—राजा नाभि के सुत, ऋषभदेव।
नामै (१३)—नमन करता है, नमाता है, झुकाता है।
नार (६७)—स्त्री, नारी।
नारगी (२६)—नर्क
नारद (१, २, १०, ४४, ६०, ६५, ७८, ८६)—नारद ऋषि।
नारसिघ (५३, ६६) नृसिहावतार।
नारसीग (७६)—नृसिहावतार
नारसी (८०)—नृसिहावतार
नारिसिंघ (६१)—नृसिहावतार
नारीयण (३६, ६६, ७४, ७७, ७८, ६७)—नारायण।

नावै (२०, ३५, ३६)—नहीं आती है, नही प्रात हो, नहीं प्रात होते हैं।

नासति (४८)—१. नाश होता है, २. जिसका अस्तित्व नही, नास्ति।

नाह (४६, ६३, ८२, ६२)—नाथ, स्वामी, इसे नर-नांह लिखना ठीक है।

नाहरू (७६)—नाहर, सिंह।

निकलंक (८७, ३, १०, ३३, ३६, ४४)—निष्कलंक, पवित्र।

निकलंकी (५)—पवित्र

निका (४८)—श्रेष्ठ, उत्तम, पवित्र।

निकीयौ (४७)—नही किया

निको (४१, ४८, ४६)—नही कोई, श्रेष्ठ।

निगरव (५७)—गर्व रहित

निगुरां (११)—कृतघ्नों, गुरु का उपकार न मानने वाले।

निगुरौ (४६)—निगुंण

निचिंता (१६)—निश्चित

निजरि (५३)—नजर, दृष्ठि।

निजार (५, १०, १२, फा० निजार)—नज्जार, दर्शन, दीदार।

निजारसाह (६८)—निजारसाह

निजारी (३३)—अविनाशी

निजि (३६, ४४)—निज, स्वयं।

निति (४१, ४३, १०३)—नित्य

निध (६६)—निधि

निनांम (३६)—जिसका कोई नाम न हो।

निपट (४१)—वहुत

निपाइयौ (६६)—उत्पन्न करेंगे, निष्पन्न करेंगे।

निपाया (२०, २१, ५०)—उत्पन्न किए।

निवळां (४८)—निर्बलों, अशक्त।

निवळौ (७०)—निर्वल, कमजोर।

निभै (५६, ५६, ७७, ८४)—निर्भय।

निमंध (८१)—वाँध, घाट।

निमस्कार (२७)—नमस्कार

निर्मिधयौ ( )—रचा, बनाया।

निमिणि (८१)—नमस्कार, नमन।

निमिष (५४)—निमिष, जरा, किंचित।

निमो (२३, १६, २०, २१, २४, ३३, ३७, ४२, ४६, ५८, ७३, ८१, ८४, ६७, ६६, १००, १०१)—नमस्कार।

नियाबा (३०)—१. न्याय २. न्यायकारी।

नियारि (१६)—निगाह।

निरकार (३६, ६८, १००)—जिसका कोई आकार न हो, ब्रह्मा विष्णु, आकाश।

निरखि (३५)— देख ।
निरखियौ (६७) — देखा ।
निरजरा (४०)—निर्भर, देवता ।
निरति (५६)—नृत्य, नाच ।
निरदळिया (२१)—ध्वंस किये ।
निरदळियौ (६४, १०२)—ध्वंस किया संहार किया ।
निरद्वार (६८)—जिसका कोई द्वार न हो ।
निरघोख (७५)—घोषरहित, अघोष ।
निरपख (४६)—निर्पक्ष ।
निरवळा (३७)—अशक्त ।
निरमळा (१०२)—निर्मल, स्वच्छ, पवित्र ।
निरसौ (४३)—रसहीन, सारहीन ।
निराट (७०)—वहुत ।
निरालंब (४६, ५७, ७८)—आलम्वन रहित ।
निरासूं (७२)—निरस
निलाह (६८)—निर्लाल
निवाजण (५२, ६६)–प्रसन्न होने को।
निवाजि (७५)—प्रसन्न होकर ।
निवाजीया (६१)—प्रसन्न हुए ।
निवाजै (३३, ६६)—प्रसन्न होइए ।
निवाजौ (५, ३०)-प्रसन्न होइए, प्रसन्न होता है ।
निवारण (५०)—दूर करने को, मिटाने को ।
निवासै (४३)—निवास करते है ।
निस (७१)—निशा, रात्रि ।
निसचर (२१, १०२)—राक्षस, असुर
निसचरां (६०)—असुर
निसदीह (१०३)–निशदिन, अहर्निश ।
निसवाद (२७)—१. स्वाद रहित, २. वाद रहित, पक्षपात रहित ।
निसवादी (४०, ४६)—जिसका कोई स्वाद न हो ।
निसि (४८)—रात्रि
निहंग (४८, ५६)—आकाश
निहथ (६६)—जिसके हाथ में अस्त्र शस्त्र नही, खाली हाथ ।
निहाउ (६६)—प्रहार, चोट ।
तिहिड़ीं (४८)—तैसी, वैसी ।
निहिवास (३६)—निवास ।
निहीं (३६, ४८)—नही
निही ३६, ४३, ४८)—नही
नी (६०)—नही
नीइ (४८)—नीति, रीति ।
नीका (३८)—श्रेष्ठ ।
नीकौ (६७)— श्रेष्ठ, उत्तम ।
नीपनौ (४६)—उत्पन्न हुआ ।
नीय (२६)—नीचे
नीर (६८)—पानी
नीरह (४१) – नीर, नदियों का जल ।
नील (३६)—लीला
नीलांणी (११)—हरित
नीसरे (८०)—निकलकर ।

पलांणि (९०)—घोड़े पर जीणकर ।
पला (१०, १०३)—वस्त्र, छोर, आँचल ।
पळिया (२१)—पालन पोषण किया ।
प्वंग (६५, ९०)—घोड़ा ।
पवन (३७)—वायु ।
पवाडा (१९)—महान कार्य, प्रवाड़ा
पवाड़ै (८१)—प्रवाडा ।
पविगि (८४)—घोड़ा ।
पसाउ (७४)—प्रसाद' कृपा ।
पसारैं (९९)—फैला दिए ।
पहचि (३८, ४६, ५०)—शक्ति, पहुँच
पहची (७७)—पहुँच, शक्ति ।
पहप (६५)—पुष्प, फूल ।
पहर (३४)—प्रहर ।
पहलाद (६८, ९४)—प्रहलाद ।
पहवि (६७)—पृथ्वी ।
पहार (३६, ७४ सं० प्रहार)--मिटाना प्रहार, ध्वंस ।
पळाविजै (१०३) – पालन किया जाय, पाला जाय, पालन कर सकें ।
पहिराडसौ (११)—पहिनाओगे ।
पहिलडै (८१)—प्रथम ।
पहिलाद (५३, ६८, ६९, २८, ६, २, २४, ५३, ६९, ७०, ७२, ९६, ८०)—भक्त प्रह्लाद ।
पहिळादा (३३)—प्रह्लाद ।
पहिलै (७४, ९०)– प्रथम ।
पहुवी (३२)—पृथ्वी ।
पांडव (६९, ९६)—पांडु, पुत्र, अर्जुन भीमादि ।
पांति (५, ६४)—विभाग, हिस्सा ।
पांतिग (३६)—पातक, पाप ।
पाई (९७)—प्राप्त की ।
पाउ (२४, ५४, ७७, १०१)—पाद, चरण ।
पाछा (६२)—वापिस ।
पाज (६, ५७, ९९)—सेतु, पुल ।
पाजा (९२)—सेतु, मर्यादा ।
पाट (६, ३३)— सिंहासन ।
पाटि (८८)—सिंहासन ।
पाडळ (५, ६२)—पाटल वृक्ष, पाढर या पाटल का वृक्ष जिसके पत्ते वेल के समान होते हैं।
पाड़ि (५९)—गिराकर, मारकर ।
पाडीया (६१)—गिरा दिए ।
पाढ़ां (२८)—पहाड़ों से ?
पातिक पहार (३६, सं० पातक करने —
पु॰उत्तम (?) —ईश्वर, पुरुषों मे उत्तम ।
पातिग (२२, २५)—इन्द्र
[illegible](२, ५५)—पुरंदर, इन्द्र ।
[illegible]दे (१५)—एक स्त्री का नाम ।
[illegible]ड़िसै (११)—पूछवायेंगे ।
[illegible] (४१)—पीछे
पूतः (३६)—पुत्र, लड़का ।

पूतना (५८, ८३)—अघासुर तथा वकासुर की वहन, एक राक्षसी जिसे कंस ने श्रीकृष्ण का वध करने को गोकुल में भेजा था।
पूरि (३७)—पूर्ण करिए।
पूरिया (६२)— पूर्ण किये।
पूरिजै (२)—पूर्ण कीजिये।
पूरौ (३२)—पूर्ण करना, भरना।
पेख (८८)—देखकर
पेखि (५५)—देखकर
पेखियो (९२)—देखा
पेखियौ (६०)—देखा
पेखीयौ (८२)—देखा
पेट (४)—सृजन शक्ति, पेट।
पेढ़ (१२)—जड़
पैकंवरां (२५)—ईश्वर दूत, अवतार
पैठिसै (२१)—प्रतिष्ठा करेगी।
पैठौ (९४)—प्रतिष्ठ हुआ।
पैहलाद (४४, १०३)—प्रह्लाद
पोखिया (९२)—पोषण किये।
पोखीया (५७)—पोपण किया, भोजन खिलाया।
पोढ़ेरा (७)—वहुज्ञ, ज्ञानवृद्ध।
पोरस (६८)—पौरुष
पोहचाड़िया (६३)—पहुँचा दिये।
पौरसे (३०)—पौरुष
पौरिस (३८, ५५)—पौरुष, शक्ति।
पौरिसि (५२)—पौरुप
प्रगट्टे (५३)—प्रकट हुए।
प्रघट (६०)—प्रकट
प्रघळ (९, १४, १५, ३८, २०, २२, २५, ३१, ४७, ५३, ५५, ६२, ६५, ६७, ७०, ७१, ७२, ८४, ८९, ९२)—पुष्कल, अपार, काफी, वहुत, असीम।
प्रघळा (१५, १६, १०२)—पुष्कल, वहुत, अपार, प्रवल, समर्थ।
प्रघळि (८७)—वहुत
प्रणमंति (३६)—प्रणाम करते है।
प्रतिपाळ (१०२)—रक्षा
प्रथमी (३०)—पृथ्वी
प्रथळ (३ सं० पृथु-पथु + रा० प्र० ल वहुत, अधिक, चारों ओर फैला हुआ, विस्तृत, प्रथु, पृथु
प्रथिमि (१)—प्रथम, पहले!
प्रथिमी (१, ९२)—प्रथम
प्रवोध (४४)—शिक्षा
प्रभ (१४, २४, ३२, ४१, ४७, ६३, ७५)—प्रभु, ईश्वर।
प्रभु (३३)—प्रभू, ईश्वर।
प्रभूत (४६)—उद्गत, निकला हुआ, उत्पन्न, विशाल, महान, अधिष्ठाता।
प्रभूरौ (८३)—श्रीकृष्ण

वळिराउ (९६)—राजा वलि

वलिराम (५७, ८२)—वलराम श्रीकृष्ण का वड़ा भाई।

वळिराम (८५)—वलदेव, वलभद्र।

वळिहारी (१०१)—वलैंया

वळे (७८)—वल गये, भस्म हो गये।

वसदे (२)—वसुदेव

वसदेव (५८)—वसुदेव

वसास (५०)—विश्वास

वह (१३, ३८, ४९, ४४, ६२, ६६, ८५, ८६)—वहुत

वहत (१४, ४७, ५२, ५३, ५८, ६५, ८९, ८५)—वहुत

वहनांमी (१४, ५९, ६०, ६३, ९७, १००, ९५, १०१)—जिसके वहुत से नाम हों, ईश्वर।

वहनामी (६१, ९५, ४८, ७६, ९४)-देखें, बहनांमी।

वहसांमि (३६)—वहुत-सों का स्वामी

वहादरि (८६)—वहादुर, वीर, वीरता से।

वांझणियां (११)—वंध्याओं, बांझों।

वांणासुर (६३)—राजा वलि के ज्येष्ठ पुत्र का नाम जो वड़ा वीर, गुणी और सहस्रवाहु था।

वांधै (५७)—रची, रचकर, वनाकर।

वांधौ (३२)—धारण करना

वांमण (१६, ३६)—व्राह्मण, वामनावतार।

वांमणी ( )—व्राह्मणी

वांह (५)—भुजा, हाथ।

वांहां (४१)—वाहु

वाई (९७)—वदन

वाकळा (५८)—उवाला हुआ, अक्षत अन्न।

वाज (१०१)

वाणासुर (५)-राजा वलि के सौ पुत्रों में से सवसे वड़ा पुत्र जो महान वीर, गुणी और सहस्रवाहु था।

वाथां (६१)—वाहुपाश।

वाधा (९७)—वंधन में।

वाधि (९६) —विशेष

वाप (२५)—पिता
(१०१)—यहाँ बाप शब्द आश्चर्ययुक्त धन्यवाद शब्द के अर्थ में है।

वापड़ा (२०)—वपुरा

वामण (३०)—व्राह्मण, (यहां सुदामा के लिए आया है।

वायर (५२)—स्त्री, (यहां मोहनी अवतार के लिए प्रयोग किया गया है)

वारट (९७)—चारणों की उपाधि।

वारां (३३)—वारह

वारिस १०२)—द्वादशी

वाळ (२०, ४७)—वालक

भद्र कुंअरि (६३)—केकयराज की भद्राकुमारी कन्या जो कि कृष्ण को व्याही गई थी।

भमतौ (७५)—भ्रमण करता हुआ।

भरत (६२, ६८)—राम भ्राता भरत,

भरथ (६, २१, ३६, ५५, ५६, ५७, ६५, ७२, ८१, ६४)–राम भ्राता भरत, कैकयी पुत्र भरत।

भरथ रा (६५)—भरत का।

भरथुं (२६)—भरत

भरहरा (७७)—१. नरो मे श्रेष्ठ, २. नृसिंह।

भला (५१, ८३)—ठीक, उत्तम, सज्जन।

भली (५६)—उत्तम, श्रेष्ठ, ठीक।

भले (६७)—यहाँ पर यह शब्द केवल सम्वोधनार्थ प्रयोग किया गया है।

भलेरा (१२)—श्रोष्ठतर

भलेरी (२)—बढ़िया, श्रेष्ठतर।

भळै (६६)—और, फिर।

भळै (६६)—भला, उत्तम, ठीक।

भलौ (४८, ६०, ६१)—ठीक, बढ़िया, श्रेष्ठ उत्तम, भला, सज्जन।

भवस (३५)—भविष्य

भहरी (२२)—भरपूर

भांजण (७६)—मिटाने वाला।

भांजि (३७, ३६)—नाश करके, टूट कर, नष्ट होकर।

भांजियौ (५५)—तोड़ डाला।

भांजिहौ (१०२)—संहार करोगे, ध्वंस करोगे।

भांजै (३४, ४२)—नाश करता है, तोड़ता है।

भांड (६०)—विदुषक, निंदा करने वाला।

भांमणा (८०)—वलैया

भांमिणी (१०१)—भांमिनी, पत्नी।

भांमी (६१, ७२, १०१)—वलैया, न्यौछावर।

भाइ (२०)—पसंद

भाइयौ (२)—भाई, भ्राता।

भाईया (१०२)–१ भाई वंधु, (संवोधन) २ दीनवंधु।

भाखां (३८)—कहे

भाखि (४२)—कहकर

भाखीजै (४३)—कहिए, कहा जाता है।

भाखौ (७३)—कहो

भागिवंत (३८)—श्रीमद्भागवद्

भाणी (२०)– पसंद आने वाली।

भामणां (३६)—वलैया, न्यौछावर

भारथ (८६, १००)—युद्ध

भारथी (१७)—दशनामी सन्यासियों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति, भारती।

भाराथ (१५)—भारत, युद्ध ।
सारी (४७)—सब
भांळि (५६)—देखकर
भालीग्रल (४४)—ललाट
भिड़ि (१५)—भिड़कर, युद्ध कर ।
भिड़ियौ (६३)—भिड़ा, टक्कर ली, युद्ध किया ।
भिणि (७४)—कह
भिणीजै ( )—स्मरण किया जाय ।
भिणे (८)—कहो, भण् ।
भिळणो (२)—परिवृत होना ।
भिले (३४)—श्रेष्ट, वाह वाह ।
भिळे (९८)—१ फिर, पुनः २ मिले, इकट्ठा हो ।
भिळै (८५, ६, २०)—मिल गये, शामिल हुए, फिर, और ।
भीजै (४१)—प्रसन्न हो जाय ।
भीड़ (५२, ५४)—संकट, कष्ट ।
भीड़िया (८०)—भीड़ा, कुचला ।
भीम (३४, ६२, ९७)—पांडु पुत्र भीम, विदर्भ का राजा भीष्मक जो रुक्मणि का पिता था ।
भीम रै (९६)—राजा भीष्म के जो रुक्मणि का पिता था ।
भीर (२१, ५५, ७७, ९०)—सहायता मदद ।
भील (५६)—एक जाति ।
भीषम (६५)—भीष्म पितामह ।
भीषम (६२)—भीष्म पितामह ।
भुंडा (१७)—खराब, नीच ।
भुंजन ( )—भजन, स्मरण ।
भुजाड़ौ (५)—शक्तिशाली, समर्थ ।
भुजाली (१९)—भुजाओं वाली ।
भुजाळौ (१)—समर्थ, शक्तिशाली ।
भुजिया (८३)—भजन किया ।
भुजैतौ (५)—तेरे को भजे ।
भुणीजै (४०)—कहा जाता है ।
भुयण (१५, ४८, ४९)—भुवन, लोक
भुयणां (६१)—भुवन, लोक ।
भुवणा (१०२)—लोको
भूंक (१८)— १. भूख, २. पुकार ।
भूंगळ (६६)—फूंक वाद्य विशेष ।
भूँडौ (८९)—खराब, बुरा ।
भू (२२)—भू
भूक (९१)— ध्वंस, नाश ।
भूचरा (८५)—भूमि पर विचरन करने वाले ।
भूत (८५)
भूधरजी (६७)—विष्णु का एक नाम
भूधरां (५१)—भूधर, विष्णु ।
भूधरा (३४)—श्रीकृष्ण, विष्णु भू को धारण करने वाला ।
भूप (३५)—राजा, स्वामी ।
भेख (३५, ५५)—भेष, वेश ।
भेटण (७२)—स्पर्श करने को ।
भेदु (३९)—भेद, रहस्य ।

भेर (६६)—भेरी नामक वाद्य।
भेळा (११, ६६)–शामिल, एक साथ।
भेळिसै (१०)—विजय करेगा ?
भैंचक (१०२)—भयंकर, महान, बडा
भोमिं (२१)—भूमि
भौ (५८, १६, ६६)–भय, डर, आतंक
भ्रम (३७)—संदेह
भ्रखिसै (७५)—खायेगा, काटेगा।
भ्रतार (३६)—पति, स्वामी।
भ्रम (३५)—अज्ञान
भ्रांति (३१)—भ्रम
भ्राजा (६२)—सुशोभित हुए।
भ्रिगि (६२)—भृगु नामक एक ऋषि जिनकी कथा पुराणों मे विस्तार पूर्वक मिलती है।

म

मंजार (६०)—अंदर, में।
मंड (३५)—रचना, मूर्ति।
मंडांण (५१, १०१, ६८)—रचना
मंडाणी (१२)—रची गई।
मंणै (११)—कहती है।
मंथरा (५५)—राजा दशरथ की रानी कैकयी की दासी।
मंद्रै (२१)—खास कर
म (१, २, ४८, ८६)—न, मत, नहीं
मकराइ (४३)—मकराकृत
मचीणां (८६, ६८)—
मच्छ (६)—मत्स्यावतार
मछ (३, २४, ३६, ३६)—मत्स्यावतार
मछकुंद (६२)—मुचुकुंद
मछरियौ (५७)—कोप किया।
मछिरियौ (८२)—कोप किया
मजीरा (१७)—वाद्य विशेष
मडांगीं (६४—
मणै (४३)—कहते हैं, भजते है।
मति (२३, २६, ३७)—बुद्धि, ज्ञान।
मति सारै (१)—बुद्धि के अनुसार।
मती (६)—मत, नहीं।
मती (८२)—विचार, निश्चय।
मथांण (६८)—मंथन
मथियो (८०)—मथन किया, विलोड़ित किया।
मथीयौ (५२)—मंथन किया, विलोड़ित किया।
मथुरा (६१)—पुराणानुसार सात प्रमुख पुरियों में एक पुरी जो ब्रज में यमुना के दक्षिण तट पर है।
मदमती (१६) मदोन्मत, मस्त।
मध (४५, ५२, ७६)—मध्य, मधु- नामक असुर।
मधकर (१६) नाम है।
मधकीट (७६)—मधु और कैटभ नामक दो दैत्य जो परस्पर भाई थे।

मधकीटक (१००)—मधकीट
मधवंन (२४)—इन्द्र
मधसूदन (५७)—विष्णु, श्रीराम ।
मधु (४)—विष्णु द्वारा मारे जाने वाले एक दैत्य का नाम ।
मनछा (४७)—इच्छा
मनड़ौ (११)—मन, अल्या ।
मनां (४८)—मुझको
मनि (४६)—मन
मन्हहारि (६१)—मनुहार
मयण (५७, ७६)—मदन, कामदेव ।
मया (३७)—दया, रहम ।
मये (६१)—
मरट (६६)—गर्व, अभिमान ।
मरड़कै (८७)—मुरड़ गये ।
मरोड़ (१६)—मरोड़कर
मल (६८)—मल्ल
मळ-माटी (५७)—नाश, ध्वंस ।
मला (१०३)
मळिया (२१, ६०)—मर्दन किया, नाश किया, प्राप्त हुआ ।
मलीनाथ (१५—राठौड़राव सलखा का प्रथम पुत्र जो महेव (मालानी) का स्वामी था
मवि (४५)—मे
मवे (४५)—मे ?
मसतक (१०१)—मस्तक, शिर ।
महंण (१८)—महार्णव, सागर ।
महंत (६१)—श्रेष्ठ, बड़ा ।
महमद (३१)—मुहम्मद ।
महमहंण (३३)—महान वड़ा ।
महमहण (१, ४६, ७४, ८२, ८३, ८४ ८६, ६१, ६६, १०२—महामहार्णव, महामहत, महामहाने, ईश्वर, महान वड़ा ।
महमाइ (३८)—महामाता, देवी ।
महमाई (२२)—महामातृका ।
महमाय (६६)—महामाया, दुर्गा ।
महमाया (१६)—महामाता ।
महर (२०, ५८)—दया, कृपा, यशोदा व नंद के लिए प्रयोग वाला आदरसूचक शब्द, ~~स्त्रियों के~~ लिए आदर सूचक शब्द ।
महरि (६३)—वृज मे प्रतिष्ठित स्त्रियों के लिए प्रयोग किया जाने ~~वाला आदर सूचक शब्द~~ ।
महल (६८)—
महा (३२, ७६)—महान् ।
महाजप (४३)—वड़ा जप ।
महाप्रभ (४८)—महा प्रभु ।
महाभड़ (७७)—योद्धा ।
महामाइ (२०)—महामाता ।
महि (४३)—में ।
महि (४७, ८१)—भूमि, पृथ्वी ।
महियार (५)—ग्वालिन ।

महिरिवांण (२८)—महरवान, महार्णव।
महिरांण (१०१)–महार्णव, समुद्र।
महिरांमण (१००)—पाताल में रहने वाले दो भाई अहिरावण और महिरावण। कोई कोई इन्हें रावण का मित्र वतलाते है और कोई भिन्न मत रखते है। ये घोर क्रूर-कर्मी थे।
महिरिवाण (३८)–महरवान, कृपालु।
महीआरैं (५९)—गोप स्त्रिएँ, ग्वालिनिएं।
महेस (३५)–महादेव।
महेसरि (२१)—माहेश्वरी, देवी।
महेसुर (४४)—
मां (१)–मे।
माँ (२)–में।
मां (१०, ११, १२, १७, २०, २१, ३०, ३१, ३२, ३७, ४०, ४१, ४२, ४३, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५५, ५६, ५९, ६०, ६८, ७०, ७१, ८२, ८३, ८७, ९०, ९५, ९७)–में।
माँकळौ (७०)–वहुत, अधिक।
मांगां (३४)– माँगता हूँ।
मांडण (१००)–रचने को।
मांडहै (१४)–विवाह-मंडप।
मांडहौ (९०, ९६)–विवाह-मंडप।
मांडिया (९८)–रचे।
मांडीयौ (५८)—रचा, वनाया।
मांडे (२१)—रचे।
मांडै (८१)—रचकर।
मांडौ (१०)–रचौ, रचिए।
मांणि (९०)—उपभोग करके, रसास्वादन करके।
मांणी (८९)–उपभोग करेगे।
मांणैं (२, ३०)—रखता है, उपभोग किया।
मांनियो (२३)—माना।
मांहि (३५, ३७, ३८, ४०, ४६, ५२, ८१, ९३, ९५)—में।
मांही (१९, ३५, ६०)—मे।
मांहै (५२)—में।
मागैं (१०१)– माँगता है, याचना करता है।
माछ (५९)—मत्स्यावतार लेने वाला विष्णु।
माछर (७६)—मच्छर।
माटी (५८)—मृतिका, मिट्टी।
माडा (६६)—जवरदस्त, वलात्।
माणीयां (८३)—उपभोग किया।
माणैं (१९)—उपभोग करती है।
मात (६९)
माथै (२१, ९९, १०३)—ऊपर।

मादळा (६६, ८६)—वाद्य विशेष ।
माधव (७)—लक्ष्मीपति, विष्णु ।
माधा (४२, ६२)—माधव, श्रीकृष्ण ।
मानियौ (१६)—माना, मान लिया ।
माप नै (४६)
मामौ (१०१)—माता का भाई ।
मायां (३७)—लक्ष्मी, धन-दौलत, अविद्या, अज्ञान ।
मारीछ (६)—मारीच, एक राक्षस का नाम जिसने सोने का हरिण वनकर रामचंद्र को धोखा दिया था ।
मारै (३०)—मार दिया ।
माल्हिऔ (८६)—मस्त चाल से चला
माल्हिसै (१२)—गर्वपूर्ण मंद चाल से चलेगा ।
मावड़ं (८३)—माताएँ
मावै (५६)—समाते है।
माह (१०३)
माहरै (३१, ४३, ७३)—मेरे
माहरोइ (११)—मेरा ही
माहरौ (११, २६, ७०, ७६)—मेरा
माहव (१, २ ४८, ६०, ७४)—माधव, श्रीकृष्ण ।
माहवा (११, ४८, ६०, ७८, ६६, ९७)—माधव, श्रीकृष्ण, विष्णु ।
माहवौ (६२)—माधव, श्रीकृष्ण ।
माहि (३५, ८३)—में
माहैस (६७)—महेश, शिव ।
मिडिया (४३)—अंकित
मिणिजै (६०)—कहिए ?
मिणीजै (४५)—कहिये, कहा जाता है ।
मिनि (२०, २१)—मन में, मानली ?
मिलक (३१)
मिळण (३२)—मिलना
मिळिया (३३)—मिलकर
मिळियौ (६५)—मिला
मिळिसै (६)—मिलेगा
मीठौ (६७)—मीठा, मधुर ।
मीत (१०१)—मित्र
मीर (८६, ६०)-धार्मिक आचार्य, सैयद जाति की उपाधि, प्रधान नेता ।
मीराँ (२५)—भक्त मीरांबाई ।
मीरांह (१०)—मीर, प्रधान ।
मीरा (६०)—समर्थ, शक्तिशाली ।
मीसंण (१६)—चारणों का एक गोत्र ।
मुंठहुं (४८)—मूर्ख
मुंठा (७६)
मुंना (७४)--मुझ को
मुंसा (८५)—यहूदी लोगों के एक पैगम्बर जिनको खुदा का नूर दिखाई पड़ा था ।
मुंसै (१७)—
मुंहडौ (५१, ८३)—मुख, मुह ।

मुंहमद (१०१)—महम्मद
मुश्रौड़ी (६६)—मृता, मरी हुई।
मुकंद (७५, ७६, ८३, ६०)—मुकुंद, मुक्ति देने वाला, विष्णु।
मुकंदहु (५३)—मुक्ति देने वाला, ईश्वर
मुकुंद (८२)—मुक्तदाता, विष्णु का एक नाम।
मुकन (५८)—मुक्ति देने वाला, विष्णु
मुखी (२१)—मुख्य
मुगति (३५)—मुक्ति
मुगिति (७६)—मुक्ति, मोक्ष।
मुजरो (२५)—
मुझ (३८)—मुझको
मुझनां (३६)—देखें, मुझ।
मुड़िसै (६६)—मोड़े जायेंगे।
मुड़ै (८७)—मुड़ गये
मुणै (६०)—कहता है।
मुथुर (८३)—मथुरा नगरी।
मुद (६३)—प्रसन्न, हर्षित।
मुदै (१५)—मुख्ये, प्रधान।
मुनां (२४)—मुनियों
मुनां (१००)—मुझको
मुनाई (२०)—प्रसन्न की, मनाई।
मुर (३६, ४८, ६०, ६१, १०२)—तीन
मुरड़ै (६६)—
मुरधर (१०३)—मारवाड़
मुर-भुयणां (१६)—तीन लोक, त्रिभुवन
मुर-भुवण (३५, १०२)—तीन लोक
मुरलोक (६)—तीन लोक
मुरह (६३)—तीन
मुरारि (६१)—मुर नामक दैत्य को मारने वाला, विष्णु, श्रीकृष्ण
मुरारी (६०)—श्रीकृष्ण, मुर नामक दैत्य का संहारक।
मुरिखि (३६)—मूर्ख, अज्ञ।
मुरिड़ि (६६)—मरोड़कर
मुलांणां (१६, ३१)—मुल्ला
मुल्लाणां (६५)—बहुत बड़ा विद्वान, मुल्ला, शिक्षक।
मुसां (३१)—
मुसिला (११)—मुसलमान
मुहमंद (६०)—जिसकी अत्यधिक प्रशंसा या कीर्ति हो, इस्लाम धर्म के प्रवर्तक, अरब के एक प्रसिद्ध पैगम्बर।
मुहमंदा (८५)—मुहम्मद
मुहम्मद (६५)—इस्लाम धर्म के प्रवर्तक अरब के प्रसिद्ध पैगम्बर।
मूँगळ (८६)—मुगल, मुसलमान।
मूंछिसै (८५)—काटेंगे, मिटा देंगे, नष्ट कर देंगे।
मूँना (१००)—मुझको
मूंमणां (६१)—
मूंस (८६)—

मूंसरण (३७)—मुझको शरण ?
मूंसा (६५)—एक पैगम्बर जिसे यहूदी लोग अपने धर्म का प्रवर्तक मानते हैं।
मूँसा (९०)—
मूका (६८)—छोड़ेंगे
मूनां (७३)—मुनियों को।
मूरति (१००)
मूळ (४६)—कारण, जड़।
मेक (७७)—एक।
मेखल (४३)—करधनी।
मेघ (५७, ८५, ९१)-मेघनाद, चमार
मेघड़ (११)—चमार जाति की (में उत्पन्न) स्त्री।
मेघड़ी (११, ८४, ८९, ९६)—चमार जाति की कन्या या स्त्री चमारिन।
मेघ-रिखी
मेघाँ (३२, ८४, ९०, ९०)—चमार, चमार जाति की कन्या।
मेछां (९०)—म्लेच्छ, यवन।
मेपनै (४९)
मेर (६१, १०१)—सुमेरु।
मेळ (१०१)—मित्रता, स्नेह।
मेळिया (६२)—मिला दिए।
मेले (१)—रखे।
मेळौ (८५)—मिलाप, मेला।
मेह (५१)—मेघ, वर्षा।
मेहणौ (८६)

मैवार (५२)
मो (७०)—मेरे।
मोकळा (१६, ३१, ६९)-बहुत, काफी, अपार, अधिक।
मोकळो (८५)—बहुत।
मोख (४९, ७५)—मुक्ति, मोक्ष।
मोखीया (५७)-मुक्त कर दिए।
मोटा (३७)—महान, बड़ा।
मोटी (३८, १००)—महान, बड़ी।
मोटे (१९)—बड़ा, महान।
मोटौ (३८, ९६)—बड़ा, महान।
मोड़ (३२)—मौर।
मोड़ै (१९, ३२)—नाश करती है, रचता है।
मोढ़री (१९)—महान, बहुत।
मोनां (७०)—मुझको।
मोहण (७४)—मोहन, श्रीकृष्ण।
मोहणां (८४)—मोहन।
माँहि (५३)—मे।
मौज (८१)-दान।
मौजां (५१)—आनंद।
मौड़ (९६)—मौर।
मौरी (२१)—मेरी।
मौहरि (५५, ८६)-पूर्व, पहिले, अगाड़ी सम्मुख, पहिले।
मौहै (५२)—मोहित किए

रिखव (२४, २८, ७१)—ऋषभदेव
रिखां (८७)—ऋषि
रिखियौ (१३)—चमार जाति के वे व्यक्ति जो रामदेव पीर के अनन्य भक्त होते हैं। यह शब्द ऋषि का अपभ्रंश है।
रिखी (२६)—ऋषि
रिखेसर (१३)—ऋषीश्वर
रिजकि (१०१)—रिज्क, रोजी
रिजिक (१०)—नित्य का भोजन, रोजी जीविका, रिज्क।
रिजियो (६९)—प्रसन्न हुआ।
रिण छोड़ (४, ७२)—युद्ध भूमि को छोड़ने के कारण श्रीकृष्ण का एक नाम, ईश्वर।
रिणि'खेत (८७)
रिणिताळ (६६)—युद्धस्थल, युद्ध।
रिणिसी (१५)
रिदै (३९)—हृदय
रिदै (४३, ४५)—हृदय में।
रिध-सिध (५)—ऋद्धि-सिद्धि।
रिपि (५६)—रिपु, शत्रु।
रिमां (१४)—शत्रुओं
रिमि (२१)—शत्रु
रिमियौ (७९)—खेला, क्रीड़ा की।
रिमि-रांह (१४)—शत्रुओं को राह पर लाने वाला।
रिष (३९)—ऋषि
रिषभ (३६)—ऋषभदेव, जो विष्णु के २४ अवतारों में गिने जाते है तथा जैनों के आदि तीर्थंकर भी यही माने जाते हैं।
रिषभदेव (५४)—ऋषभदेव
रिषि (१४, ४४)—ऋषि
रींछ (१०१)—यह शब्द जामवंत के लिए प्रयोग हुआ है।
रींछड़ी (६३)—ऋक्षराज जामवंत की कन्या जिसके साथ कृष्ण का विवाह हुआ था।
रीजियो (२८)—प्रसन्न हुआ।
रींजौ (१४)—प्रसन्न हों।
रीझ (७२)—दान, पुरस्कार।
री (१९, ५४, ५५, ९०, ९३, ९६, १०२)—की
रीछ (६५)—ऋच्छ
रीछड़ी (८९)—जामवंत की पुत्री
रीज (४१, ४४)—प्रसन्न होकर, दान
रीजै (१९, २९, ३९, ४१, ४३, ५१)—प्रसन्न होता है।
रीझ (७२)—बख्शीश
रीझवां (३३)—प्रसन्न करें
रीझाइ (६५)—प्रसन्न होकर

रीझवां (७)—प्रसन्न करें, हर्षित करें
रीझै (६५)—प्रसन्न होता है
रीता (६३)—रिक्त, खाली।
रीधी (२६, ५३)—प्रसन्न हुआ
रीवां (८८)—
रीस (५६, १०३)—कोप
रुकमणी (१०१)—श्रीकृष्ण की पट-महिषी रुक्मणि।
रुक्मणी (७७)—रुक्मिणी
रुख (१०१)—
रुखम (६६)—रुक्मांग
रुखमणी (११, ८३, ६६, ६३, १०३)—रुक्मणि
रुखमांगद (४४, ६६)—एक भक्तराज का नाम, रुक्मांगद
रुघनन्दण (६)—श्रीरामचन्द्र
रुघनंदण (५५)—श्रीरामचन्द्र भगवान
रुघनाथ (६, ३६, ४२, ५२, ५५, ५६)—रघुनाथ, श्रीरामचन्द्र भगवान।
रुघनाथु (२६)—श्रीराम
रुघपति (५५)—रघुपति, श्रीराम भगवान।
रुघराई ( )—रघुराज, श्रीराम।
रुघराउ (५५)—रघुराज, श्रीराम भगवान।
रुघराजा (१०१, ५५)—श्रीराम, भगवान।
रुघराम (६६)—रघुनाथ, श्रीरामचंद्र भगवान।
रुघवीर (४)—श्रीरामचंद्र भगवान।
रुद्र (७)—एक प्रकार के गण देवता जिनकी रचना सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मा की भौहों से हुई थी। वे संख्या में ग्यारह माने जाते हैं। शंभू।
रुखेसर (३८)—ऋषीश्वर
रूंख (११)—वृक्ष
रूड़ै (६६)—नगाड़े, ढोल आदि बजते हैं।
रूप (३४)—शकल, सूरत।
रूपक (३८)—काव्य, कविता।
रूपा दे (१५)—रावल मल्लिनाथ की पट्ट-महिषी।
रूसेसर (२१)—ऋषीश्वर, महर्षि।
रेंवत (१४)—घोड़ा
रेवंत (६०, ६१)—घोड़ा
रेखीं (१७)—रामदेव पीर के अनन्य भक्त चमार जाति की स्त्री।
रेण (८१, ६४)—धूलि, भूमि, पृथ्वी।
रेणका (८१)—परशुराम की माता का नाम।
रेणां (५५)—राजा पुसेन जिन की कन्या, जमदग्नि ऋषी की पत्नी, परशुराम की माता रेणुका।
रेणाधर (५२)—समुद्र, सागर।

रेणी (३२)—

रेसइ (६)—पराजित किया ।

रेसण (१००)—पराजित करने वाला, पराजित करने की ।

रेसीया (२९)—पराजित किये ।

रेसै (७०)—मिटाता है, नष्ट करता है, पराजित करता है ।

रैं (३२)—के

रै (१७, ३५, ३६, ३९, ४१, ४६, ४७, ५४, ५५, ५६, ६४, ८६, ८७, ९०, ९५)—के

रैण (२१, ५२)—भूमि, पृथ्वी ।

रैंवती-रमण (५७ सं० रेवती रमण) रेवत राजा की पुत्री रेवती जो बलराम की धर्म पत्नी थी । उसके साथ रमण करने वाला श्रीबलराम ।

रो (२२, ५६, ९५, ९६)—का

रोट (१७)—बड़ी रोटी ।

रोढ़िऔ (८२)—काट डाला, नाश किया ।

रोपण (४६)—उठाने लगाने या खड़ा करने की क्रिया ।

रोम (४३)—लोक

रोळ (२)—ध्वंस, नाश ।

रौ (३४, ४१, ४६, ४८, ५२, ६८, ७४, ९२)—का

ल

लक्षण (९२)—राम भ्राता

लखण (९७)—लक्षण

लखमंण (५७)—लक्ष्मण

लखमण (६, ३६, ३९. ५६, ७१, ८१)—राम भ्राता लक्ष्मण ।

लखमणा (६३)—भद्रदेश के राजा वृहत्सेन की पुत्री जो कृष्ण के साथ व्याही गई थी ।

लखमी (९४)—लक्ष्मी

लखिऔ (२३)—समझा जाना

लच्छिवर (४२)—लक्ष्मीपति, विष्णु ।

लछिवर (२९, ४३, ७२)—लक्ष्मीपति, विष्णु ।

लछी-प्रांण (७)—लक्ष्मीवल्लभ, विष्णु ।

लवणासुर (५७)—प्रसिद्ध मधुनामक असुर का पुत्र जो मथुरा में रहता था और जिसको शत्रुघन ने श्रीराम की आज्ञा से मारा था ।

लसकर (९२)—सेना

लहड़ा (४५)—लघु, छोटा ।

लहणियौ (९९)—लाभ

लहाँ (४४)—लेता हूँ ।

लहै (३६, ३९, ४१, ४६)—लेता है ।

लाइक (३४)—योग्य

लाइकि (१)—योग्य

लाखीक (१२)—लाख रुपयों के मूल्य का, लाखों गुणों को धारण करने वाला।

लागै (४५)—लगता है।

लाछ (७२)—लक्ष्मी

लाछवर (६३)—लक्ष्मीपति, विष्णु।

लाछि (७५, ८१, ६७, १००)—लक्ष्मी

लाछिवर (३२, ५७, ७६, ६२, ८६, ६१, १०२)—लक्ष्मीपति, विष्णु।

लाजा (६२)—लज्जा।

लाडौ (६७)—दूल्हा।

लाधा (५३, ६२, ६७)—मिले, प्राप्त हुए।

लामैं (२६)—प्राप्त हो।

लालचंद (३७)—जति का नाम है। यह जुढिया ग्राम में रहता था जुढिया ग्राम में जतियों का उपासरा भी है।

लिखमी (३६, ४२, ४८, ५६, ६२, ६२, ६६)—लक्ष्मी।

लिखमी (४६)—लक्ष्मीपति।

लिगन (८१)—

लिगी (६८)—

लियै (४४)—लेते है।

लिवारि (६५)—

लिवारै (७)—

लिवारो (७५)—

लीधा (२)—लिए।

लीधौ (३२)—लिया।

लुटाड़ैं (६१)—लुटवाते है, लुटवा दिए।

लुणियौ (६३) लुंचन किया।

लूंकां (६४)—जैनों का एक।

लेखतां (६५)—समझने पर।

लेखैं (१०३)—हिसाब।

लेखौ (१००)—गिनती हिसाब।

लोचन (७७)—नेत्र।

लोढ़ां (६६)—मसालादि पीसने का पत्थर विशेप।

लोधियौ (६२)—

लोपसैं (६२)—उल्लंघन करेगा।

लोही (१३)—रक्त, खून।

ल्यां (४४)—लेता हूँ।

ल्यै (४४)—लेते हैं।

व

वंतप (८२)—

वंदण (४६) नमन करने को, वंदन नमन।

वंस (६२, १०२)—कुल, गोत्र।

वइण (३८)—वचन, शब्द।

वखत (७८)—समय।

वखांण (३५, ३७)—यश, कीर्ति।

वखांणां (४)—वर्णन करता हूँ।

वखांणि (५१)—वर्णन करके।

वखांणु (२७)—यश, कीर्ति, वर्णन।

वखांणै (५, १३, १५, ३६)—वर्णन करते है, वर्णन करता है, प्रशंसा करते है।

वखाणियौ (१३)—वर्णन किया।
वखवांणी (२३)—देवी।
वडौ (३४)—वड़ा, महान।
वछां (७)—वछड़ा, पशु।
वछासुर (५९)—कंस का अनुचर एक राक्षस जिसे श्रीकृष्ण ने वाल्यावस्था में ही मारा था, वत्सासुर।
वजाड़ी (५९)—वजाई, ध्वनित की।
वड़ (६८, ७०)—वडा, महान।
वड़वड़ँ (८५)—वड़े, महान।
वड़वड़ौ (९१)—महान, अत्यंत वड़ा।
वड़वा (२४)—
वडा (३३, ३७, ९६)—महान, वड़ा।
वड़ायां (७३)—वडाई, महानता, यश
वडाळ (३६)—वड़ा, महान
वड़ि (५१)—वट वृक्ष पर
वड़िमि (१५, ८०)—वड़प्न, महानता
वडियौ (९५)—काटा गया, कट गया
वडेरा (३७, १०१)—पूर्वज, पुरखा, वडा महान।
वडेरी (२३)—वड़ी, महान।
वडेरो (२१)—वडी, महानत।
वडो (२३)—महान, वड़ा।
वडौ (४५, ५२, ५३)—वड़ा महान, दीर्घकाय।
वणराय (५१)—वनराजि, वन, जंगल
वणायौ (२७)—रचा

वणाव (७२)—रचना, वनावट।
वणावा (३८) रचे, वनाये।
वणावै (४२) रचता है।
वणावौ (३१)—वनाइए।
वदत (३९)—कहते हैं।
वदै (२३)—कहते हैं।
वधंतौ (४७)—विशेष
वधतौ (४७)—विशेष
वधाया (१३, ९३)—स्वागत किया।
वधायँ (६७)—स्वागत किया।
वधायौ (२९, ३२)—स्वागत किया
वधियौ (६४, ८८) वढ़ा, वृद्धि, प्राप्त हुआ।
वनमाळी (१)—तुलसी, कुंद, मंदार पर जाता और कमल इन पाँचों की वनी हुई माला को धारण करने वाला, श्रीकृष्ण, विष्णु, नारायण।
वपं (२५)—शरीर
वप (२१, २४, ७२, ९५)—वपु, शरीर।
वपु (५१)—शरीर
वभीषण (३, ६९)–रावण का भाई।
वयण (१)—वचन, वाणी।
वरणै (२१)—वर्णन करता है।
वरत (१०२)—पुण्य प्राप्ति के उद्देश्य से किया जाने वाला किसी पुण्य तिथि का उपवास।

वरतावीजै (१२)—
वरताहि (८५)—
वरतै (६०)—
वरन (२७)—वर्ण, रंग ।
वर-लाछ (५)—लक्ष्मीवर, विष्णु ।
वरिणि (५८)—वरुणदेव की स्त्री ।
वरीयाम (३६)—श्रेष्ठ ।
वरै (७६)—स्वीकार करते हैं, वरण करते है ।
वळण (६४)—लौटना क्रिया ।
वळि (४१, ४६, ५२, ६३)—पुनः, फिर, शक्तिशाली, बालि ।
वलिणि (११)—लौटना क्रिया का भाव ।
वळिया (२१)—लौट गया ।
वलिराम (२६)—बलराम
वली (६७)—फिर, और ।
वळै (४, १३, १४, ३४, ५६, ६२, ६४, ६५, ६८, ७३, ७८, १००)—पुनः, फिर, और ।
वसता (५०)—वस्तुएँ, पदार्थ ।
वसदे (५७)—वसुदेव
वसदेव (६, ३६, ६२, ७६, ८२, ६६)—श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव ।
वसदै (१०१)—वसुदेव
वसारै (७४)—
वसिजो (२२)—
वसियौ (५६ ७३, ६५)—बस गया, निवास किया ।
वसुधा (७२)—पृथ्वी
वसुह (४५, ५८, ८७)—पृथ्वी, वसुधा, संसार ।
वसै (४०, ७६)—निवास करता है ।
वह-तांन (११)—
वहनांमी (१०१)—ईश्वर
वहत (८६)—बहुत
वहवाहर (६६)—बाहर जाकर, पीछा करके ।
वहि (१००)—
वहियौ (६३)—
वहिलौ (६०, ६०, १०२)—शीघ्र, जल्दी ।
वहिसै (१३, ६६)—चलेंगे, वहेगे ।
वहे (६०)—
वहै (५५, ५६, ८३)–चलकर, चले ।
वांझणी (३१)—वंध्या
वांणि (३४)—
वांदै (२)—नमस्कार करते है ।
वांमण (३, ५, ८, ६५)—वामनावतार, ब्राह्मण ।
वांमण (२८)—वामनावतार ।
वांमणो (५३)—वामनावतार ।
वांमन (२४)—वामनावतार ।
वांमे (६६)—वायीं ।

वांसली (५६)—मुरली।
वांसलै (८३)—वंशी, मुरली।
वाउल ८६)—आंधी, तूफान।
वाक (८०)—मुख।
वाखांण (४४, ४७)—वर्णन।
वाघ (३६)—व्याघ्र।
वाचा (५४)—वचन।
वाचि (५०)—वाचा, वाणी।
वाचै (३७)—पढ़ते है।
वाछ (५८)—वछड़ा।
वाछा (७१)—वछड़े।
वाज (३७, ६६)—अश्व, घोड़ा।
वाजसी (६६)—वजेंगे।
वाजिया (१७, ६६)—वजे, ध्वनित हुए।
वाट (३१, ६४)—प्रतीक्षा, इन्तजार।
वाढियौ (५६)—काट डाला।
वाणांसुरा (१०३)—
वाणार (३८)—
वाणि (३६, ४०)—वचन, शब्द।
वाणै (५०)—वाणी।
वात (१०१)—वार्ता।
वातां (३६)—
वातिडै (७६)—वातें, वात, रहस्य, भेद, गूढ़अर्थ, अभिप्राय।
वादतै (५४)—प्रतिस्पर्द्धा करते समय।
वाप (७५)—पितर।
वापार (४८)—व्यापार-वाणिज्य।

वामण (३६)—वामनावतार।
वामणा (८०) वामनावतार।
वायक (५०)—वाक्य।
वाराह (५, ८, ३६, ३६, ५१, ५२, ५६, ६४, ६४, ६६, ६८ ६६)—विष्णु का एक अवतार।
वारि (५१)—पानी, जल।
वारिवा (१६)—
वारी (१००)—
वाला (४३)—वाला।
वाळा (८५)—के।
वाळि (७७)—वानरराज वाली।
वाळिया (७६ —
वाळै (६३)—के।
वाली (१०२)—का।
वाल्हा (७, ६२)—वल्लभ, प्यारे, प्यारा।
वाल्हो (१७)—वल्लभ, प्यारा।
वाल्ही (५, २६, ७०, ७४, ६७, १००)—वल्लभ, प्यारा।
वास (२३, ५०, ६६)—निवास, निवास करने का स्थान, निवास करने की क्रिया।
वासतै (८७)—लिए, निमित्त।
वास दे (७२)—अग्नि, आग।
वासौ (४५)—वास, निवास।
वाह (५, २४, २८, ४८, ६७)—धन्य धन्य।

वाहर (६५)—रक्षा ?
वाहरू (२८, ७६)—रक्षक ।
वाहला (८७)—नाला ।
वाहि (१०३)—
वाहिरौ (७०)—रहित, विना ।
वाहिळिया (१३)—नाले ।
वाहैं (४२)—प्रहार करिए ।
वाहै (६६)—प्रहार करते हैं ।
विद (३६)—स्वामी, पति ।
विंदया (३६)—नमस्कार किया, एक गोपी का नाम भी विंधा था ।
विदावन (२४)—वृन्दावन ।
विश्रापी (७०)—व्यापी, वह जो व्याप्त हो ।
विकाइ (३६)—विक जाते है ।
विखै (७८, ६९, १००)—विपय ।
विगताळौ (५८)—अद्भुत चरित्र वाला ।
विगन्यान (४६)—विज्ञान ।
विगति (७६)—वृतान्त ।
विघन (८१)—विघ्न ।
विच (४२)—मध्य ,
विचाळै (५८, ७१)—वीच में ।
विचि (४३, ४५, ४८)—मध्य में ।
विजराज (६६, १०३)—वृजराज, श्रीकृष्ण ।
विडंग (८६)—घोड़ा ।
विडंगा (३१)—घोड़ो ।
विढ़ण (५८)—लड़ने को ।
विढिसै (६६)—युद्ध करेंगे, भिड़ेंगे ।
विढै (५२, ६६)—युद्ध किया, युद्ध करके ।
विण (४८, ६३)—विना रहित ।
विणयौ (३५)—
विणि (३६, ४६, ५०)—विना, रहित ।
विणियो (१४, ४७)—वन गया, वना
विणियौ (१४, ५०, ६३)—वना, वन गया ।
विणे (६)—हुआ ।
विद्रवाँ (६६)—विदर्भ देश जहाँ का राजा रुक्मणि का पिता भीष्म कथा ।
विधत (२१)—
विधाँसइ (६)—विध्वंस किया ।
विधाँसण (५, ५६)—विध्वंस करने को ।
विधाँसी (२)—विध्वंस किए ।
विनाइक (३४)—गजानन ।
विनाइकि (१)—गजानन ।
विभाड़ी (८१)—मार डाली ।
विभाड़ै (५२)—मार डाला, संहार किया ।
विभीपण (५७)—विभीषण ।
विभूति (७६)—दिव्य या अलौकि शक्ति ।
विमल (३८, ४६, ६६, ७८, ८६)—पवित्र, निर्मल, उज्ज्वल

विमेख (१०, २३)—विवेक, ज्ञान ।

विमोह (४५)—मोह, अज्ञान, भ्रम, भ्रांति

वियाइयै (८२)—

विरंच (२०)—ब्रह्मा ।

विरखा (५६)—वर्षा ।

विरता (५१)—जो अनुरक्त न हो, जिसका मन हट गया हो, विरत ।

विरक्ता (६४)—विरक्त ?

विरदाळ (१३)—विरुदधारी, यशस्वी ।

विराजियौ (१५)—बैठ गया ।

विराजै (४१, १०३)—बैठते है, शोभा देते है ।

विरिद (१८)—विरुद्ध ।

विरिध (१७)—वृद्ध ।

विरी (७८)—विनां, रहित ।

विरुदां (६८)—विरुदों ।

विलंब (२१)—देरी ।

विळकळै (६२)—व्याकुल हुए, विलापन किया ।

विलगी (४२)—लगी हुई ।

विलागी (५४)—लग गया ।

विलास (३७)—सुख-भोग ।

विले (३८, ३६, ४१, ७६)—पुनः, फिर ? और

विळै (३०, ५५, ६२, ६६, ७०, ८४) फिर, और ।

विलोअै (२८)—विलोड़ित किए ।

विलौअै (५२)—मंथन करके, विलोड़ित करके ।

विवांण (५६) - वायुयान ।

विषंभ (३६, ५४)—ऋषभवतार ।

विसंन (६, ७, ५४)—विष्णु ।

विसंभ (२६)—विश्वंभर, ईश्वर ।

विसंभर (५२, ५५, ६४, ७३)—ईश्वर, विश्वंभर ।

विसथार (२५, ५१)—विस्तार ।

विसन (१४, २४, २६, ३७, ४७, ४८, ५६, ५७, ५८, ५६, ६०, ६३, ६५, ६६, ६८, ७४, ७६, ८०, ८१, ८२, ८३, ६३, ६७)—विष्णु, श्रीकृष्ण ।

विसन ही (१६)—विष्णु ।

विसनी (७३)—?

विसराम (४२)—विश्राम ।

विसव (२३, २७, ४२, ४५, ४६, ७५)—विश्व, संसार ।

विसवामिति (५५)—विश्वामित्र ।

विसवावीस (५०)—पूर्ण ।

विसारियौ (६६)—विस्मरण किया ।

विसारै (३५, ६८)—विस्मरण करता है ।

विसाळू (२७)—विशाल ।

विसिन (५२)—विष्णु ।

विसिनि (१३, ४३)—विष्णु ।

विस्तार (२३)—फैलाव ।

विस्रत (४२)—पुलस्त्य ऋषि के पौत्र अथवा वंशज रावण ।

विहद (३८)—अपार ।
विहळ (७२)—सभवतः वीठल के लिए प्रयोग हो ।
विहलां (४४, ५६)—विह्वल, व्याकुल
विहँणौ ( )—रहित ।
विहूँणौ (५)—विना, रहित ।
विहूणी (२०)—रहित ।
वींद (१४)—दुलहा ।
वीठळ (५६)—विट्ठल, विष्णु ।
वीठला (३७, ४४, १०२)—विष्णू का एक नाम, दक्षिण भारत की एक विष्णु मूर्ति ।
वीठुल (१, ५४, ५६)—दक्षिण भारत की विष्णु की एक मूर्ति का नाम, विष्णु, विट्ठल, श्रीराम ।
वीण (२५)—तार वाद्य विशेष ।
वीनवूं (३४)—विनय करता हूँ ।
वीमाह (६, ९६)—विवाह ।
वीर (११, २६, ९८)—भाई ।
वीरज (५१)—वीर्य
वीर-हाक (६६)—जोश पूर्ण आवाज
वीराधि (२७)—वीरों का अधिपति, महावीर ।
वीह (२५)—भय, डर ।
वुसुतरी (२१)—वस्तु
वेखूनां (१००)—
वेगि (६२)—शीघ्र ।
वेगी (९०)—शीघ्र ।
वेचिया (३६)—
वेढ़ (१२)—लड़ाई, युद्ध ।
वेढड़ी (८४)—युद्ध ।
वेढ-प्रांधौ (३२)—युद्ध करिए ।
वेदव्यास (१, ३८)—
वेदूं (३९) —
वेधौ (५५)—शंसा, संशय ।
वेळा (४९, ५३) – समय ।
वेस (२३, ३६)—
वेसास (४८)—विश्वास ।
वेसासि (५२)—विश्वास करके ।
वैकुंठ-वणांणी (७२)—वैकुंठ को रचने वाला ।
वैकुंठवास (३६)—विष्णु ।
वैजंती-माल (४३)—विष्णु के धारण करने की एक प्रकार की माला जो पाँच रंगों की होती है और घुटनो तक लटकती है ।
वैण (३८, ६०, ६२)—वचन ।
वैराट (२४, २८, ३७, ५१)—वड़ा, विस्तृत, लंवा-चौड़ा, फैला हुआ ।
वैहिलौ (५२)—विह्वल, घवराया हुआ ।
वोटिया (८६)—काट डाले ।

व्रोम (६०)—व्योम, आकाश।
व्याधि (६३)—एक दानव का नाम, व्याध।
व्यास (४४, १०३)—वेद-व्यास।
व्रकदंत (६३)—वकासुर से अर्थ लिया गया है।
व्रख (५६)—वृक्ष
व्रनह (४१)—रंग, वर्ण।
व्रपा (७०)—विप्र
व्रहमि (७६)—ब्रह्मा।
व्रिख (३७)—वृक्ष।
व्रिदि (१६)—विरुद।
व्रिदि (७८)
व्रिप (४३)—विप्र, ब्राह्मण।
व्रिसपति (३६)—वृहस्पति

स

संकर (८८)—शंकर, विष्णु।
संकरखण ( )—विष्णु का एक नाम
संख (४२)—शंख्य, कुवेर की नौ निधियों मे एक अथवा एक असुर का नाम? अथवाविष्णु के चार मुख्य····में से एक।
संखचूड़ (६०)—एक दैत्य का नाम जिसको कंस ने कृष्ण को मारने के लिए भेजा था और कृष्ण ने उसको मार डाला था परन्तु यहाँ पर पौराणिक आख्यानों से सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध में पांच व्यक्तियों के नाम मिलते है।
संखधर (६८)—विष्णु, ईश्वर।
संखवर (४२)
संख-सामि (४३)—शंख को धारण करने वाला, विष्णु।
संखासुर (५६, ५७)—एक दैत्य जो ब्रह्मा के पास से वेद चुराकर ले गया था। और समुद्र के भीतर छिप गया था।
संगट (८१)—सकट
संगठ (८३)—समूह
संगठासुर (४, १००)—शकटासुर नामक दैत्य जिसको कंस कृष्ण को मारने के लिए भेजा था।
संघारै (६२)—सहार किए।
संघारं (२६)—संहार किए।
संघार (१२, ६८)—संघार करके।
संघारण (२४)—संहार करने को।
संघारे (५७, ८१)—संहार किये।
संघारैं (६२, ६६)—संहार किए।
संघारौ (३०)—संहार कीजिये।
संताप (४२)
संवाहिया (५६)—सम्हाले
संवाही (३४)—धारण करिये।

संभ (७३)—शिव, शंभू ।
संभारे (४५)—स्मरण कर ।
संभारै (३६, ६८)—स्मरण करता है ।
संमरियौ (६४) स्मरण किया ।
संमरै (१०३)—स्मरण करते है ।
संमिल (३६)
संवाहे (५७)— धारण करके ।
संवाहै (४२)— धारण करता है ।
संसार (१००)
सक (४३)— शक्र, इन्द्र ।
सकटासुर (५८)—एक दैत्य जिसको कंस ने श्रीकृष्ण को मारने के लिए भेजा था और वह स्वयं श्रीकृष्ण द्वारा मारा गला ।
सकतिहर (२१)—शक्ति धर, देवी ।
सकाज (५४)—लिए
सको (३६)— सब
सखरा (२, १६, ६५)—श्रेष्ठ, उत्तम
सखरी (८७) —बढ़िया ।
सखरो (६८)—श्रेष्ठ ।
सखरौ (३, १०, १३, ५८)—श्रेष्ठ, उत्तम ।
सगर-राऊ (८२)—अयोध्या के प्रसिद्ध प्रजा रंजक एक राजा का नाम ।
सगळा (६८)—सब

सगलाइं (४, सं० सकल×अपि)—सबही ।
सगळाई (१५)—सब
सगण (६१, ६६, ७८)—सघन, मेघ, घन ।
सघार (३५)—संहार
सचेळा (६१)
सजिया (६५)
सज्ञान (४७)—ज्ञान सहित, आत्म ज्ञान सहित ।
सझा (६०)—दण्ड
सतगुर (३४)—सदगुरु, श्रेष्ठ गुरु ।
सतभांमा (६३)—श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में से एक सत्यभामा ।
सतरी (२१)—सत्य की
सति (४६, ७३)—सत्य, है ।
सत्रघंण (५७)—शत्रुघन
सत्रघण (६, २६, ३६, ६५, ६८, ६२)—शत्रुघन
सत्रघन (७२)—शत्रुघन
सथिरि (१५)—स्थिर
सदांमै (६६)—सुदामा
सदामौ (७८)—एक ब्राह्मण का नाम जो कृष्ण का सखा था, सुदामा ।
सदोमति (१६)

सधर (५६, ९२)—वीर, शक्तिशाली, दृढ़, मजबूत ।
सधीर (३६)—वीर, योद्धा ।
सनकादिखां (५२)—सनकादिक ।
सनेह (३५)—स्नेह
सपरस (४)—स्पर्श
सपूत (३६)—सपुत्र
सप्त (२१)—सात
सप्राणां (६५)—शक्तिशाली, वलवान ।
संवंध (३५)—एक साथ वंधना, जुड़ना ।
सवखौ (१०)—सहज, सरल ।
सवरी (५६)—शवरी, भीलिनी ।
सवळा (४१, ५३, ८०)—वलवान, शक्तिशाली ।
सबळा (११, ६७)—सबल, शक्तिशाली ।
सबळी (२३)—वलवान, शक्तिशाली ।
सबळौ (५०, ६८, ६९, ७०)—महान, सबल, वड़ा, शक्तिशाली, सशक्त ।
सवाइ (१९)
सवोज (४४)
समँद (४४)—समुद्र, सागर ।
समंद (४५, ८६, ९९)—समुद्र
समंदु (२६)—समुद्र
समंध (८१)—सम्वन्ध
समंपौ (५५)—दीजिए
समति (२३, ७४)—सुमति, सुवुद्धि ।
समपण (४४, ९५)—देने को, देने के लिए ।

समति (३४)—दे
समपी (५५)—देदी
समपीजै (१)—दीजिए
समपै (६८, ७३, ७९)—देता हैं ।
समपौ (२३, ३८, ४४, ७२)— दीजिये ।
समरंति (३७)—स्मरण करते है ।
समरइ (८८)—स्मरण करते है ।
समरां (६१)—स्मरण करें ।
समरासुर (१००)—एक असुर का नाम
समरि (४१)—स्मरण कर ।
समरौ (३४)— स्मरण करिए ।
समस (१५)—
समाप (१००)—दीजिए
समापण (५, ६)—देने को ।
समापि (५५)—दीजिए, देकर ।
समापे (७४)—दीजिए
समापै (२, ६२, ६३, ७१, ७२ देना, देता है, दे दी ।
समापौ (७, ४३, ७५)—दीजिए
समासै (९९)—
समिदिसै (७४)—
समीपि (४४)—पांच प्रकार मुक्तियो में से एक प्रकार मुक्ति जिसमे मुक्तिजीव भगव के समीप पहुँच जाता सामीप्य ।
समै (७३)—समय

समी (५, ७९)—ही, समय पर।
सर (५३)—तालाब ?
सरखं (२७)—समान
सरग (१४, २७, ३२, १०१)—स्वर्ग
सरगां (१०१)—स्वर्ग
सरगुण (७)—सगुण
सरजीत (५)—जीवित
सरणाईयां (८६) - वाद्य विशेष
सरणौ (२१)—शरण में।
सरणौ (१०३) – शरण
सरव (२२)—शर्व, महादेव।
सरव (३४, ३९)—सर्व, सव।
सरव (४०, ४२, ४४, ५०, ७४)—शिव, विष्णु, सव।
सरव (४०)—सव
सरस (४७)—
सरसति (१)—सरस्वती
सरसि (४३)—समान, तुल्य।
सरसी (४७)—रसपूर्ण, पूर्ण, पूरा।
सरि (५०)—जैसी, समान ;
सरिखां (१००)—समानों, सदृशों।
सरिखा (१९, ८५, २३)—समान
सरिखी (३, २२)—समान, तुल्य।
सरि-काईयां (५०)—सृजन किए, सृष्टि का उत्पन्न किया जाना।
सरिस (२, २९, ७२)—समान, रिस-पूर्ण ?
सरिसि (५५, ७७, ८५, ९१)—समान
सरिसौ (५२)—समान
सरीखां (७८)—समान, सदृश।
सरीखा (३, १७, ३०, ३८, ८१, १००)—समान, तुल्य।
सरीखी (२१, ६४)—समान
सरीखें (८८)—समान, सदृश।
सरीखो (५८)—समान
सरीखौ (३४, ४४)—समान, सदृश।
सरीरह (४१)—शरीर
सरूप (३५)—पांच प्रकार की मुक्तियों में से एक जिसमें उपासक अपने उपास्यदेव के रूप में रहता है और अन्त में उसी उपास्य देव का रूप प्राप्त कर लेता है, सारूप्य।
सरै (४७)—
सलांम (३७)—प्रणाम
सलांमा (६१)—प्रणाम
सलाह (९८)—राय, लाभ सहित।
सव (४१)—सब
सवरी (६, ५६, ७८)—शवर जाति की श्रमणा नामक एक भील तपस्विनी, भीलिनी।
सवलौ (४१)—सीधा, सरल।
सवाड़ौ (८२)—विशेष, अधिक
सवाही (४०)—
ससमाथ (६, ७, १५, १६, २०, २७, ६८, ९५)—समर्थ, शक्ति-शाली, शिव।

सिसपाल (९८)—शिशुपाल
ससिमाथ (३४)—शशि शेखर, शिव ।
ससिहर (२१, १०१)—चन्द्रमा, महादेव, शशिधर ।
सहज (७१)—आसान
सहरि (२२)—
सहल (५७, ६१, ६९)—आसान
सहल्या (१०३)—
सहस-नामी (२७)—कई नाम वाला, ईश्वर ।
सहसवाह (५५)—सहस्राजु̐न
सहसावाहु (१८)—सहस्राजु̐न
सहसबाहु (१८)—सहस्राजु̐न
सहि (४, ७, १२, २०, २१, ३४, ३७, ३८, ४१, ४४, ४५, ४७, ४८, ५२, ६२, ६४, ६६, ६७, ६८, ७६, ७८, ८१, ८२, ८३, ८७, ८५, ८६, ९४, ९५, ९६, १००, १०२)—ठीक, सब ।
सहिजै (६३)—सहज
सहिति (८२)—सहित
सहिदेव (८०)—सब देव
सहियौ (४०)—सहा, सहन किया ।
सहिस (६१)—
सहिसै (६६)—सहन करेंगे
सही (५३, ८५, ८९, ९०)—सत्य ठीक, पक्की ।
सहै (४५)
सहो (७३)—सव
साँ (१००, ८, १००)—से
सां (५, ११, १३, १६, २९, ३२, ३३, ३५, ३७, ४०, ४२, ४५, ४७, ५१, ५४, ६३, ६६, ६७, ७५, ७६, ७७, ८१, ८४, ८५, ८६, ८७, ९१, ९५, १)—से ।
सांक (३६)—शंका, भय
सांकड़ौ (७६)—संकरा
सांकीया (५२)—भयभीत हुए
सांकीयौ (६४)—शंकित हुआ, भयभीत हुआ ।
साँच (९८)—सत्य
सांढियां (३१)—मादा ऊंट, ऊंटनियों
सांधतौ (५४)—जोड़ता हुआ
सांधी (८७)—
सांपड़ियौ (६०)—पृथक किया
सांवहै (५६)—धारण करता है
सांभळि (१०२)—सुन ली, सुन ले
साँभळियाह (९)—सुनिए, सुनना
सांभळौ (९६)—सुनिए
सांभिलिसै (१५)—सुनेगा
सांमटै (४७)—समेटता है
सांमठा (६२, ८५)—वहुत, अपार, अधिक ।
सांमळ (७, ३६)—श्रीकृष्ण ।

सांमळा (५५)—श्यामल, श्रीकृष्ण ।
सांमहा (६५)—सम्मुख, सामने ।
सांमहौ (२८)—सम्मुख ।
सांमि (६६)—स्वामी, श्रीकृष्ण ।
सांमी (६६)—स्वामी ।
सांम्हेई (२२)—
सांम्हौ (३७)—सम्मुख, सामने ।
सांसही (२०)—
सा (२)—समान ?
साई (६८)—स्वामी ।
सांच (३२)—सत्य ।
साचरी (८०) सत्य ।
साचां (२२)—सत्य ।
साचि (५०)—सत्य ।
साज (१००)—
साजा (६२)—पूर्ण ।
साझण (१००)—सजा देने के लिए, मारने के लिए ।
साथरी (१२)—ढेर ।
नोट—यह शब्द संस्तर का अपभ्रंश है जिसका अर्थ शय्या अथवा घास फूस फैलाकर बनाया हुआ विस्तर परन्तु मुहावरा के अर्थ में ढेर है ।
साथै (५७)—साथ में ।
साथै (३३)—साथ में ।
साद (२८, ४८)—पुकार ।
साध (३५, ४४, ५६)—साधु, सज्जन ।
साधुआं (६८)—सज्जन, पुरुषों ।
साप (८३)—सर्प, काली नाग ।
सापियौ (७४)—श्राप दिया ।
सामलौ (८२)—श्यामल, श्रीकृष्ण ।
सामि (४४)—स्वामी ।
सायर (४३)—सागर, समुद्र ।
सारंग-पांणी (८६)—
सारंगधर (३३)—विष्णु ।
सारखा (१५)—समान ।
सारद (१)—शारदा, सरस्वती ।
सारदा (७४)—शारदा, सरस्वती ।
सारा (४४)—सब ।
साराहियौ (८८)—सराहना की ।
सारिखाँ (५७)—समान, सदृश ।
सारिखै (७४)—समान ।
सारीख (३६, ५७)—समान ।
सारीखै (६३)—समान, सदृश ।
सारीखौ (४२, ७५)—समान ।
सारूप (४४)—पांच प्रकार की मुक्तियों में एक प्रकार की मुक्ति, सारूप्य ।
सारौ (१००)—अधिकार, हुकम ।
साल (७६, ९८)—शल्य ।
सालले (८६)—गायन किया ।
साळा (६६)—स्त्री का भाई ।
सालुलै (६६)—बजती है ।
सालै (६६)—स्त्री का भाई ।

सिसपाळ (६३)—चेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था, शिशुपाल।

सिहाई (२२)—सहायक

सिहि (१०, २१, ३९)—सव, सर्व, पक्की।

सीत (३९, ४४, ५५)—सीता, जानकी

सीता (११, ३२, ५६, ५७, ९३)—राम पत्नी जानकी।

सीळ (२५, ६८)—शील

सीलवंत (३९)—शीलवान

सीस (३६)—

सीह (६८)—नृसिहावतार

सुकर (२१, ९५)—शुक्र

सुकवि (३९)—श्रेष्ठ कवि।

सुकीरति (१००)—सुकीर्ति

सुखदेव (३८, १०३)—शुकदेव

सुगरीव (६)—वानरों का राजा, श्री रामचन्द्र भगवान का मित्र, सुग्रीव।

सुग्रीव (५६, ६५. ७१, ९३)—वालि वानर का छोटा भाई।

सुघर (२३)—श्रेष्ठ वर।

सुचंग (५०)—श्रेष्ठ

सुजस (७६)—सुयश, कीर्ति।

सुणाइ (४५)—सुनाकर

सुणिजो (४१)—सुनिए

सुधारौ (३३)—

सुन्न (२३)—शुन्य

सुपकनां (२६)—सूर्पकर्णा

सुपनखा (६)—रावण की वहिन शूर्पणखा।

सुप्रसन्न (७४)—प्रसन्न खुश।

सुभर (१०२)—पूर्ण भरा हुआ।

सुभराज (९, १६, २२, १०१)—अभिवादन सूचक शब्द जिसका प्रयोग प्रायः याचक जातिएँ करती है।

सुभिआंण (१२)—श्रेष्ट

सुभियांण (७४)—श्रेष्ठ

सुमत्ति (३४)—श्रेष्ठ मति।

सुर-जेठ (४, ३६, १०२, २५, २६, ४६)—ब्रह्मा।

सुरज्या (६७, ८५)—सूर्य्या, नवोढ़ा, नवविवाहिता, सूर्य की पत्नी।

सुरतांण (९८)—सुल्तान

सुरां (३४)—देवताओं

सुरेसुर (४९)—सुर+असुर।

सुविहांण (८)—सुविभात, सवेरा, सुप्रभात।

सुहांमणा (४४)—सुहाना, सुन्दर, मनोहर।

सुंहिद्रां (६८, ९०, ९७, १०१)—सुभद्रा

सुहिद्रा (११, ७७)—सुभद्रा

सूं (२, ९, ३५, ५३)—से

सूंडाळौ (३४)—श्री गजानन ।

सूका (६८)—

सूनो (४८ —शून्य, खाली ।

सूझै (४४)—दिखाई देता है, देखता है

सूप-कना (१६)—बड़े-बड़े कानो वाला

सूप (६३) सूर्पनखा

सूपनखा (५६)—शूर्पणखा

सुर (३६, ६८)—सूर्य, वीर, बहादुर ।

सूरज्या (३२)—सूर्य्या, सूर्य की पत्नी

सूरिजि (४७)—सूर्य

सूरिति-पाख (४४)—पवित्र शक्ल का पाक-सूरत ।

से (२, १६)—वे, सब ।

सेख (८६, ६६)—इस्लाम धर्म के आचार्य, पैगम्बर मुहम्मद के वंशजो की उपाधि, यवनों के मुख्य चार वर्गो मे से प्रथम वर्ग ।

सेझ (२५, ३६, ६२)—शय्या

सेत (३२, ३६, ६४, ६६)—श्वेत

सेतलै (११, ६२)—श्वेत रंग का घोड़ा, वि० वि० कहते है कि जब कल्कि अवतार होगा वह श्वेत घोड़े पर सवारी करेगा ?

सेतिलै (८४)—श्वेत

सेलारसी (१५)—

सेव (३४)—सेवा

सेष (३६)—शेषनाग ।

सेस (६०)—शेषनाग ।

सेहरा (६६)—

सैण (६२)—सज्जन ।

सैणला (१६)—सैणी नामक वेधा चारण की पुत्री जो देवी का अवतार मानी जाती है। पीरदान लालस की आराध्यदेवी थी ।

सैदहे (३७)—शरीर सहित ।

सैतान (३२)—शैतान, असुर ।

सैनीछर (२१)—शनिश्चर ।

सोढ़ौ (१५)—पंवर वंश की शोढ़ा का राजपूत ।

सोम (३६)—चन्द्रमा ।

सोरभ (१० सं० सुरभि)—सुगंध, महक ।

सोरौ (७५)—सुखी, आराम में ।

सोळ (६३)—सोलह ।

सोवन (३१)—

सोहागण (१५)—सधवा, शोभाग्य-वती ।

सोहिया (८०)—सुशोभित हुए ।

सौरी (३१)—

स्रव (२७)—सर्व, सब ।

स्रव (६)—सर्व, सब ।

स्रिया (६७)—श्री, लक्ष्मी ।

स्रीय (४८)—श्री

स्रीरंग (७५)—विष्णु का एक नाम ।

स्रेव (२५, ६८)—सेवा।
स्रेवा (७१)—सेवा।
स्रेवै (६८)—श्रेय, श्रेष्ठतर।
स्रैवा (२८)—सेवा।
स्रग (२९)—
स्रगलोक (२६, ३६)—स्वर्ग लोग।
स्रव (३५, ४१)—सर्व।
स्रमण (४१, ५६, ७७)—श्रवण, कान।
स्रेव (४२)—सेवा।
स्रेवता (८०)—सेवा करते थे।

ह

हंदै (१७)—के।
हंस (५, ३६, ९८)-हंसावतार, विष्णु का एक अवतार।
हठाळ (६)—हठ करने वाला।
हणमंत (६, १३, ६५, ६७, ८४)—हनुमान।
हणमंति (५७)—हनुमान।
हणमत (७)—हनुमान।
हणियौ (९३)—मारा, संहार किया।
हणीयौ (६१)—मारा, संहार किया।
हणै (६८)—मार करके, संहार करके
हथ (३८)—
हथवाह (६६)—शस्त्र प्रहार, प्रहार।
हव (३९)—अव।
हमल (५७)—आक्रमण।
हमां (५१)—हम।
हमैं (६४, ६८, ८१, ८४)—अब।
हर (२०)—महादेव।
हरख (५५)—हर्ष, आनंद।
हरणाकुस (३)—हिरण्याकाशिपु।
हरणाख (५२)—हिरण्याक्ष नामक दैत्य जो हिरण्यकाशिप का भाई था।
हरता (२३)—नाश ध्वंस, हरण।
हरनाथ (३३)
हरि (८, ३६)—विष्णु, श्रीकृष्ण।
हरिखिया (९७)—हर्षित हुए
हरिचंद (३३, ८५)—हरिश्चंद्र
हरिणाख (९४)—हिरण्याक्ष
हरिणाकस (५३, ६८, ९४)—हिरण्यकशिपु।
हरिणाख (२८, ८०, ९४)—हिरण्याक्ष
हरीचंद (१०, ३१)—हरिश्चंद्र राजा
हरीयाळ (१०१)—हरीभरी
हरै (५६)—हरण करके, हरण करता है।
हळ (६६)—प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र विशेष जिसकी आकृति कृषि किए जाने वाले हल से मिलती-जुलती थी।
हळहळा (८९)—हल्लागुल्ला ?
हलां (९८)—आक्रमण
हलाया (९३)—

हलावौ (३१)—चलाइए
हलाहला (१०३)—
हव (८१, ८६, १०२, १०३)—अव
हसैं (४५, ८०) - हसता है, हसते हैं
हस्तरा (३१)—हस्तिनी
हांणि (११)—हानि
हाक (६७)—दहाड़
हाटड़ा (६१)—दुकान
हाटडैं (९७)—हाट, दुकान, बाजार, स्थान।
हाड़ (३, ५१)—हड्डियाँ, अस्थि।
हाथे (८२)—
हालि (८२)—चलकर
हालिमें (१०३)—
हालैं (१००)—
हास (५०)—हास्य
हिणियौ (५३)—मारा, संहार किया।
हिंदुआंणी (१४)—हिन्दुस्त्री, हिंदुत्व
हिज (६५)—ही, निश्चय
हिति (५४)—हित, स्नेह
हिमैं (८, २९, ५५, ८९, ९२, ९५, ९६, ३७, ६३)—हमको, अब।
हिमैं (७, १०, ३२, ३७, ३८, ७०, ७५)—हमको, अब।
हिया (८१)—हृदय
हिव (७२)—अब
हिवै (९९)—अब

हींगळाज (१९)—एक देवी का नाम जिसका स्थान बलुचिस्तान में है।
हींगलाज (७४)—दुर्गा देवी या देवी की एक मूर्ति या भेद जो सिंध और विलुचिस्तान के वीच की पहाड़ियों में स्थित है।
हींसु (८७)—शस्त्र विशेष
हींसुए (९६)—एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र विशेष जो हंसिया से मिलता-जुलता होता है।
हीअड़ी (११)—हृदय, मन।
हीगोळ (२१)—हिंगलाज के लिए प्रयोग किया जाता है।
हीडै (५८)—पलना में झोंका खाता है या पालना में झूलता है।
हीव (९८)—
हीमाळै (६३)—हिमालय पर्वत
हीयाली (७८) प्रेम, हार्दिक स्नेह।
हीयैं (४०, ९८)—हृदय
हु (३८) - होकर
हुंता (२३, ४१, ४७, ७५)—से
हुंता (१०१)—से
हुंति (७, ४७, ५४, ९२, २३)—थी, से।
हुंतौ (३९)—था

हुँतौ (४८)—था
हुइसै (११)—होगी
हुयै (४४, ४७)—होकर
हुयौ (३४)—
हुलरावै (२६, ४२)—पालने में झोंका देने की क्रिया, झुलाना ।
हुलायौ (२८)—
हुलाहौ (२६)—
हुवै (१०२)—होते हैं ।
हुसेन (६७)—मुसलमानों के तृतीय ....का नाम जो मजीद के हुक्म से काबला नामक स्थान पर मारे गये थे, मुहर्रम इन्हीं की यादगार में मनाया जाता है, हुसैन ।
हुसेनियां (३०)—
हूं (२३, ३४, ५३, ६६, ७०, १००)—मैं
हूंत (५)—से
हूंत (२६, ४७)—से
हूंता (३४, ४७)—से
हूंति (३५)—से
हू (४५, १०२)—मैं
हूइसै (१०)—हो जायगा ।
हूर (७)—
हेकंकार (१०)—एकीकरण ।
हेक (११, १७, ३६, ४४, ४८, ५४, ६१, ६६, ८५, ९०, ९३)—ऐक ।
हेकला (५२)—अकेला ।
हेकलौ (४७, ५१)—अकेला ।
हेकांरा (६६)—एक के ।
हेकोइ (७४)—एक ही ।
हेठि (८७)—नीचे, नीचा ।
हेठी (७६)—नीचे ।
हेत (३५, ५३)—स्नेह, हित ।
हेम (१७)—व्यक्ति विशेष का नाम ।
हेम (४७)—हिम, बर्फ ।
हेम-पुतरी (२१)—हिमाचल की पुत्री
हेमरी (२०)—हिमालय की ।
हेमैं (८४)—अब
हेल (१०)—क्रीड़ा, खेल ।
हेला (१०२)—पुकार ।
हेली (५५)—सहेली
हेवरी (८२)—
हैग्रीव (३, ५, १८, २४, ३६, ३९, ७१, ९८)—हयग्रीव, विष्णु के २४ अवतारों में से एक अवतार मधु और कैटभ नामक दो दैत्य जब वेदों को उठाकर ले गये तब वेदों के उद्धार के लिए विष्णु ने यह अवतार लिया था ।
हैग्रीवा (९९)—
हैमर (५१)—हयवर ।
हैमैं (६१)—अब
हो (३२)—हे !
होडां (६८)—प्रतिस्पर्द्धा ।
होमवला (१०३)
होवै (१००)—होते है ।

पूर्त्ति-(शब्द-कोश)

(शब्द-कोश में जिन शब्दों के अर्थ छपने छूट गये हैं, उनको अर्थ सहित पुनः नीचे दिया जा रहा है।)

म

मंजार (६०)—में, भीतर।

मंदै (२१)—वास्तव में, मुदै।

मडांणीं (६४)—उत्पन्न हुई।

मये (६१)—साथ

मला (१०३)—आप मला, स्वयं, स्वतन्त्र।

महल (६८)—१. प्रासाद, २. स्त्री।

मात (६६)—मात्र, केवल।

माप (४६)—नाप, परिमाण।

माह (१०३)—में, भीतर।

मिणिजै (६०)—कहा जाता है।

मिलक (३१)—मलिक, सरदार।

मुंठा (७६)—मूढ

मुंसे (१७)—मूसा, पैगम्बर।

मुजरो (२५)—नमस्कार।

मुरड़ं (६६)—नाश करे।

मुसां (३१)—मूसा, पैगम्बर।

मूंमणां (६१)—मोमिन।

मूंस (८६)—मूसा

मूंसा (८५, ६०)—मूसा

मूरति (१००)—मूर्त्ति।

मेघ-रिखी (८६)—मेघ ऋषि।

मेप (४६)—नाप, माप।

मेहणी (८६)—कलंक।

दैमार (५२)—मारदे।

र

रत री (२१)—रक्त की।

रहै (४५)—रहता है।

रांमदे (१५)—एक लोक देवता।

राधा (४)—राधिका।

रामचन्द्र (६७, ६३)—श्रीराम

रावण (५७)—एक दैत्य का नाम।

रावां (८८)—राजाओं के।

रासि (६०)—रास

रिणि-खेत (८७)—रणक्षेत्र।

रिणिसी (१५)—रणसी नामक एक भक्त।

रुख (१०१)—ओर, तर्फ।

रेली (३२)—१. बरसाया, २. बरसाकर आनंदित किया।

ल

लिगन (८१)—लग्न, विवाह।

लिगी (६८)—किंचित भी।

लिवारि (६५)—लेने दे।
लिवारै (७)—लेने देता है।
लिवारौ (७५)—लेने दो।
लोधियो (६२)—हैरान किया।

व

वरतावीजै (१२)—प्रदान कीजिये, प्रचार कीजिये।
वरताहि (८५)—फैला दे।
वरतै (६०)—प्रसार की जाती है।
वसारै (७४)—भुला दे।
वसिजे (२२)—वस जाना, रह जाना।
वह (११)—वहुत।
वहि (६०)—जाकर।
वहियौ (६३)—चला
वहे (६०)—चलता है।
वांणि (२४)—वाणी
वाणांसुरा (१०३)—वाणासुर को।
वाणार (३८)—एक भक्त का नाम।
वातां (३९)—बातें
वारिवां (१९)—वारने के लिये।
वारौ (१००)—वारा
वाळिया (७९)—लौटा लाये।
वाहि दिया (१०३)—फेक दिया।
विणयौ (३५)—वना
विधत (२१)—विधाता
विरत्ता (६४)—विरक्त
विसनौ (७३)—विष्णु
वेखूनां (१००)—निर्दोषों के।
वेच्चिया (३६)—वेचने से, वेच दिये।
वेदव्यास (१, ३८)—
वेदूं (३९)—वेद।
वेस (२३, ३६)—भेष, रूप।
व्रिंदि (७८)—वृंद।

स

संखवर (४२)—शंखधर।
संताप (४२)—दुख।
संमिलका (३६)—रानी।
संसार (१००)—जगत।
सचेळा (६१)—प्रसन्न, राजी।
सजिया (६५)—तैयार हुआ।
सदोमति (१६)—सदमति देने वाली।
सवाइं (१६)—सभी।
सवोज (४४)—वोध युक्त।
समस (१५)—एक भक्त का नाम।
समासै (६६)—निरंतर।
समिदिसै (७४)—समदृष्टि से।
सरस (४७)—अच्छा।
सरै (४७)—वनाता है।
सवाही (४०)—सभी प्रकार।
सहरि (२२)—शहर मे।
सहल्या (१०३)—साथ चले।
सहिस (६१)—शेष नाग।
सहै (४५)—धारण करता है।
सांधी (८७)—जोड़ दी।
सांम्हेई (२२)—सामने ही।
